भारतवर्ष की धर्मानुसार जनसांख्यिकी

ए पी जोशी एम डी श्रीनिवास
जे के बजाज

समाजनीति समीक्षण केंद्र

Centre for Policy Studies *www.cpsindia.org*

इस निबन्ध में केन्द्र द्वारा २००३ में प्रकाशित पुस्तक **रिलिजियस डेमॉग्राफी ऑफ इण्डिया** का सार प्रस्तुत किया गया है। मूल पुस्तक का आमुख उस समय के भारत के उप-प्रधान मन्त्री एवं गृह मन्त्री श्री लालकृष्ण आडवाणी ने लिखा है। यहाँ प्रस्तुत सामग्री के लिये विस्तृत सन्दर्भ, आँकड़े एवं तालिकाएँ मूल पुस्तक में उपलब्ध हैं। मूल पुस्तक अंग्रेजी में है। इस निबन्ध के लिये अंग्रेजी सामग्री के हिन्दी अनुवाद में सहयोग के लिये लेखक सुश्री नीरू के आभारी हैं।

सर्वाधिकारी: **समाजनीति समीक्षण केन्द्र २००४**

डा. जितेन्द्र बजाज द्वारा समाजनीति समीक्षण केन्द्र से प्रकाशित
२७ राजशेखरन् स्ट्रीट, मयिलापुर, चेन्नै - ६०० ००४
E-mail: policy@vsnl.com, Web: www.cpsindia.org
सज्जा: सुदर्शन
डी.के. फाइन आर्ट प्रेस प्राइवेट लिमिटेड, नयी दिल्ली से मुद्रित
आईएसबीएन: ८१-८६०४१-१८-४
ISBN: 81-86041-18-4
मूल्य: २५/- रुपये

भारतवर्ष की धर्मानुसार जनसांख्यिकी

भारतीय सभ्यता विश्व की उन दो महान् सभ्यताओं में से एक है जो अति प्राचीन काल में उदित हुई और अर्वाचीन काल तक प्रायः निर्बाध प्रवाहित होती रही हैं। हमारे समकक्ष दूसरी सभ्यता चीन की है। ऐसे प्रमाण हैं कि अमरीका में भी भारत जैसी महान् सभ्यता विकसित हुई और दीर्घकाल तक प्रवाहित होती रही। परन्तु मूल अमरीकी सभ्यता और उस सभ्यता के वाहक प्रायः समस्त जन उस महाद्वीप के तटों पर यूरोपीय लोगों के पहुँचने के कुछ ही दशकों के भीतर समूल नष्ट कर दिये गये। यूरोपीय लोगों के विनाशकारी प्रभाव से अफ्रीकी सभ्यता भी छिन्न-भिन्न हुई और वहाँ की जनसंख्या का बड़ा भाग नष्ट हुआ, परन्तु अफ्रीका का अमरीका जैसा समूल विनाश नहीं हो पाया। यूरोप, अर्वाचीन अमरीका एवं अन्य विभिन्न द्वीप-महाद्वीप जहाँ यूरोपीय मूल के लोग जा बसे हैं और अरब एवं अन्य पश्चिम एशियाई देश भी महान् एवं अतिसक्रिय सभ्यताओं के केंद्र हैं। परन्तु इन क्षेत्रों में व्याप्त ईसाई एवं इस्लामी सभ्यताएँ मानव-इतिहास में अपेक्षाकृत नयी हैं।

भारतवर्ष का भौगोलिक क्षेत्र चीन, यूरोप अथवा अमरीका जैसा विस्तृत नहीं है। परन्तु सभ्यता के विकास के लिये आवश्यक प्राकृतिक साधनों की प्रचुरता में हम अन्यों से अधिक भाग्यशाली हैं। भारतभूमि अपार उर्वरता, पर्याप्त जल एवं वर्षभर खिलती धूप से सम्पन्न है। आधुनिक काल में भारत की जनसंख्या विश्व के प्रायः समस्त अन्य भागों की जनसंख्या के अनुरूप ही तीव्रता से बढ़ी है, तथापि हमारे यहाँ प्रति व्यक्ति कृषियोग्य भूमि चीन अथवा यूरोप की अपेक्षा अब भी अधिक है। अपनी विलक्षण साधन-सम्पन्नता के कारण ही भारतवर्ष अपने अपेक्षाकृत सीमित भौगोलिक विस्तार पर विश्व के विशालतम जनसमुदाय का भरण करता रहा है। ज्ञात इतिहास के प्रारम्भ से प्रायः 1850 ईसवी तक विश्व की आधी से अधिक जनसंख्या भारत और चीन में रहती रही है। ईसाई सम्वत् की प्रारम्भिक शताब्दियों में भारत और चीन की सम्मिलित जनसंख्या विश्व के आधे से कहीं अधिक हुआ करती थी। 1500 ईसवी के बाद तक भारत की जनसंख्या चीन से अधिक थी।

भारतभूमि की अद्वितीय उर्वरता और जनाकीर्णता, ये दो गुण भारतसम्बन्धी अनादि तथ्यों में से हैं। ऐसा ही एक अन्य अनादि तथ्य भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति की विलक्षण एकरूपता है। अतिप्राचीन काल से

भारत आने वाले पर्यवेक्षक एवं अध्येता भारतवर्ष के समस्त भागों में व्याप्त एकरूप विचारों एवं संस्थाओं की विलक्षणता से प्रभावित होते रहे हैं। यह एकरूपता गत दो शताब्दियों से खण्डित होने लगी है। इस काल में जिन आधुनिक विचारधाराओं का प्रसार यहाँ किया गया है उनके अनुसार भारतवर्ष की एकरूपता भारतीय समाज के तथाकथित पिछड़ेपन और शोषणवृत्ति का स्रोत है। यह वैचारिक पूर्वाग्रह अल्पसंख्यक समुदायों एवं विशेषतः मुस्लिम और ईसाई समुदायों की विशिष्ट पहचान एवं जीवनपद्धति को संरक्षण देने के सदुद्देश्य के नाम पर भारत की सार्वजनिक नीति को विकृत करता रहा है। भारतीय सभ्यता की एकरूपता के प्रति द्वेषभाव सम्प्रति भारत की सार्वजनिक नीति के मूल पर स्थापित हुआ दिखता है। इस प्रकार के द्वेषपूर्ण प्रभावों के चलते ही देश का विभाजन हुआ। देश के कुछ क्षेत्रों की धमार्नुसार जनसंख्या के पारस्परिक अनुपात का असंतुलन इस विभाजन का एकमेव आधार बना।

विश्व की जनसंख्या में भारत का घटता अनुपात और विभिन्न धर्मों के अनुयायियों के पारस्परिक अनुपात में बढ़ता असंतुलन भारतीय जनसंख्या के दो मूलभूत तथ्य हैं। इन दो तथ्यों सम्बन्धी विस्तृत आँकड़ों का संकलन एवं विशद विश्लेषण हमारी एक सद्यप्रकाशित पुस्तक में हुआ है।[1] यह पुस्तिका उस विस्तृत पुस्तक का सारांश प्रस्तुत करती है।

स्रोत एवं परिभाषाएँ

भारतीय जनसांख्यिकी के सम्बन्ध में सूचना का प्रमुख स्रोत दशवषीर्य जनगणनाएँ हैं। ये जनगणनाएँ गत प्रायः 110 वर्षों से नियमित रूप से की जाती रही हैं। यहाँ एवं विस्तृत पुस्तक में हमारे द्वारा किया गया समस्त विश्लेषण मुख्यतः जनगणना के आँकड़ों पर ही आधारित है। कुछ एक-दो स्थानों पर संयुक्तराष्ट्र के जनसांख्यिकी आकलन का उपयोग हुआ है। विशेषतः स्वतन्त्रता एवं विभाजन के पश्चात् के दशकों में पाकिस्तान की कुल जनसंख्या के लिये संयुक्तराष्ट्र के आकलन का उपयोग करना पड़ा है।

भारत में जनगणना का कार्य 1871 में प्रारम्भ हुआ। परन्तु भारतवर्ष के प्रायः सम्पूर्ण क्षेत्र पर एक ही समय पर समकालिक जनगणना करवाने का कार्य प्रथमतः 1881 में हुआ। अब भारतवर्ष तीन पृथक् देशों में विभाजित है। 1881 से अब तक भारतसंघ वाले भाग में दशवर्षीय जनगणनाएँ नियमित रूप से की जाती रही हैं। पाकिस्तान में विभाजन के उपरान्त यह कार्य अपेक्षित गम्भीरता से नहीं हुआ। इन

[1] ए पी जोशी, एम डी श्रीनिवास एवं जे के बजाज कृत **रिलिजियस डेमॉग्राफी ऑफ इण्डिया**, समाजनीति समीक्षण केन्द्र द्वारा 2003 में प्रकाशित। इस पुस्तक में 38 विस्तृत तालिकाएँ, मूल पाठ की 105 तालिकाएँ , 29 मानचित्र और विस्तृत सन्दर्भ दिये गये हैं। इस पुस्तिका में दिये गये तथ्यों सम्बन्धी अधिक सूचना एवं सन्दर्भों के लिये मूल पुस्तक देखें।

जनगणनाओं में लोगों के धार्मिक आस्था सम्बन्धी प्रश्न भी सर्वदा पूछा जाता रहा है, और तदनुसार जनसंख्या का वर्गीकरण प्रस्तुत किया जाता रहा है। स्वतन्त्रता-प्राप्ति के उपरान्त भारतसंघ में धर्म के आधार पर समानान्तर तालिकाएँ बनाना बंद कर दिया गया, परन्तु धर्मसम्बन्धी मूलभूत आँकड़े निरन्तर एकत्र किये जाते रहे हैं।

हमारा यह संकलन एवं विश्लेषण 120 वर्षों की जनगणना के आँकड़ों पर आधारित है। इस दीर्घ अवधि के मध्य देश का विभाजन हुआ। राज्यों, प्रान्तों एवं मण्डलों की अपेक्षाकृत बड़ी प्रशासनिक इकाइयों का बड़े स्तर पर पुनर्गठन किया गया और जनपद के स्तर की प्रशासनिक इकाइयों का अनेक बार पुनर्गठन हुआ। पूर्ववर्ती वर्षों के जनगणना-सम्बन्धी आँकड़ों को वर्तमान प्रशासनिक इकाइयों के अनुरूप प्रस्तुत करने के लिए सूक्ष्म गणित करना पड़ता है। यह कार्य अधिकांशतः भारतसंघ, पाकिस्तान और बांग्लादेश के जनगणना संगठनों द्वारा किया गया है। कतिपय स्थानों पर उपलब्ध आँकड़ों के आधार पर यह गणना हमें स्वयं करनी पड़ी है।

हमने धर्मानुसार जनसांख्यिकी सम्बन्धी इन समस्त आँकड़ों का संकलन प्रथमतः सम्पूर्ण भारतवर्ष के स्तर पर किया है। अगले स्तर पर भारतसंघ, पाकिस्तान एवं बांग्लादेश के पृथक्-पृथक् आँकड़ों का संकलन हुआ है। आगे भारतसंघ के राज्यों, पाकिस्तान के प्रान्तों और बांग्लादेश के खण्डों के आँकड़े प्रस्तुत किये गये हैं। अन्ततः भारतसंघ के समस्त जनपदों के आँकड़े जुटाये गये हैं।

यह आकलन मुख्य रूप से इस्लाम और ईसाई धर्म के प्रसार से उपजी विविधता से सम्बन्धित है। इस उद्देश्य से हमने भारतवर्ष की जनसंख्या को तीन बड़े समूहों में विभाजित कर लिया है– मुस्लिम, ईसाई एवं शेष समस्त लोग, जिन्हें हमने सामूहिक रूप से 'भारतीय धर्मावलम्बी' की संज्ञा दी है। भारतीय धर्मावलम्बियों में हिन्दु, सिख, बौद्ध, जैन और वनवासी समुदायों के लोग आते हैं। इन सब धर्मों एवं सम्प्रदायों का उद्गम भारतभूमि पर हुआ है। इनके अतिरिक्त पारसी, यहूदी एवं बहाई जैसे छोटे-छोटे समूह भी भारतीय धर्मावलम्बियों में गिन लिये गये हैं। ये धर्म भारतीय मूल के नहीं हैं, परन्तु इनके अनुयायियों की संख्या इतनी अल्प है कि इन्हें शेष सबके साथ गिन लेने से भारतीय धर्मावलम्बियों के कुल अनुपात में कोई अन्तर नहीं पड़ता।

सन् 1991 ईसवी की जनगणना के अनुसार भारतसंघ की 8,463 लाख की कुल जनसंख्या में भारतीय धर्मावलम्बियों की संख्या 7,201 लाख है। इनमें 5 हजार यहूदी और 75 हजार पारसी हैं। भारतीय धर्मावलम्बियों में इनका सम्मिलित अनुपात प्रायः 0.01 प्रतिशत बैठता है। इनके अतिरिक्त 163 लाख सिख, 33.5 लाख जैन और 64 लाख बौद्ध भारतीय धर्मावलम्बियों में आते हैं। भारतीय धर्मावलम्बियों में इन सब का कुल भाग 3.5 प्रतिशत बनता है। शेष 96.5 प्रतिशत भारतीय धर्मावलम्बी हिन्दु हैं।

इस सम्पूर्ण विश्लेषण में हमने भारत एवं भारतवर्ष संज्ञाओं का प्रयोग उस सम्पूर्ण क्षेत्र के लिये किया है जो भूगोल एवं इतिहास में सर्वदा इन संज्ञाओं से जाना जाता रहा है। अब यह क्षेत्र तीन स्वतन्त्र राजनीतिक इकाइयों में विभाजित है। इन तीन देशों को इस विश्लेषण में भारतसंघ, पाकिस्तान एवं बांग्लादेश कहा गया है। सन् 2001 की जनगणना के धर्मानुसार आँकड़े अभी प्रकाशित नहीं हुए हैं। अतः हमारा समस्त संकलन, आकलन और विश्लेषण सन् 1991 की जनगणना तक का ही है।

विश्व में भारत की भागीदारी

विश्व की ऐतिहासिक जनसांख्यिकी का सर्वाधिक उल्लेखनीय तथ्य यूरोपीय मूल के लोगों की जनसंख्या में गत कतिपय शताब्दियों में हुई तीव्र वृद्धि है। अठारहवीं शताब्दी के मध्य से विश्व की जनसंख्या में पहले अफ्रीकी लोगों का और उसके कुछ पश्चात् एशियाई लोगों का अनुपात घटने लगा और आगे की दो शताब्दियों तक यूरोपीय लोगों का अनुपात तेजी से बढ़ता गया (देखें तालिका 1)। अठारहवीं शताब्दी के पूर्व की कुछ शताब्दियों में भी यूरोपीय लोगों के अनुपात में सम्भवतः ऐसी ही तीव्र वृद्धि हुई थी। उस वृद्धि का प्रमुख कारण अमरीकी महाद्वीप के मूलवासियों की जनसंख्या में हुए तीव्र ह्रास में निहित था। यूरोपीय लोगों के साथ सम्पर्क से तुरन्त पूर्व इस महाद्वीप के मूलवासियों की जनसंख्या उस समय की सकल यूरोपीय जनसंख्या के समकक्ष ही थी। यूरोपीय आक्रान्ताओं के साथ सम्पर्क के कुछ ही दशकों के भीतर यह विशाल जनसंख्या प्रायः समूल नष्ट कर दी गयी।

उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य से लेकर बीसवीं शताब्दी के मध्य तक का काल प्रायः सम्पूर्ण विश्व पर यूरोपीय प्रभुत्व का काल है। इस प्रभुत्व के चलते विश्व के अन्य समस्त लोगों की जनसंख्या ह्रासोन्मुख रही। इस काल में विश्व की जनसंख्या में यूरोपीय मूल के लोगों के अनुपात में 10 प्रतिशत अंकों की वृद्धि हुई, और अन्य लोगों के भाग में इतना ही ह्रास हुआ। इस तीव्र वृद्धि का एक कारण यूरोपीय लोगों के बड़ी संख्या में अमरीकी महाद्वीप में जा बसने में निहित था। इससे पूर्व की शताब्दी में भी यूरोपीयों के अनुपात में 7 प्रतिशत अंकों की वृद्धि हुई थी और उससे भी पूर्व की कदाचित् तीन शताब्दियों से उनका अनुपात सतत बढ़ता जा रहा था। 1930 में विश्व की जनसंख्या में यूरोपीय लोगों का अनुपात अपने चरम पर पहुँच कर प्रायः 40 प्रतिशत हो गया।

बीसवीं शताब्दी के मध्य तक विश्व के अधिकतर लोग दीर्घकालीन यूरोपीय शासन से मुक्त होने लगे थे। स्वतन्त्रता के आविर्भाव के साथ ही उनकी जनसंख्या में तेजी से वृद्धि होने लगी। बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में विश्व की जनसंख्या में अफ्रीकी एवं एशियाई लोगों का अनुपात इतनी तेजी से बढ़ा कि उसके पूर्व के एक सौ वर्षों में यूरोपीय लोगों के अनुपात में हुई वृद्धि का प्रायः सम्पूर्ण निराकरण हो गया। इस

अवधि में भारतीय जनसंख्या में भी समुचित वृद्धि हुई। विश्व की जनसंख्या में भारतीय मूल के लोगों का अनुपात 1951 में प्रायः 16 प्रतिशत था, 1991 में यह बढ़कर 20 प्रतिशत हुआ। विश्व में आज भारतीयों का भाग प्रायः 1850 जितना ही है। गत सहस्राब्दी के मध्य तक और कदाचित् अठारहवीं शताब्दी के मध्य तक भी विश्व की जनसंख्या में हमारा भाग कहीं बड़ा हुआ करता था।

तालिका 1: विश्व की जनसंख्या में विभिन्न क्षेत्रों की भागीदारी, 1650-1990
(विश्व की कुल जनसंख्या के प्रतिशत में)

क्षेत्र	1650	1750	1800	1850	1900	1933	1990
यूरोप	18.3	19.2	20.7	22.7	24.9	25.2	13.67
उत्तरी अमरीका	0.2	0.1	0.7	2.3	5.1	6.7	5.34
लेटिन अमरीका	2.2	1.5	2.1	2.8	3.9	6.1	8.29
ओशिएनिया	0.4	0.3	0.2	0.2	0.4	0.5	0.50
यूरोपीय मूल के लोग	21.1	21.1	23.7	28.0	34.3	38.5	27.79
अफ्रीका	18.3	13.1	9.9	8.1	7.4	7.0	11.91
एशिया	60.6	65.8	66.4	63.9	58.3	54.5	60.28
भारतवर्ष				19.04	17.66	16.42	20.45
भारतसंघ				16.14	14.80	13.54	16.02
कुल विश्व	100.0	100.0	100.0	100.0	100.0	100.0	100.0

टिप्पणी: यूरोपीय मूल के लोगों का प्रतिशत यूरोप, अमरीका और ओशिएनिया को जोड़कर निकाला गया है। भारतवर्ष और भारतसंघ के आँकड़े 1850, 1901, 1951 और 1991 के लिये हैं। स्रोत: मूल पुस्तक की तालिकाएँ 1.4, 1.7 और 1.16 देखें।

विश्व की जनसंख्या में भारतीय मूल के लोगों के अनुपात में बीसवीं शताब्दी में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। परन्तु भारतवर्ष की कुल जनसंख्या में भारतसंघ का भाग और समस्त भारतीयों में भारतीय धर्मावलम्बियों का भाग घटता गया है। आगे के विस्तृत आकलन में यह तथ्य स्पष्ट होता जायेगा।

भारतवर्ष की घटक इकाइयों की सापेक्ष जनसंख्या

सन् 1947 इर्सवी में भारतवर्ष का दो पृथक् इकाइयों पाकिस्तान और भारतसंघ में विभाजन हुआ। भारतवर्ष का प्रायः 23 प्रतिशत क्षेत्र और सन् 1941 की जनसंख्या का 18 प्रतिशत अंश पाकिस्तान के भाग में आये। पाकिस्तान का 1971 में पुनः विभाजन हुआ और पूर्वी पाकिस्तान बांग्लादेश नाम की एक पृथक् इकाई बन गया। नीचे तालिका-2 में इन तीन इकाइयों का क्षेत्रफल एवं सन् 1941 में इनकी जनसंख्या दी गयी है।

तालिका 2: भारतवर्ष से पृथक् हुई इकाइयों की जनसंख्या एवं क्षेत्रफल

	क्षेत्रफल (हजार वर्ग किलोमीटर)	1941 में जनसंख्या (दस लाख में)
भारत	4,235	389
भारतसंघ	3,287	319
पाकिस्तान	948	70
पश्चिमी पाकिस्तान	804	28
पूर्वी पाकिस्तान (बांग्लादेश)	144	42

स्रोत: मूल पुस्तक की तालिका 2.13 देखें।

विभाजन के उपरान्त तीनों घटकों में पृथक्-पृथक् जनगणना होती रही है। इन तीनों देशों के जनगणना संगठनों ने विभाजन पूर्व के संयुक्त आँकड़ों को भी इन तीन घटकों के अनुसार बाँटकर प्रकाशित किया है। नीचे तालिका-3 में इन तीन घटकों की 1901 से अब तक की जनसंख्या के आँकड़े दिये गये हैं।

तालिका 3: भारतसंघ, पाकिस्तान और बांग्लादेश की जनसंख्या, 1901-1991

वर्ष	भारतसंघ	बांग्लादेश	पाकिस्तान	भारतवर्ष
1901	238,364	28,927	16,577	283,868
1911	252,068	31,555	19,381	303,004
1921	251,365	33,254	21,108	305,727
1931	278,530	35,604	23,541	337,675
1941	318,717	41,999	28,282	388,998
1951	361,088	44,166	40,451	445,705
1961	439,235	55,223	51,343	545,801
1971	548,160	70,750	67,443	686,353
1981	683,329	89,912	88,197	861,438
1991	846,303	111,455	122,397	1080,155
वृद्धि	3.55	4.23	6.72	3.80
वृद्धि दर	1.418	1.616	2.140	1.496

टिप्पणी: जनसंख्या के आँकड़े सहस्रों में हैं। अन्तिम दो पंक्तियों में 1991 और 1901 की जनसंख्या का गुणनफल और इस अवधि में हुई प्रतिशत प्रतिवर्ष चक्रवृद्धि के आँकड़े दिये गये हैं। स्रोत: मूल पुस्तक की तालिकाएँ 1.6 और 1.11 देखें।

इस पूर्ण अवधि में भारतवर्ष की जनसंख्या में भारतसंघ का भाग अन्य दो घटकों और विशेषतः पाकिस्तान की अपेक्षा घटता चला गया है। तालिका-3 के आँकड़ों का यही सर्वाधिक उल्लेखनीय पक्ष है। सन् 1901

और 1991 के मध्य के 90 वर्षों में भारतसंघ की जनसंख्या 3.55 गुणा बढ़ी, इसी अवधि में बांग्लादेश की जनसंख्या में 4.23 गुणा और पाकिस्तान की जनसंख्या में 6.72 के गुणा की वृद्धि हुई। इन नौ दशकों में भारतसंघ की जनसंख्या की माध्य चक्रवृद्धि 1.418 प्रतिशत प्रति वर्ष रही, बांग्लादेश और पाकिस्तान की जनसंख्या में क्रमशः 1.616 और 2.140 प्रतिशत माध्य वार्षिक चक्रवृद्धि हुई । परिणामतः भारतवर्ष की कुल जनसंख्या में भारतसंघ का अनुपात 1901 के 84% से घटकर 1991 में मात्र 78% रह गया।

भारतसंघ वाले घटक की जनसंख्या में अन्य घटकों की अपेक्षा हो रहा यह ह्रास उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य से सतत चला आ रहा है। ऐसा प्रतीत होता है कि आगामी अनेक दशकों तक भी ऐसा ही ह्रास होता रहेगा। यह प्रवृत्ति ऊपर तालिका-1 में स्पष्ट दिखायी देती है। उस तालिका में विश्व की जनसंख्या में भारतसंघ का अनुपात 1991 में भी 1850 के स्तर तक पहुँचा नहीं दिखता, परन्तु भारतवर्ष की जनसंख्या 1850 के स्तर से किंचित् अधिक हो गयी है। भारतवर्ष की सम्पूर्ण जनसंख्या के धार्मिक स्वरूप में हो रहे परिवर्तन का एक प्रमुख कारण भारतसंघ की इस घटती सापेक्ष जनसंख्या में निहित है। आगे हम जनसंख्या के परिवर्तित हो रहे धार्मिक स्वरूप का विस्तृत अध्ययन करेंगे।

भारतवर्ष की धर्मानुसार जनसांख्यिकी

भारतीय जनसंख्या के परिवर्तित हो रहे धार्मिक स्वरूप का भारत के सद्य इतिहास पर गहन प्रभाव पड़ा है। जनसंख्या की धर्मानुसार विविधता भारतीय उपमहाद्वीप पर व्याप्त विभिन्न संघर्षों एवं तनावों का प्रमुख कारण भी बनी रही है। सौभाग्यवश जनगणना के समय लोगों की धार्मिक आस्था सम्बन्धी प्रश्न सर्वदा पूछा जाता रहा है, चाहे स्वतन्त्रता के पश्चात् भारतसंघ में लोगों की जाति एवं समुदाय सम्बन्धी आँकड़े संकलित करना बंद कर दिया गया है। अतः जनगणना की प्रायः 110 वर्षों की सम्पूर्ण अवधि के लिये भारतवर्ष की जनसंख्या के धर्मानुसार आँकड़े उपलब्ध हैं और उन आँकड़ों से भारतवर्ष के धार्मिक स्वरूप में हो रहे परिवर्तन का स्पष्ट चित्र प्राप्त किया जा सकता है।

सन् 1881 में भारत का धार्मिक गठन: ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

सन् 1881 ईसवी में हुई प्रथम समकालिक जनगणना के समय कुल जनसंख्या में प्रायः 79% भारतीय धर्मावलम्बी थे, इनमें से 95% हिन्दु थे। जनसंख्या का शेष प्रायः 21% भाग अन्य धर्मावलम्बियों का था और इनमें से 96% मुस्लिम थे। भारतीय जनसंख्या का इस प्रकार मुख्यतः हिन्दुओं और मुसलमानों में विभाजित होना भारतीय इतिहास की अपेक्षाकृत अर्वाचीन घटनाओं की जनसांख्यिकी परिणति थी।

प्रायः 1200 इर्सवी तक भारतवर्ष में अद्‌भुत धार्मिक एवं सांस्कृतिक एकरूपता व्याप्त थी। विशाल भौगोलिक विस्तार और विभिन्न क्षेत्रों के लोगों की अपनी-अपनी भाषागत एवं सांस्कृतिक विशिष्टताओं के होते हुए भी सभ्यता के मूल सिद्धान्तों पर सम्पूर्ण भारतवर्ष में प्रायः अनादिकाल से एकमत बना रहा है। सर्वदा सर्वसम्मत माने गये इन मूलभूत सिद्धान्तों को भारतीय दर्शन में विभिन्न रूपों में प्रस्तुत किया गया है। भारत के लोगों की आस्थाओं, रीति-नीति और व्यवहार में इन्हीं सिद्धान्तों की विविधतापूर्ण अभिव्यक्ति हुई है। भारत के इन मूलभूत सिद्धान्तों को ही सनातन धर्म कहा गया है। सनातन धर्म वह समयातीत अनुशासन है जिसमें भारतीय सभ्यता का सार निहित है। भारतीय मूल के समस्त धर्म-सम्प्रदायों का मौलिक आधार सनातन धर्म में ही है।

अन्य क्षेत्रों से भारत में आने वाले समस्त लोग भारतीय सभ्यता के इन मौलिक सिद्धान्तों के प्रति सहज निष्ठा रखते आये हैं। ईसापूर्व छठी शताब्दी में पर्शिया के डेरियस और ईसापूर्व चौथी शताब्दी में यवन सेनानायक सिकन्दर के आगमन तक भारत पर कदाचित् ही कोई बाह्य आक्रमण हुआ था। भारत की विशिष्ट भौगोलिक संरचना ने भारतभूमि को एक सुदृढ़ दुर्ग जैसा बना दिया है। उत्तर में हिमालय की उच्च, सुदीर्घ एवं विस्तृत प्राचीर उत्तरपश्चिम में कुछ स्थानों को छोड़कर प्रायः अलंघ्य है। दक्षिण में भारतभूमि विस्तृत एवं गहन सागर से घिरी है, भारत के तट किसी अन्य बड़े भूक्षेत्र से बहुत दूर हैं। इन अभेद्य सीमाओं से सुरक्षित भूक्षेत्र विश्व के समृद्धतम भूक्षेत्रों में से एक है। सहस्राब्दियों से इस विस्तृत एवं उर्वर भूमि पर बाह्य आक्रमणों एवं भीतरी न्यूनता के भय से मुक्त जीवनयापन करते हुए भारतीय लोग सहज ही एक अत्यन्त परिष्कृत एकरूप संस्कृति के वाहक बने। उनकी यह सांस्कृतिक एकरूपता सनातन धर्म में निहित थी। सहज सुरक्षित, विस्तृत एवं समृद्ध इस भूमि पर भारतीय लोग प्रकृति, विश्व एवं स्वयं के साथ सर्वथा सामञ्जस्य में थे, उनका किसी के साथ कोई दुराव नहीं था। सब के साथ सामञ्जस्य का यह भाव और प्रकृति एवं सृष्टि के समस्त पक्षों के प्रति गहन सम्मान ही वस्तुतः सनातन धर्म का मूल भाव है।

उत्तरपश्चिम से भारत में प्रवेश करने वाली सिकन्दर की सेनाएँ भारतवर्ष में बहुत भीतर तक प्रवेश नहीं कर सकीं। जिन छोटे-छोटे क्षेत्रों पर सिकन्दर का आधिपत्य हो पाया, उनके प्रशासन के लिए वह अपने कुछ क्षत्रपों को पीछे छोड़ गया था। वे सब क्षत्रप शीघ्र ही पराजित कर दिये गये। सिकन्दर के आक्रमण के प्रतिकारस्वरूप भारतवर्ष की समस्त राजनीतिक इकाइयों को समाहित करते हुए एक विस्तृत एवं शक्तिशाली स्वदेशी साम्राज्य का प्रादुर्भाव हुआ। अतः ईसापूर्व दूसरी शताब्दी तक कोई अन्य बाह्य आक्रमण नहीं हो पाया। इस महान् साम्राज्य के पतन के बाद ही इण्डो-यूनानी एवं इण्डो-बाक्ट्रियन जातियों ने भारत के उत्तरपश्चिम में पाँव जमाने प्रारम्भ किये। परन्तु ये बाह्य शासक भारतीय

सभ्यता के एकरूप परिवेश में ऐसे विलीन हुए कि उस काल के इण्डो-यूनानी राजा मिलिन्द आज एक महान् बौद्ध विद्वान् के रूप में जाने जाते हैं और एक अन्य यूनानी सेनापति हिलियोडोरस अत्यन्त निष्ठावान् भागवत के रूप में प्रसिद्ध हैं।

यूनानियों के अतिरिक्त भारतवर्ष पर आक्रमण करने वाले बाह्य लोगों में इण्डोपार्थियन, शक, हून और मध्यएशियाई मूल के कुशाण आते हैं। इनमें से अधिकतर भारतभूमि पर पहुँचकर निश्चित पराजय को प्राप्त हुए। उनमें से जो यहाँ पर कुछ सार्थक शासन स्थापित करने में सफल हुए, वे प्रायः सब भारतीय सभ्यता के महान् निष्ठावान् अनुयायी और रक्षक बने। कुशाण राजाओं में सर्वोच्च महाराजा कनिष्क ने मध्य और पश्चिमी भारत से लेकर मध्य एशिया तक अपने राज्य की सीमाओं का विस्तार किया। वे एक अत्यन्त निष्ठावान् बौद्ध के रूप में विख्यात हैं, ऐसा माना जाता है कि कश्मीर में चौथे बौद्ध संघ का आयोजन उन्हीं ने करवाया।

इस प्रकार इण्डोयूनानी, इण्डोबाक्ट्रियन, इण्डोपार्थियन और अन्य बाह्य मूल के शासक भारत की सांस्कृतिक एकरूपता को खण्डित करने के स्थान पर भारतीय सभ्यता के मूल सिद्धान्तों का भारतभूमि की सीमाओं से बाहर दूर-दूर तक प्रसार करने में सहायक हुए। उत्तरपश्चिमी भारत से आगे अफगानिस्तान, उत्तरपश्चिमी चीन और मध्यएशिया तक का विस्तृत क्षेत्र भारतीय संस्कृति की प्रभा से परिपूर्ण हो गया।

सातवीं शताब्दी ईसवी से मुस्लिम आक्रान्ताओं ने भारत के समक्ष एक नया और दीर्घकालिक बाह्य संकट उपस्थित किया। इस शताब्दी में इस्लाम एक प्रबल विस्तारवादी संगठन के रूप में विश्व परिदृश्य पर उदित हुआ। हजरत मुहम्मद का जन्म सन् 570 ईसवी में हुआ। सन् 622 में वे मदीना पहुँचे और 632 ईसवी में उनकी मृत्यु हुई। इस एक दशक की अवधि में उन्होंने अरब लोगों को एक सशक्त एकीकृत राजनीतिक एवं धार्मिक इकाई के रूप में संगठित कर दिया। उनकी मृत्यु के पश्चात् मात्र एक और दशक में मुस्लिम खलीफा उस समय के सशक्त बाइजैन्टियम और ससानी साम्राज्यों के बड़े भाग को इस्लामी सत्ता के अधीन ले आये। सन् 637 और 643 ईसवी के मध्य उन्होंने सम्पूर्ण पर्शिया को विजित कर मुस्लिम सत्ता की सीमाएँ अफगानिस्तान तक फैलायीं। सन् 640 ईसवी में मिस्र इस्लामी सत्ता का भाग बना। सन् 711 में स्पेन पराजित हुआ। इसके पश्चात् दक्षिणी फ्रांस को भी जीत लिया गया। हजरत मुहम्मद की मृत्यु के एक सौ वर्ष के भीतर अरब मुस्लिम दक्षिणी यूरोप के अधिकांश भाग, समस्त उत्तरी अफ्रीका और प्रायः समस्त पश्चिमी व मध्य एशिया तक विस्तृत विशाल क्षेत्र के शासक बन बैठे।

भारतीय सीमाओं पर मुस्लिम आक्रान्ताओं के जल एवं थल मार्ग से छिटपुट आक्रमण 636 ईसवी में ही प्रारम्भ हो गये थे। परन्तु भारतभूमि पर उन्हें प्रथम उल्लेखनीय विजय सन् 713 ईसवी में सिन्ध की

पराजय से प्राप्त हुई। आगामी तीन शताब्दियों तक भारत ने अपनी सीमाओं के भीतर इस्लाम के और अधिक प्रसार को सफलतापूर्वक रोके रखा। ग्यारहवीं ईसवी शताब्दी के प्रारम्भ से भारत पर तुर्की मूल के मुस्लिम लुटेरों के आक्रमण प्रारम्भ हुए। महमूद गजनी ने 1000 से 1026 ईसवी के मध्य भारत पर अनेक बार आक्रमण किया और पंजाब को अपने शासन में मिला लिया। गजनी शासन के घूरी उत्तराधिकारी भी निरन्तर आक्रमण करते रहे। सन् 1192 ईसवी में महापराक्रमी पृथ्वीराज चौहान घूरियों से पराजित हुए। तब इस्लामी आक्रान्ताओं को भारत के हृदयप्रदेश तक अपने शासन का विस्तार करने का अवसर मिला।

मुस्लिम सेनाओं ने विश्व के अनेक भागों में अत्यन्त शीघ्रता एवं सहजता से विजय प्राप्त कर ली थी। इसके विपरीत भारतीय रक्षा घेरे को भेदने में उन्हें पाँच शताब्दियों तक निरन्तर संघर्ष करना पड़ा। सन् 1192 से लेकर सत्रहवीं शताब्दी के प्रायः अन्त तक पहले विभिन्न तुर्क-अफगानी जातियों और उनके पश्चात् मध्यएशियाई मुगलों ने भारत के बड़े भागों पर इस्लामी शासन चलाया। मुस्लिम शासन की इन प्रायः पाँच शताब्दियों का काल भारत के दीर्घ इतिहास में पहला काल है जब भारत के बड़े भाग पर पर ऐसे लोगों का शासन स्थापित हुआ जिन्हें भारतीय सभ्यता और धर्म के मौलिक सिद्धान्त स्वीकार्य नहीं थे।

मुस्लिम शासक भारत की सनातन एकरूप सभ्यता के भीतर अपनी एक पृथक् इस्लामी पहचान बनाये रखने के प्रति दृढ़संकल्प थे। ऐसा प्रयास एवं संकल्प उन अपेक्षाकृत उदार शासकों का भी था जो भारत के लोगों पर बलात् इस्लाम थोपने से कुछ बचते रहे। पूर्व में भारत आने वाले प्रायः समस्त समूहों के विपरीत इस्लामी शासक विवेक एवं निष्ठापूर्ण आग्रह के साथ भारत के सनातन सभ्यतागत एवं धार्मिक परिवेश में विलीन होने का प्रतिरोध करते रहे। इस प्रकार इस्लाम भारत के एकरूप परिवेश में वैविध्य का प्रथम स्रोत बना। भारतीय जनसंख्या दो सर्वथा पृथक् धार्मिक समुदायों, हिन्दु और मुसलमान, में विभाजित हुई। 1881 की जनगणना के जिन आँकड़ों का इस खण्ड के प्रारम्भ में उल्लेख हुआ है, उनमें भारतीय जनसंख्या का इन दो भागों में विभाजन स्पष्ट परिलक्षित होता है। समय पाकर यह जनसांख्यिकी विविधता भारत के विभाजन का कारण बनी। भारतभूमि पर भारतसंघ के अतिरिक्त दो पृथक् मुस्लिम राज्य स्थापित हुए।

सत्रहवीं ईसवी शताब्दी के पूर्वार्द्ध में जब मुगल साम्राज्य अपने चरम पर था और भारत में इस्लामी राज्य स्थापित हुए प्रायः पाँच सौ वर्ष हो चुके थे, तब भारत की जनसंख्या में मुस्लिम छठे भाग से अधिक नहीं थे। यह तथ्य निस्सन्देह भारतीय मूल्यों की जीवन्तता और भारत के लोगों की इनके प्रति अटूट आस्था का द्योतक है। जहांगीर अपने संस्मरण *तारीख़-ए-सलीम-शाही* में लिखते हैं कि, "हिन्दुस्तान के विषय में यह कुख्यात है कि यहाँ की जनसंख्या में छह में से पाँच मूर्तिपूजक हिन्दु हैं। व्यापार और निर्माण, बुनाई व अन्य समस्त परिश्रमसिद्ध एवं लाभप्रद उद्योग प्रायः सम्पूर्णतः इनके हाथ में हैं। यदि मैं इन्हें इस्लाम में धर्मान्तरित करना चाहूँ तो यह

लाखों-करोड़ों लोगों को विनष्ट किये बिना सम्भव नहीं होगा। वे अपने दीन-हीन धर्म के प्रति अत्यन्त आस्था रखते हैं। वे कभी-न-कभी अवश्य अपने ही इस मायापाश में बन्ध जायेंगे। वे उनके लिये नियत प्रतिशोध की अग्नि से बच नहीं पायेंगे। परन्तु एक पूरे समुदाय को मौत के घाट उतारना मुझसे तो नहीं हो पायेगा।"

जहांगीर अपने पिता अकबर के साथ हुए एक वार्तालाप का भी स्मरण करते हैं जब उन्होंने कहा था कि, "मानवता के छह भागों में से पाँच भाग हिन्दु अथवा किसी अन्य इस्लामेतर धर्म से सम्बन्धित हैं। तुम्हारे प्रश्न में जो परिलक्षित हो रहा है वैसा कोई उद्देश्य मैं रखता तो इन सब को मौत के घाट उतार देने के अतिरिक्त मेरे समक्ष और क्या विकल्प हो सकता है? इसलिए मुझे तो सर्वाधिक विवेकपूर्ण यही लगता है कि इन लोगों को अपने भाग्य पर छोड़ दिया जाये।"

प्रायद्वीपीय भारत इस्लामी प्रभुत्व से बहुत सीमा तक बचा रहा। भारत के इस भाग में मलयालम, कन्नड़, तमिल और तेलगु आदि दक्षिणी क्षेत्र आते हैं। चौदहवीं शताब्दी के प्रारम्भ में यहाँ मुस्लिम आक्रमणों का प्रतिकार करने के लिये सशक्त विजयनगर साम्राज्य का उदय हुआ। यह साम्राज्य सनातन धर्म की रक्षा के प्रति दृढ़संकल्प था। सत्रहवीं शताब्दी के मध्य से अनेक चमत्कारी सेनानायकों एवं जननायकों के नेतृत्व में देश के प्रायः सभी भागों में मुगल शासकों के प्रति विद्रोह भड़कने लगा। समर्थ रामदास और उनके महान् शिष्य शिवाजी के अधीन मराठे, गोकुला के नेतृत्व में जाट और गुरू गोबिंदसिंह के नेतृत्व में सिखों ने शक्तिशाली सैनिक संगठन खड़े किये। इन पराक्रमी वीरों ने मुगल शासन की जड़ें हिला दीं। सत्रहवीं शताब्दी के अन्त तक मुगल शासन प्रायः समाप्त हो चुका था और देश में सब कहीं स्वदेशी शासक अपने आपको स्थापित करने में जुट गये थे। परन्तु भारतीय पुनरुत्थान की इस प्रक्रिया के संपूर्णता तक पहुँच पाने से पूर्व ही ब्रितानी सेनाएँ यहाँ आ पहुँची। अतः भारतभूमि पर स्वदेशी भारतीय शासन की पुनःस्थापना कुछ और समय के लिए टल गयी।

ब्रितानी शासक भारत के सभ्यतागत एवं धार्मिक मौलिक सिद्धान्तों के प्रति तुर्क-अफगानोंऔर मुगलों से भी कदाचित् अधिक घृणा से भरे थे। उन्होंने ईसाई धर्म को प्रश्रय देकर और इसका प्रचार-प्रसार कर भारत में धार्मिक विविधता का एक और स्रोत खड़ा किया। परन्तु ईसाई धर्म के प्रचार-प्रसार से भी कहीं अधिक क्षयकारी कार्य उन्होंने भारत के शिष्ट समाज में भारत की सभ्यतागत एकरूपता एवं यहाँ की सर्वमान्य मूल मान्यताओं के प्रति संशय एवं विद्वेष का भाव उत्पन्न करके किया। ब्रितानी शासनकाल में कुछ सीमित क्षेत्रों को छोड़कर शेष भारतवर्ष में ईसाई धर्म का विशेष प्रसार नहीं हो पाया। तथापि भारतीय धर्मावलम्बियों का अनुपात शीघ्रता से कम होता चला गया। ब्रिटिशकाल में प्रारम्भ हुआ यह ह्रास अब तक रुक नहीं पाया है।

इस्लाम और ईसाईधर्म, भारतबाह्य मूल के ये ही दो धर्म आज भारतवर्ष में प्रचलित हैं। इनके अतिरिक्त कुछ गिने-चुने यहूदी और पारसी हैं। वे अपने मूल देशों में क्रमशः ईसाइयों एवं मुसलमानों द्वारा उन पर ढ़ाये

अत्याचारों से बचकर विभिन्न कालों में भारत आये। भारत के सहनशील एवं सौहार्दपूर्ण वातावरण में यहूदियों और पारसियों के छोटे से समुदाय शताब्दियों तक यहाँ सुरक्षित फलते-फूलते रहे। मुस्लिम धर्म के उदय के साथ ही पारसी धर्म अपने मूल ईरान देश में पूर्णतः नष्ट हो गया। पारसी धर्म आज केवल भारत में ही जीवित है। और, यहूदियों में यह मान्यता है कि जब विश्व के प्रायः समस्त भागों में उन पर अत्याचार किये जा रहे थे, भारत में उनके छोटे से समुदाय को कभी किसी प्रकार के दमन अथवा हीनता का सामना नहीं करना पड़ा।

ब्रितानी शासन की स्थापना के प्रायः एक शताब्दी उपरान्त 1881 ईसवी में प्रथम जनगणना के समय भारत में ईसाई धर्म ने पाँव जमाने प्रारम्भ ही किये थे, तब जनसंख्या में उनका अनुपात मात्र 0.7% था। परन्तु मुसलमानों का अनुपात मुगल शासन के चरम के समय के 16% से बढ़कर 20% के आसपास हो गया था। इस अवधि में मुसलमानों के अनुपात में हुई वास्तविक वृद्धि सम्भवतः और भी अधिक थी। *तारीख-ए-सलीम-शाही* में उल्लिखित मुसलमानों के 1/6 भाग का आँकड़ा भारतवर्ष के उन भागों के विषय में है जहाँ पर मुगल शासन व्याप्त था। 1881 की जनगणना में अनेक ऐसे क्षेत्र भी सम्मिलित थे जो मुगल शासन के अधीन नहीं आते थे। इस पूरे क्षेत्र में मुगल राज्य के समय मुसलमानों का अनुपात 1/6 से भी कम रहा होगा। यह भी विचारणीय है कि अठारहवीं शताब्दी के मध्य में जब ब्रितानी आक्रान्ताओं का भारत के बड़े भाग पर नियन्त्रण होने लगा तब मुगल शासन अनेक दशकों से पतन पर था। पतन के इस काल में मुसलमानों के अनुपात में कुछ क्षय होना तो स्वाभाविक ही है। अतः ऐसा प्रतीत होता है कि 1881 ईसवी की जनगणना के पूर्व के कुछ दशकों में मुसलमानों का अनुपात 4 प्रतिशत अंकों से भी कहीं अधिक बढ़ा होगा।

सन् 1881 के पश्चात् की अवधि में मुसलमानों और ईसाइयों के अनुपात में निरन्तर वृद्धि होती चली गयी। इस वृद्धि के विषय में नीचे हम कुछ विस्तार से चर्चा करेंगे। स्वतन्त्रताप्राप्ति के समय भारतवर्ष जिन तीन इकाइयों में विभाजित हुआ उनकी धर्मानुसार जनसांख्यिकी का स्वरूप एक दूसरे से भिन्न है और तीनों इकाइयों में भिन्न प्रकार के परिवर्तन हुए हैं। अतः पूरे भारतवर्ष की धर्मानुसार जनसांख्यिकी का संकलन करने से पूर्व हम इन तीनों घटकों के पृथक्-पृथक् आँकड़े देंगे।

भारतसंघ की धर्मानुसार जनसंख्या : 1901-1991

तालिका-4 में हमने वर्ष 1901 से 1991 तक भारतसंघ की धर्मानुसार जनसंख्या के आँकड़ों का संकलन किया है। 1951-1991 के आँकड़े भारतीय जनगणना से लिये गये हैं। पाकिस्तानी जनगणना संगठन ने विभाजनपूर्व काल के आँकड़ों को भारतसंघ, पाकिस्तान एवं बांग्लादेश के लिये पृथक्-पृथक् बाँटकर प्रकाशित किया है। 1901 से 1941 के आँकड़े इस स्रोत से लिये गये हैं।

तालिका 4: भारतसंघ की धर्मानुसार जनसंख्या, 1901-1991

वर्ष	भा.धर्मी	मुसलमान	ईसाई	कुल
1901	206,518	29,102	2,744	238,364
	(86.640)	(12.209)	(1.151)	
1911	218,252	30,269	3,547	252,068
	(86.585)	(12.008)	(1.407)	
1921	216,343	30,739	4,283	251,365
	(86.067)	(12.229)	(1.704)	
1931	237,164	35,818	5,548	278,530
	(85.148)	(12.860)	(1.992)	
1941	269,119	42,645	6,953	318,717
	(84.438)	(13.380)	(2.182)	
1951	315,001	37,661	8,426	361,088
	(87.237)	(10.430)	(2.334)	
1961	381,567	46,940	10,728	439,235
	(86.871)	(10.687)	(2.442)	
1971	472,517	61,418	14,225	548,160
	(86.201)	(11.204)	(2.595)	
1981	586,681	80,003	16,645	683,329
	(85.856)	(11.708)	(2.436)	
1991	720,100	106,552	19,651	846,303
	(85.088)	(12.590)	(2.322)	

टिप्पणी: कुल जनसंख्या सहस्रों में है और कोष्ठकों में दिये गये आँकड़े कुल संख्या का प्रतिशत हैं। स्रोत : देखें, मूल पुस्तक की तालिका 2.6 और 2.6ए।

भारतवर्ष का वह भाग जो विभाजन के पश्चात् भारतसंघ बना उसमें भारतीय धर्मावलम्बी बहुसंख्यक हैं। परन्तु जनसंख्या में उनका अनुपात बीसवीं शताब्दी के प्रायः प्रत्येक दशक में घटता गया है। केवल 1941-1951 के दशक में यह अनुपात कुछ बढ़ा। यह वृद्धि विभाजन की त्रासद घटना के कारण हुई।

विभाजनपूर्व काल में भारत के इस भाग में भारतीय धर्मावलम्बियों का अनुपात 1901 के 86.6% से घटकर 1941 में 84.4% रह गया। 1941 और 1951 के मध्य विभाजन के समय जनसंख्या के बलात् एवं हिंसक स्थानान्तरण के परिणामस्वरूप यह अनुपात प्रायः 2.8 प्रतिशत अंकों से बढ़ा। विभाजन-पश्चात् के चार दशकों में भारतसंघ में भारतीय धर्मानुयायियों का अनुपात 2.2 प्रतिशत अंक घटा है। यह ह्रास विभाजनपूर्व के चार दशकों में हुए ह्रास के प्रायः समान ही है।

1901 और 1991 के मध्य भारतसंघ में भारतीय धर्मावलम्बियों के अनुपात में कुल 1.6 प्रतिशत अंकों की गिरावट आई है। यह गिरावट बहुत अधिक नहीं दिखती। परन्तु यह स्मरण रखना चाहिये कि इस मध्य विभाजन के प्रभाव के कारण भारतसंघ में भारतीय धर्मावलम्बियों का अनुपात 2.8 प्रतिशत अंकों से बढ़ा था। अतः 1901 से 1991 के मध्य वास्तविक गिरावट 4.4 प्रतिशत अंकों की है ।

तालिका से स्पष्ट है कि भारतवर्ष के भारतसंघ वाले भाग में भारतीय धर्मावलम्बियों के अनुपात में सतत ह्रास हो रहा है। ह्रास की इस दीर्घकालीन प्रवृत्ति में विभाजन के समय हुआ किंचित् अवरोध क्षणिक एवं प्रायः प्रभावहीन प्रमाणित हुआ। आगे हम देखेंगे कि भारतीय धर्मावलम्बियों के अनुपात में ह्रास के साथ मुस्लिम एवं ईसाई जनसंख्या के अनुपात में हो रही वृद्धि सम्पूर्ण भारतसंघ में एक जैसी नहीं है। यह वृद्धि कुछ सीमित क्षेत्रों में केन्द्रित है। इन क्षेत्रों में मुसलमानों एवं ईसाइयों के अनुपात में हुई वृद्धि भारतसंघ में भारतीय धर्मावलम्बियों के अनुपात में हुए कुल ह्रास से कई गुणा अधिक है। इसके परिणामस्वरूप भारतसंघ के भीतर ऐसे अनेक स्थान उभरे हैं जहाँ भारतीय धर्मावलम्बियों का अनुपात अत्यन्त शीघ्रता से घटता जा रहा है।

पाकिस्तान की धर्मानुसार जनसंख्या: 1901-1991

भारतवर्ष के जो क्षेत्र विभाजन के पश्चात् पाकिस्तान में गये उनकी धर्मानुसार जनसंख्या के आँकड़ों का संकलन तालिका-5 में किया गया है। यह संकलन मुख्यतः पाकिस्तानी जनगणना द्वारा प्रकाशित विभिन्न धर्मावलम्बियों के अनुपात पर आधारित है। विभाजन-पश्चात् के कुछ दशकों के लिये पाकिस्तान की कुल जनसंख्या संयुक्तराष्ट्र संघ के आँकड़ों से ली गयी है।

विभाजनपूर्व काल में भारतवर्ष के इस भाग में भारतीय धर्मावलम्बियों का अनुपात 15-20 प्रतिशत था। इस भाग में और पहले पूर्वी पाकिस्तान बने और अब बांग्लादेश कहलाने वाले क्षेत्रों में भारतीय धर्मावलम्बियों का अल्पसंख्यक होना वस्तुतः भारत के विभाजन का एकमात्र कारण बना।

तालिका-5 के आँकड़ों में उल्लेखनीय है कि विभाजनपूर्व काल में इस क्षेत्र में भारतीय धर्मावलम्बियों का अनुपात बढ़ रहा था। 1901 में यहाँ भारतीय धर्मावलम्बी 15.9 प्रतिशत थे, 1941 में उनका अनुपात बढ़कर 19.7% हो गया था। इसी अवधि में मुसलमानों का अनुपात 83.9 से घटकर 78.8% रह गया। भारतवर्ष का यह एकमात्र भाग था जहाँ भारतीय धर्मावलम्बियों की संख्या मुसलमानों की अपेक्षा अधिक गति से बढ़ रही थी। 1921 से 1941 के मध्य यह प्रक्रिया बहुत स्पष्ट और तीव्र होती दिखायी देती है। यह प्रक्रिया चलती रहती तो सम्भव है कि इस क्षेत्र में भारतीय धर्मावलम्बियों एवं मुसलमानों का अनुपात

कुछ समानता की ओर बढ़ने लगता और यह क्षेत्र भारतवर्ष की मुख्यधारा से जुड़ जाता। विभाजन ने यह सम्भावना समाप्त कर दी। विभाजन के उपरान्त भारतीय धर्मावलम्बी इस क्षेत्र से प्रायः पूर्णतः समाप्त हो गये। 1941 में 55.7 लाख भारतीय धर्मावलम्बी वहाँ थे, 1951 में उनकी संख्या मात्र 6.5 लाख रह गयी। जनसंख्या में भारतीय धर्मावलम्बियों का अनुपात 19.7% से घटकर 1.6% हो गया। तब से यह अनुपात प्रायः उसी स्तर पर बना हुआ है।

तालिका 5: पाकिस्तान की धर्मानुसार जनसंख्या, 1901-1991

वर्ष	भा.धर्मी	मुसलमान	ईसाई	कुल
1901	2,641	13,904	0,032	16,577
	(15.932)	(83.875)	(0.193)	
1911	2,898	16,364	0,119	19,381
	(14.953)	(84.433)	(0.614)	
1921	3,274	17,620	0,214	21,108
	(15.511)	(83.475)	(1.014)	
1931	4,427	18,757	0,357	23,541
	(18.805)	(79.678)	(1.517)	
1941	5,568	22,293	0,421	28,282
	(19.687)	(78.824)	(1.489)	
1951	0,646	39,286	0,520	40,451
		(1.596)	(97.119)	(1.285)
1961	0,754	49,889	0,699	51,343
	(1.469)	(97.169)	(1.362)	
1971	1,208	65,254	0,981	67,443
	(1.791)	(96.755)	(1.454)	
1981	1,454	85,371	1,371	88,197
	(1.649)	(96.796)	(1.555)	
1991	2,018	118,475	1,903	122,397
	(1.649)	(96.796)	(1.555)	

टिप्पणी: जनसंख्या सहस्रों में है, कोष्ठकों में दिये गये आँकड़े कुल संख्या का प्रतिशत हैं। स्रोत: देखें, मूल पुस्तक की तालिका 2.4ए और 2.8ए।

पाकिस्तान में जो कुछ थोड़े-बहुत भारतीय धर्मावलम्बी शेष बचे हैं उनकी जनसंख्या वहाँ की कुल जनसंख्या से किंचित् अधिक गति से बढ़ रही है, परन्तु वहाँ भारतीय धर्मावलम्बियों की कुल संख्या नगण्य

ही रही है। विभाजन के समय भारतीय धर्मावलम्बियों का वहाँ से ऐसा निष्कासन हुआ कि आज पाकिस्तान में उनकी कुल जनसंख्या 1901 की जनसंख्या का अल्पांश है। पाकिस्तान की जनगणना के अद्यतन आँकड़े 1981 के हैं, उस वर्ष भारतीय धर्मावलम्बियों की कुल संख्या 1901 की संख्या का प्रायः 55 प्रतिशत थी। पाकिस्तान में शेष बचे भारतीय धर्मावलम्बियों में से अधिकांश सिन्ध प्रान्त में रहते हैं। 1981 की जनगणना के अनुसार पाकिस्तान के कुल 13.9 लाख भारतीय धर्मावलम्बियों में से 12.7 लाख सिन्ध में थे। पाकिस्तान में भारतीय धर्मावलम्बी मुख्यतः ग्रामीण क्षेत्रों में हैं, 1981 में उनकी 80% से अधिक जनसंख्या ग्रामीण थी।

पाकिस्तानी क्षेत्र में ईसाइयों की जनसंख्या पूरी बीसवीं शताब्दी में मुसलमानों की जनसंख्या से कहीं अधिक गति से बढ़ती रही है। विभाजन के समय भी वहाँ से ईसाइयों का भारतीय धर्मावलम्बियों जैसा समूल निष्कासन नहीं हुआ। इस सबके कारण पाकिस्तान की जनसंख्या में ईसाइयों का अनुपात 1901 से 1981 के मध्य आठ गुणा बढ़ा है, 1901 में वे 0.2 प्रतिशत थे, 1981 में 1.6 प्रतिशत हैं।

विभाजन के समय भारतवर्ष जिन तीन घटकों में बँटा, उनमें से पाकिस्तान वाले घटक में भारतीय धर्मावलम्बियों का अनुपात सबसे अधिक प्रभावित हुआ। ऐसा प्रतीत होता है कि इस क्षेत्र में भारतीय धर्मावलम्बियों की बढ़ते अनुपात पर अंकुश लगाना विभाजन का मुख्य उद्देश्य था।

बांग्लादेश की धर्मानुसार जनसंख्या: 1901-1991

तालिका-6 में आज बांग्लादेश के अन्तर्गत आने वाले क्षेत्रों की धर्मानुसार जनसंख्या के आँकड़े दिये गये हैं। यह संकलन बांग्लादेश के जनसंख्या विभाग द्वारा उपलब्ध करवाये गये आँकड़ों पर आधारित है।

विभाजनपूर्व काल में भारतवर्ष के इस भाग में भारतीय धर्मावलम्बियों का अनुपात पाकिस्तान के अधीन आये क्षेत्रों की अपेक्षा कहीं अधिक था। परन्तु बीसवीं शताब्दी के प्रत्येक दशक में इस क्षेत्र में उनके अनुपात में निरन्तर ह्रास होता चला गया है।

सन् 1901 में बांग्लादेश की जनसंख्या में भारतीय धर्मावलम्बियों का अनुपात 33.9% था। 1901 से 1941 तक के चार दशकों में यह घटकर 29.6% रह गया। विभाजन के समय भारतीय धर्मावलम्बियों का अनुपात प्रायः एक चौथाई घटकर 1951 में 22.9% हो गया। विभाजनपश्चात् के 40 वर्षों में उनका अनुपात तीव्रता से घटते हुए 1991 में 11.4% रह गया है। यह अनुपात 1951 के उनके अनुपात का ठीक आधा है। इस प्रकार जनगणना के जिन 90 वर्षों के आँकड़ों का संकलन यहाँ हुआ है, उस अवधि में इस क्षेत्र में भारतीय धर्मावलम्बियों का अनुपात 33.9% से घटकर 11.4% हुआ और मुस्लिम अनुपात 66.1% से बढ़कर 88.3% तक पहुँच गया है।

तालिका 6: बांग्लादेश की धर्मानुसार जनसंख्या, 1901-1991

वर्ष	भा.धर्मी	मुसलमान	ईसाई	कुल
1901	9,814	19,113	नगण्य	28,297
	(33.927)	(66.073)		
1911	10,353	21,202	नगण्य	31,555
	(32.809)	(67.191)		
1921	10,608	22,646	नगण्य	33,254
	(31.900)	(68.100)		
1931	10,812	24,731	0,061	35,604
	(30.367)	(69.461)	(0.171)	
1941	12,437	29,509	0,053	41,999
	(29.613)	(70.261)	(0.126)	
1951	10,110	33,943	0,113	44,166
	(22.891)	(76.854)	(0.255)	
1961	10,646	44,415	0,162	55,223
	(19.278)	(80.429)	(0.293)	
1971	10,138	60,533	0,214	70,885
	(14.302)	(85.396)	(0.302)	
1981	11,722	77,906	0,284	89,912
	(13.037)	(86.647)	(0.316)	
1991	12,672	98,420	0,363	111,455
	(11.370)	(88.305)	(0.325)	

टिप्पणी: जनसंख्या सहस्रों में है, कोष्ठकों में दिये गये आँकड़े कुल संख्या का प्रतिशत हैं। स्रोत: देखें, मूल पुस्तक की तालिका 2.5 और 2.9ए।

पाकिस्तान की स्थिति के विपरीत बांग्लादेश वाले क्षेत्र में भारतीय धर्मावलम्बियों का अनुपात बीसवीं शताब्दी के प्रत्येक दशक में घटता चला गया है। विभाजन के समय पाकिस्तान की भाँति इस क्षेत्र में भारतीय धर्मावलम्बियों का सम्पूर्ण विनाश नहीं हुआ, परन्तु तब से भारतीय धर्मावलम्बियों का यहाँ से सतत निष्कासन होता चला गया है।

भारतवर्ष की धर्मानुसार जनसंख्या: 1881-1991

भारत की तीन घटक इकाइयों की धर्मानुसार जनसंख्या सम्बन्धी आँकड़े संकलित करने के पश्चात् सम्पूर्ण भारतवर्ष की धर्मानुसार जनसंख्या के आँकड़ों को देखना समुचित है। सन् 1881 से 1991 तक की अवधि के लिये

ये आँकड़े तालिका-7 में दिये गये हैं। समस्त आँकड़ों का सिंहावलोकन करते हुए परिशिष्ट तालिका-1 में भारतसंघ, पाकिस्तान, बांग्लादेश और भारतवर्ष की धर्मानुसार जनसांख्यिकी का एक स्थान पर संकलन कर दिया गया है।

तालिका 7: भारतवर्ष की धर्मानुसार जनसंख्या, 1881-1991

वर्ष	भा.धर्मी	मुसलमान	ईसाई	कुल
1881	198,424	49,953	1,778	250,155
	(79.320)	(19.969)	(0.711)	
1891	220,343	57,068	2,164	279,575
	(78.814)	(20.412)	(0.774)	
1901	218,973	62,119	2,776	283,868
	77.139	21.883	0.978	
1911	231,503	67,835	3,666	303,004
	(76.403)	(22.387)	(1.210)	
1921	230,225	71,005	4,497	305,727
	(75.304)	(23.225)	(1.471)	
1931	252,403	79,306	5,966	337,675
	(74.747)	(23.486)	(1.767)	
1941	287,124	94,447	7,427	388,998
	(73.812)	(24.279)	(1.909)	
1951	325,756	110,890	9,059	445,705
	(73.088)	(24.880)	(2.033)	
1961	392,968	141,244	11,589	545,801
	(71.998)	(25.878)	(2.123)	
1971	483,863	187,205	15,420	686,488
	(70.484)	(27.270)	(2.246)	
1981	599,858	243,280	18,300	861,438
	(69.634)	(28.241)	(2.124)	
1991	734,791	323,447	21, 917	1,080,155
	(68.026)	(29.944)	(2.029)	

टिप्पणी: जनसंख्या सहस्रों में है, कोष्ठकों में दिये गये आँकड़े कुल संख्या का प्रतिशत हैं। स्रोत: मूल पुस्तक की तालिका 2.10 और 2.11 देखें।

जनगणना की इस 110 वर्ष की अवधि में भारतवर्ष की जनसंख्या में भारतीय धर्मावलम्बियों के अनुपात में 11 प्रतिशत अंकों का ह्रास हुआ है। सन् 1881 में यहाँ की कुल जनसंख्या में भारतीय धर्मावलम्बियों का अनुपात 79.32% था, अब 1991 में यह अनुपात मात्र 68.03% रह गया है। इसी अवधि

में भारतवर्ष में मुसलमानों का अनुपात प्रायः 10 प्रतिशत अंकों से बढ़ा है, 1881 में वे जनसंख्या का 20% थे, 1991 में वे 30% हो गये हैं। ईसाइयों का अनुपात 1 प्रतिशत अंक से कुछ अधिक बढ़ा है, वे 1881 में जनसंख्या का 0.7% थे, अब 1991 में 2% से अधिक हैं। भारतीय धर्मावलम्बियों के अनुपात में ह्रास और मुसलमानों के अनुपात में वृद्धि का क्रम इस पूरी अवधि में सतत चलता रहा है, यह क्रम अब भी थमा नहीं दिखता। ईसाइयों का अनुपात 1881 से 1971 के मध्य 90 वर्ष तक निरन्तर बढ़ता रहा, अब अन्तिम दो दशकों में यह वृद्धि कुछ अवरुद्ध हुई है।

भारतवर्ष जैसे भौगोलिक एवं सांस्कृतिक एकरूपता से युक्त सुगठित-सुसीमित क्षेत्र में किसी बहुसंख्यक समुदाय के अनुपात में मात्र एक शताब्दी की अवधि में 11 प्रतिशत अंकों का ह्रास होना एक असाधारण घटना है। यह ह्रास कितना बड़ा है इसका अनुमान इस तथ्य से लगाया जा सकता है कि अकबर के समय जब मुगल शासन अपने चरम पर था और भारत में इस्लामी शासन स्थापित हुए प्रायः 500 वर्ष हो चुके थे, तब जनसंख्या में मुसलमानों का अनुपात छठे भाग से अधिक नहीं हो पाया था। गत शताब्दी में भारतीय धर्मावलम्बियों के अनुपात में हुआ ह्रास इस्लामी शासन की पाँच शताब्दियों में हुए ह्रास के दो-तिहाई से भी अधिक है। ह्रास की गत शताब्दी जैसी गति बनी रही तो इक्कीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में भारतवर्ष में भारतीय धर्मावलम्बियों का अनुपात 50% से भी निम्न हो जायेगा और वे अपने ही मूल क्षेत्र में अल्पसंख्यक हो जायेंगे।

इक्कीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध की स्थिति

भारतवर्ष की धर्मानुसार जनसंख्या सम्बन्धी जो संकलन ऊपर हुआ है उससे हमें 1881 से 1991 तक के बारह दशकों के आँकड़े प्राप्त होते हैं। 1881 और 1891 के आँकड़े उत्तरवर्ती आँकड़ों से पूर्णतः तुलनीय नहीं हैं। इन प्रारम्भिक जनगणनाओं में भारतवर्ष का सम्पूर्ण क्षेत्र सम्मिलित नहीं हो पाया था। इन दो आँकड़ों को छोड़ दें तो भी 1901 से 1991 तक के दस दशकों के आँकड़े तो हमें उपलब्ध हैं हीं। इस लम्बी अवधि में विभिन्न धर्मावलम्बियों के पारस्परिक अनुपात में परिवर्तन की जो प्रवृत्ति दिखाई देती है उसके आधार पर आगे के कतिपय दशकों की स्थिति का प्रामाणिक अनुमान लगा पाना सम्भव है।

चित्र-1 में हमने सामान्य सांख्यिकी गणित के माध्यम से हमें उपलब्ध दस दशकों के आँकड़ों को जोड़ने वाली सर्वोत्तम प्रवृत्तिरेखाएँ खींची है। ऊपर की रेखा तालिका-7 में दिये गये भारतीय धर्मावलम्बियों के अनुपात के आँकड़ों को जोड़ती है, नीचे वाली रेखा में मुसलमानों एवं ईसाइयों का सम्मिलित अनुपात दर्शाया गया है। सांख्यिकी गणित के अनुसार ये प्रवृत्तिरेखाएँ अत्यन्त विश्वसनीय हैं। इन रेखाओं का R^2-मूल्य 1 के बहुत निकट है, जब किसी प्रवृत्तिरेखा का R^2-मूल्य 1 होता है तो उसे पूर्णतः विश्वसनीय माना जाता है।

जैसा कि चित्र-1 में स्पष्ट दिखायी देता है, भारतीय धर्मावलम्बियों के अनुपात को दर्शाने वाली रेखा 1901 के 77% के स्तर से सहज-निरन्तरता से नीचे गिरती हुई 1991 के 68% के स्तर पर पहुँचती है। ईसाइयों और मुसलमानों के सम्मिलित अनुपात को दर्शाने वाली रेखा वैसी ही सहज-निरन्तरता से ऊपर उठती चली जाती है। इन दोनों रेखाओं को आगे बढ़ाते चले जायें तो ये सन् 2061 ईसवी में एक-दूसरे को काटती हैं। उस समय भारतीय धर्मावलम्बियों का अनुपात मुसलमानों एवं ईसाइयों के सम्मिलित अनुपात के समान हो जाता है और भारतवर्ष की जनसंख्या दोनों समूहों में आधी-आधी बँट जाती है। उसके पश्चात् भारतीय धर्मावलम्बियों का अनुपात आगे घटता जाता है और मुसलमानों एवं ईसाइयों का सम्मिलित अनुपात बढ़ता जाता है।

चित्र-1 : भारतवर्ष में भारतीय धर्मियों एवं अन्यों की वृद्धि की प्रवृत्ति रेखाएं, 1901-2071

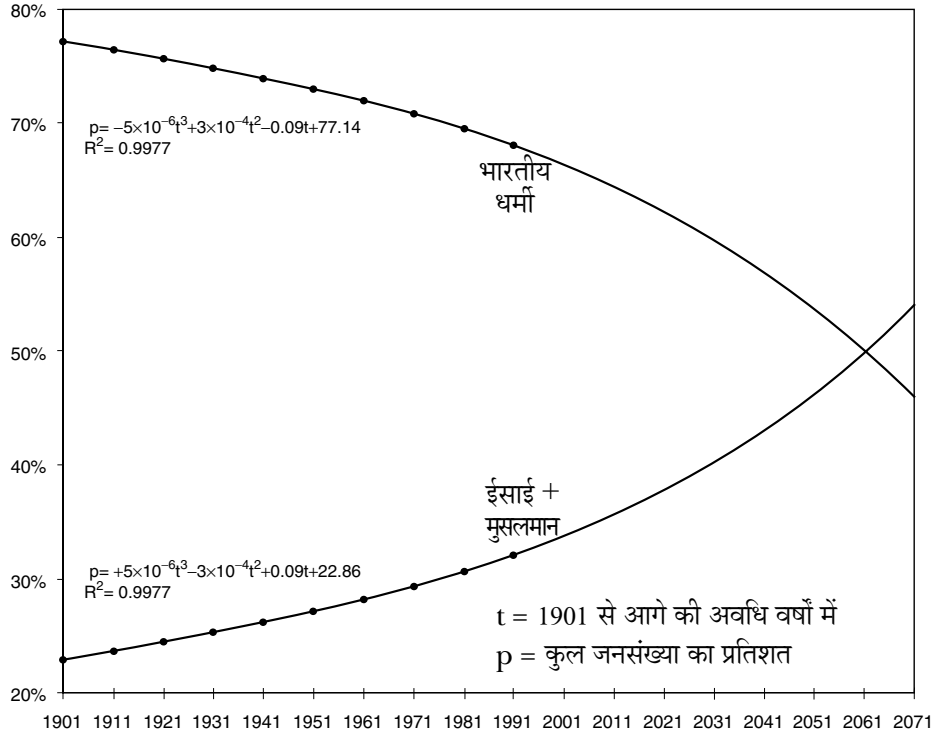

सांख्यिकी गणित की इन प्रवृत्तिरेखाओं पर विश्वास करें तो यह स्पष्ट है कि इक्कीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में भारतवर्ष में भारतीय धर्मावलम्बी अल्पसंख्यक हो जायेंगे। इस गणित पर अविश्वास करने का कोई कारण भी हमें दिखायी नहीं देता।

यह निष्कर्ष पूर्णतः आँकड़ों एवं सांख्यिकी गणित पर आधारित है। इस निष्कर्ष की तर्कसंगतता एवं सम्भाव्यता का मूल्यांकन करने के लिए हमने संयुक्तराष्ट्र के सन् 2050 के माध्य जनसांख्यिकी अनुमानों के आधार पर स्थिति का आकलन किया है। 'वर्ल्ड पापुलेशन प्रास्पेक्ट्स' के सन् 2000 के संस्करण में प्रकाशित संयुक्तराष्ट्र का अनुमान है कि सन् 2050 में भारतसंघ, पाकिस्तान और बांग्लादेश की जनसंख्या क्रमशः 157.2, 34.4 और 26.5 करोड़ होगी। यह आकलन साक्षरता के प्रसार और परिवार नियोजन की स्वीकृति जैसे अनेक मानवीय विकास सम्बन्धी अनुमानों को समाहित करके किया गया है। अब तक की प्रवृत्ति को देखते हुए यह माना जा सकता है कि 2050 में भारतसंघ में भारतीय धर्मावलम्बियों का अनुपात 80%, पाकिस्तान में 1.5% और बांग्लादेश में 5% होगा। इन अनुपातों को संयुक्तराष्ट्र के उपरोक्त आँकड़ों के साथ मिलाकर आकलन करें तो 2050 में भारतवर्ष की जनसंख्या में भारतीय धर्मावलम्बियों का अनुपात 58.5% बैठता है।

इक्कीसवीं शताब्दी के मध्य में भारतसंघ में भारतीय धर्मावलम्बियों का अनुपात 80%, पाकिस्तान में 1.5% और बांग्लादेश में 5% मानना अत्यन्त आशावादी कल्पना है। पाकिस्तान की जनसंख्या में यह अनुपात अब भी इतना ही है। बांग्लादेश में भारतीय धर्मावलम्बियों का अनुपात अत्यन्त शीघ्रता से घट रहा है और आगामी 50 वर्षों में यह निश्चित ही 5% से कहीं नीचे होगा। भारतसंघ में भारतीय धर्मावलम्बियों का अनुपात सतत घट रहा है, बहुत सम्भावना है कि 2050 में वे 80% से भी अल्प होंगे। सन् 2050 में भारतसंघ की जनसंख्या में भारतीय धर्मावलम्बियों का अनुपात 75% मानें और इसे कुल जनसंख्या के संयुक्तराष्ट्र के अनुमानों के साथ मिलाकर पुनः आकलन करें तो 2050 में भारत की जनसंख्या में भारतीय धर्मावलम्बियों का अनुपात 55% बैठता है। अतः 2060 में भारतीय धर्मावलम्बियों का अनुपात 50% के स्तर पर होने का हमारा आकलन संयुक्तराष्ट्र के अनुमानों से बहुत भिन्न नहीं है।

भारतसंघ के विभिन्न क्षेत्रों की धर्मानुसार जनसांख्यिकी

भारतवर्ष में भारतीय धर्मावलम्बियों का अनुपात में गत प्रायः एक सौ वर्षों में तीव्र ह्रास हुआ है। भारतसंघ में यह ह्रास बहुत अधिक नहीं रहा, चाहे यह सही है कि भारतवर्ष के इस घटक में भी विभाजन के पश्चात् के चार दशकों में उनका अनुपात प्रायः दो प्रतिशत अंकों से घटा है। भारतसंघ के विभिन्न राज्यों एवं जनपदों के पृथक्-पृथक् आँकड़े देखें तो स्थिति दो प्रतिशत अंक के इस माध्य ह्रास से कहीं अधिक चिन्तनीय दिखती है। इन विस्तृत आँकड़ों से स्पष्ट होता है कि भारतसंघ के कतिपय परिसीमित भौगोलिक क्षेत्रों में भारतीय धर्मावलम्बियों का अनुपात गत शताब्दी में और विशेषतः विभाजनपश्चात् के चार दशकों में अत्यन्त तीव्रता से घटा है।

परिशिष्ट तालिका-2 में हमने 1901 से 1991 की अवधि के लिए भारतसंघ के विभिन्न राज्यों और केन्द्र शासित प्रदेशों की धर्मानुसार जनसंख्या के विस्तृत आँकड़े दिये हैं। इन आँकड़ों का अवलोकन करने पर धर्मानुसार जनसांख्यिकी की भिन्नता के आधार पर भारतसंघ तीन स्पष्टतः भिन्न क्षेत्रों में विभाजित हुआ दिखता है।

क्षेत्र-1: जहाँ भारतीय धर्मावलम्बियों का वर्चस्व है

भारतसंघ का एक पर्याप्त बड़ा भाग ऐसा है जहाँ भारतीय धर्मावलम्बियों का स्पष्ट वर्चस्व है और उनके अनुपात में गत दस-ग्यारह दशकों में एक-दो प्रतिशत अंकों से अधिक का ह्रास नहीं हुआ है। मानचित्र-1 में इस भाग को क्षेत्र-1 के रूप में दर्शाया गया है। प्रायः सम्पूर्ण उत्तरपश्चिमी, पश्चिमी एवं मध्य भारत और केरल को छोड़कर सम्पूर्ण दक्षिणी भारत इस क्षेत्र में आता है। यह क्षेत्र भारतसंघ के भौगोलिक क्षेत्र के प्रायः दो-तिहाई भाग पर व्याप्त है। 1991 में भारतसंघ की जनसंख्या का प्रायः 57% भाग इस क्षेत्र में गिना गया है। इस विस्तृत भूभाग में भारतीय धर्मावलम्बियों का माध्य अनुपात 91% है। 1951 से 1991 के मध्य इस माध्य अनुपात में किंचित् ही ह्रास हुआ है। इस क्षेत्र में केवल कुछ ही ऐसे छोटे-छोटे परिसीमित क्षेत्र हैं जहाँ ईसाइयों और मुसलमानों की उपस्थिति उल्लेखनीय है।

उत्तर में हिमाचलप्रदेश और दक्षिण में तमिलनाडु के मध्य फैले इस विस्तृत क्षेत्र में आने वाले समस्त राज्यों में भारतीय धर्मावलम्बियों का अनुपात 85% से अधिक है। उत्तरपश्चिम के पंजाब, हरियाणा एवं हिमाचलप्रदेश और मध्य भारत के मध्यप्रदेश एवं ओडिसा में भारतीय धर्मावलम्बियों का अनुपात 95% अथवा उससे अधिक है। दिल्ली, पश्चिमी भारत के राजस्थान, गुजरात एवं महाराष्ट्र और दक्षिणी भारत के आंध्रप्रदेश एवं तमिलनाडु राज्यों में भारतीय धर्मावलम्बी प्रायः 90% हैं। इस क्षेत्र में उनका न्यूनतम अनुपात कर्नाटक में है जहाँ वे जनसंख्या के 86% से किंचित् अधिक हैं।

कतिपय परिसीमित क्षेत्रों को छोड़कर अन्य सम्पूर्ण क्षेत्र-1 के प्रायः समस्त जनपदों में ईसाई और मुस्लिम नगण्य हैं। उल्लेखनीय ईसाई एवं मुस्लिम उपस्थिति वाले परिसीमित क्षेत्रों में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण क्षेत्र महाराष्ट्र के औरंगाबाद और आंध्रप्रदेश के हैदराबाद-नगर जनपदों पर केन्द्रित एक लम्बी पट्टी है। इन दो केन्द्रों के मध्य और इनके कुछ उत्तर व दक्षिण की ओर बढ़ती हुई इस पट्टी में मध्यप्रदेश का पूर्वी निमाड़ जनपद, मध्य महाराष्ट्र के अनेक जनपद, कर्नाटक के उत्तरी और आन्ध्रप्रदेश के उत्तरपश्चिमी जनपद आते हैं। यह पट्टी स्वतन्त्रतापूर्व काल में हैदराबाद निजाम के अधीन आती थी। इस पट्टी के सब जनपदों में मुसलमानों की पर्याप्त उपस्थिति है। प्रत्येक जनपद में उनका अनुपात 12% से अधिक है और कुछ जनपदों में यह 24% तक पहुँचता है।

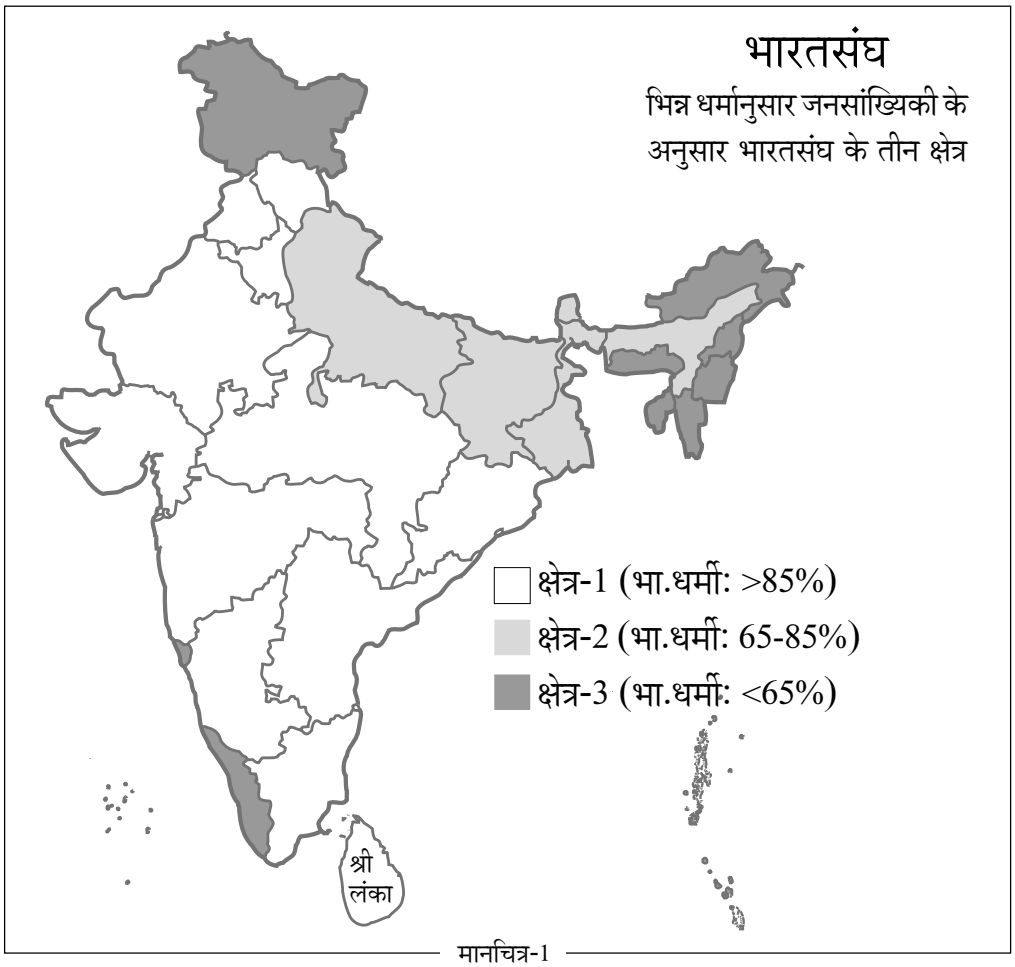

मानचित्र-1

इस पट्टी में आने वाले महाराष्ट्र के औरंगाबाद और आन्ध्रप्रदेश के हैदराबाद एवं निजामाबाद जनपदों और विशेषतः इस पट्टी के साथ लगते महाराष्ट्र के अकोला, नासिक एवं ठाणे जैसे जनपदों में गत चार दशकों में मुसलमानों का अनुपात शीघ्रता से बढ़ा है।

इस पट्टी के अतिरिक्त क्षेत्र-1 में आने वाले अपेक्षाकृत उच्च मुस्लिम अथवा ईसाई उपस्थिति वाले अन्य छोटे-छोटे क्षेत्रों में भी विभाजन-पश्चात् के चार दशकों में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। दिल्ली, हिमाचल प्रदेश के चम्बा, पंजाब के संगरूर, हरियाणा के गुडगाँव, साथ लगते राजस्थान के अलवर, और कर्नाटक के उत्तर कन्नड़, दक्षिण कन्नड़ एवं कोड़गु जनपदों में मुसलमानों का अनुपात असामान्यतः बढ़ा है। गुजरात के डांग, ओडिसा के सुन्दरगढ़ एवं फूलबनी और तमिलनाडु के कन्याकुमारी जनपदों में ईसाई अनुपात में असामान्य वृद्धि हुई है।

इन कतिपय परिसीमित क्षेत्रों में मुसलमानों एवं ईसाइयों की उल्लेखनीय उपस्थिति एवं उनके अनुपात में असामान्य वृद्धि के होते हुए भी इस सम्पूर्ण क्षेत्र में भारतीय धर्मावलम्बियों का अनुपात प्रायः स्थिर बना रहा है। अतः भारतसंघ के दो-तिहाई क्षेत्रफल एवं प्रायः 60 प्रतिशत जनसंख्या को अपने में समेटे हुए इस विस्तृत क्षेत्र-1 में भारतीय धर्मावलम्बियों की परिस्थिति चिन्ता का विषय नहीं दिखायी देती।

क्षेत्र-2 : जहाँ भारतीय धर्मावलम्बी घट रहे हैं

भारतवर्ष के हृदय प्रदेश एवं पूर्वी भाग पर व्याप्त भारतसंघ के उत्तरप्रदेश, बिहार, पश्चिमी बंगाल एवं असम राज्यों का क्षेत्र धर्मानुसार जनसांख्यिकी की दृष्टि से क्षेत्र-1 से सर्वथा भिन्न है। मानचित्र में क्षेत्र-2 के रूप में दिखाया गया यह भाग भारतवर्ष की सर्वाधिक उपजाऊ भूमि से युक्त है। यह गंगा और ब्रह्मपुत्र जैसी महान् नदियों का क्षेत्र है। इस क्षेत्र की उर्वरता ऐसी है कि यहाँ भारतसंघ के प्रायः 19% भौगोलिक क्षेत्रफल पर प्रायः 37% जनसंख्या का भरण हो पाता है।

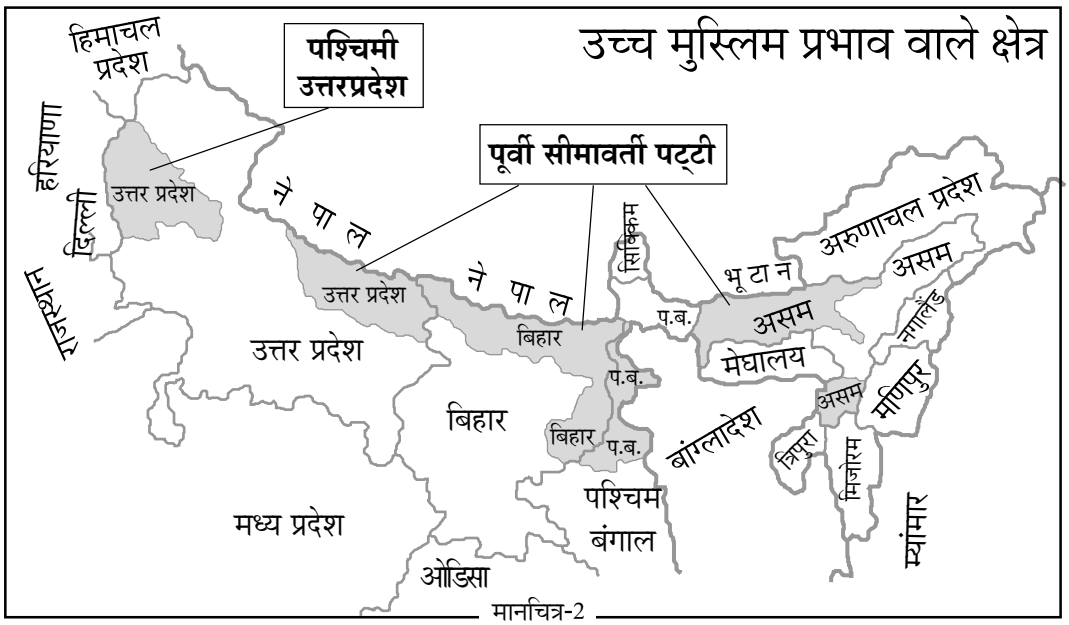

मानचित्र-2

भारतसंघ के इस अतिविशिष्ट क्षेत्र में भारतीय धर्मावलम्बियों का अनुपात क्षेत्र-1 जैसा ऊँचा नहीं है, और यह सतत घटता चला जा रहा है। भारतीय धर्मावलम्बियों का माध्य अनुपात यहाँ मात्र 80% है। 1951 से 1991 के चार दशकों में इस अनुपात में प्रायः 4 प्रतिशत अंकों का ह्रास हुआ है। क्षेत्र-2 की शेष

प्रायः समस्त जनसंख्या मुसलमानों की है, जनसंख्या में उनका अनुपात 19% बैठता है। क्षेत्र-2 के अपेक्षाकृत पूर्वी राज्यों पश्चिमी बंगाल और असम में मुसलमानों की उपस्थिति और भी अधिक है।

इस सम्पूर्ण क्षेत्र में ईसाइयों की संख्या नगण्य है। जनसंख्या में उनका माध्य अनुपात 1% से भी न्यून है। उनकी संख्या केवल दो परिसीमित क्षेत्रों में ही उल्लेखनीय है। एक क्षेत्र बिहार के अविभाजित रांची, मध्यप्रदेश के रायगढ़ और ओडिसा के सुन्दरगढ़ जनपदों से बना है और दूसरा असम के उत्तर-कछार पर्वतीय जनपद का है। इन दो स्थानों पर ईसाइयों का जनसंख्या में पर्याप्त अनुपात है।

मुसलमानों का अनुपात क्षेत्र-2 के प्रायः समस्त जनपदों में ऊँचा है, क्षेत्र के अनेक जनपदों में वे प्रायः बहुसंख्यक हैं। परन्तु इस क्षेत्र के नेपाल एवं बांग्लादेश के साथ लगते सीमावर्ती जनपद मिलकर एक ऐसी सुगठित सीमावर्ती पट्टी बनाते हैं जिसमें प्रायः सब स्थानों पर मुसलमानों की उपस्थिति विशेषतः अत्युच्च है।

तालिका 8: पूर्वी सीमावर्ती पट्टी की धर्मानुसार जनसांख्यिकी के संक्षिप्त आँकड़े, 1951-1991

		1951	1961	1971	1981	1991
उत्तरप्रदेश	कुल	9,953	11,140	12,863	15,922	19,966
	मुसलमान	1,533	1,837	2,373	3,054	4,087
		(15.40)	(16.49)	(18.45)	(19.18)	(20.47)
बिहार	कुल	15,690	19,026	23,097	28,499	35,473
	मुसलमान	2,285	3,349	4,389	5,670	7,448
		(14.56)	(17.60)	(19.00)	(19.90)	(21.00)
पश्चिमबंगाल	कुल	4,697	6,282	8,189	10,231	13,061
	मुसलमान	1,873	2,765	3,538	4,599	6,157
		(39.89)	(44.01)	(43.20)	(44.95)	(47.14)
असम	कुल	4,409	6,107	8,496	10,480	13,267
	मुसलमान	1,429	2,023	2,709	3,342	4,929
		(32.42)	(33.13)	(31.89)	(31.89)	(37.15)
सीमावर्ती पट्टी (कुल)	कुल	34,750	42,554	52,645	65,132	81,767
	मुसलमान	7,120	9,974	13,009	16,665	22,621
		(20.49)	(23.44)	(24.71)	(25.59)	(27.67)

टिप्पणी: "कुल" और "मुसलमान" पंक्तियों में सीमावर्ती पट्टी के सम्बद्ध भाग की कुल जनसंख्या और मुसलमानों की संख्या सहस्रों में दी गयी है। कोष्ठकों में दिये गये आँकड़े पट्टी के उस भाग की कुल जनसंख्या का प्रतिशत हैं।
स्रोत: देखें, मूल पुस्तक की तालिका 6.9।

मानचित्र-2 में दर्शायी गयी यह सीमावर्ती पट्टी पूर्वी उत्तरप्रदेश के बहराइच जनपद से प्रारम्भ होकर राज्य के गोंडा, बस्ती, गोरखपुर और देवरिया जनपदों से होती हुई बिहार के चम्पारन, मुजफ्फरपुर, दरभंगा,

सहरसा, पूर्णिया और संथाल-परगना जनपदों, पश्चिमी बंगाल के पश्चिमी दीनाजपुर, मालदा, बीरभूम और मुर्शिदाबाद जनपदों और असम के ग्वालपाड़ा, कामरूप, दारंग और नौगाँव जनपदों तक व्याप्त है।

तालिका-8 में इस सीमावर्ती पट्टी की धर्मानुसार जनसांख्यिकी के संक्षिप्त आँकड़े संकलित किये गये हैं। पट्टी की 1991 की कुल जनसंख्या में 28% मुस्लिम हैं। 1951 में उनका अनुपात प्रायः 20% था। विभाजन-पश्चात् के चार दशकों में इस पट्टी की कुल जनसंख्या में मुसलमानों का भाग 7-8 प्रतिशत अंकों से बढ़ा है। जो जनपद हमने ऊपर गिनाये हैं वे 1971 की जनगणना के समय के अविभाजित जनपद हैं। उसके पश्चात् इन जनपदों का एकाधिक विभाजन हुआ है। इस प्रकार बने नये अपेक्षाकृत छोटे सीमावर्ती जनपदों में मुस्लिम अनुपात और भी अधिक है। सीमा के साथ लगते अनेक खण्डों और थाना-क्षेत्रों में मुसलमानों का अनुपात बहुत ऊँचा है और उस अनुपात में गत चार दशकों में अत्यन्त वृद्धि हुई है।

इस उत्तरी सीमावर्ती पट्टी के अतिरिक्त क्षेत्र-2 में तीन और ऐसे परिसीमित क्षेत्र हैं जहाँ मुसलमानों का अनुपात असामान्यतः उच्च है और तीव्रता से बढ़ रहा है। ऐसा एक क्षेत्र पश्चिमी उत्तरप्रदेश के मुजफ्फरनगर और इसके आसपास के सहारनपुर, हरिद्वार, मेरठ, बिजनौर, मुरादाबाद, रामपुर और बरेली जनपदों को जोड़कर बनता है। इस परिसीमित क्षेत्र की जनसंख्या में मुसलमानों का अनुपात 36% से अधिक है। गत चार दशकों में यहाँ उनका अनुपात 6.4 प्रतिशत अंकों से बढ़ा है, मात्र 1981-1991 के दशक में इस अनुपात में 3 प्रतिशत अंकों से अधिक की वृद्धि हुई है। पश्चिमी बंगाल का कलकत्ता-हावड़ा क्षेत्र और असम का कछार जनपद दो अन्य ऐसे क्षेत्र हैं जहाँ मुसलमानों की उपस्थिति और उसमें हो रही वृद्धि असामान्य है।

उत्तरप्रदेश, बिहार, पश्चिमबंगाल एवं असम राज्य और विशेषतः इन राज्यों के सीमावर्ती क्षेत्र एवं कतिपय भीतरी जनपद ऐसे क्षेत्र हैं जहाँ मुसलमानों की उपस्थिति पर्याप्त उँची है और इसमें तीव्रता से वृद्धि हो रही है। इस क्षेत्र की जनसंख्या में भारतीय धर्मावलम्बियों का अनुपात ह्रासोन्मुख है और ऐसा निश्चित प्रतीत होता है कि यह प्रवृत्ति भविष्य में भी बनी रहेगी। इस क्षेत्र के अनेक जनपदों में भारतीय धर्मावलम्बी अब अल्पसंख्यक हो चुके हैं।

क्षेत्र-3: जहाँ भारतीय धर्मावलम्बी अल्पसंख्यक होते जा रहे हैं

भारतसंघ के सुदूर सीमावर्ती क्षेत्रों को अपने में समेटे हुए एक तीसरा क्षेत्र है जहाँ भारतीय धर्मावलम्बी प्रायः सब स्थानों पर अल्पसंख्यक होते जा रहे हैं। मानचित्र-1 में दिखाये गये इस क्षेत्र-3 में उत्तर में स्थित जम्मू-कश्मीर राज्य, पश्चिम में गोवा और केरल, भारतीय तटीय समुद्र के लक्षद्वीप एवं निकोबार द्वीपसमूह और उत्तरपूर्व के राज्य आते हैं। इस सम्पूर्ण क्षेत्र में कहीं भी भारतीय धर्मावलम्बियों का वर्चस्व नहीं है।

जम्मू-कश्मीर की जनसंख्या में भारतीय धर्मावलम्बियों का अनुपात केवल एक-तिहाई है। कश्मीर घाटी वाले भाग में तो उनकी संख्या नगण्य है। घाटी की लगभग सम्पूर्ण जनसंख्या मुसलमानों की है। विभाजन के पश्चात् जम्मू जनपद में भारतीय धर्मावलम्बियों का अनुपात कुछ बढ़ा है।

गोवा में भारतीय धर्मावलम्बी केवल दो-तिहाई हैं, शेष जनसंख्या में लगभग 30% ईसाई और 5% मुस्लिम हैं। गोवा भारतसंघ के उन गिनेचुने राज्यों में से है जहाँ भारतीय धर्मावलम्बियों के अनुपात में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। यह प्रक्रिया चलती रही तो निकट भविष्य में गोवा की जनसंख्या का धर्मानुसार स्वरूप पड़ोसी कर्नाटक एवं महाराष्ट्र राज्यों के समान हो जायेगा।

केरल

पश्चिमी तट के केरल प्रान्त में भारतीय धर्मावलम्बियों के अनुपात में बीसवीं शताब्दी के समस्त दशकों में सतत ह्रास होता चला गया है। 1991 में जनसंख्या में उनका भाग 57% है, यह 1901 के 69% के भाग से 12 प्रतिशत अंक कम है। इस अवधि में ईसाई एवं मुसलमान दोनों के भाग में छह-छह प्रतिशत अंकों की वृद्धि हुई है। ईसाइयों का अनुपात मुख्यतः विभाजनपूर्व के दशकों में बढ़ा है और मुसलमानों का विभाजनपश्चात् के दशकों में। मुसलमानों का अनुपात वस्तुतः 1961-1971 के दशक से बढ़ना प्रारम्भ हुआ। इन तीन दशकों में ईसाइयों के अनुपात में किंचित् ह्रास ही हुआ है।

केरल प्रान्त में भारतीय धर्मावलम्बियों का अनुपात अठारहवीं एवं उन्नीसवीं शताब्दियों में भी घटता रहा है। अठारहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में यहाँ के लोगों को बलात् इस्लाम में धर्म परिवर्तित किया गया और उन्नीसवीं शताब्दी में बड़ी संख्या में लोगों को ईसाई बनाया गया।

लक्षद्वीप

केरल के साथ लगते भारतीय तटीय समुद्र में स्थित लक्षद्वीप की जनसंख्या बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में ही प्रायः 100% मुस्लिम थी। 1991 में मुसलमानों का अनुपात कुछ घटकर 94% हुआ है।

अण्डमान एवं निकोबार द्वीपसमूह

अण्डमान एवं निकोबार द्वीपसमूह बंगाल की खाड़ी में सुदूर स्थित हैं। ये द्वीप भारतवर्ष की दक्षिणी सीमा को परिभाषित करते हैं और नौसैनिक दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हैं। विश्व के व्यस्त समुद्री मार्ग यहाँ से निकलते हैं। इन द्वीपों में भारतीय धर्मावलम्बियों का अनुपात 1901 के 81% से घटकर 1991 में

68% रह गया है। भारतीय धर्मावलम्बियों के अनुपात में यह ह्रास मुख्यतः निकोबार द्वीपों के लोगों के ईसाई धर्म में परिवर्तित होने से हुआ है। यह धर्म परिवर्तन 1941 से 1961 के मध्य अचानक हुआ दिखायी देता है। 1941 में निकोबार की जनसंख्या में 98% भारतीय धर्मावलम्बी थे, 1961 में यह अनुपात घटकर 27.5% हो गया। भारत के धुर दक्षिणी छोर के इन द्वीपों की जनसंख्या में अब 70% ईसाई हैं।

असमेतर उत्तरपूर्वी राज्य

बीसवीं शताब्दी में उत्तरपूर्वी राज्यों की धर्मानुसार जनसांख्यिकी भारतसंघ के अन्य सब भागों की अपेक्षा अधिक तीव्रता से परिवर्तित हुई है। यहाँ हम असम को नहीं जोड़ रहे। असम की जनसांख्यिकी का विश्लेषण हम पहले कर चुके हैं। असमेतर उत्तरपूर्वी राज्य ब्रह्मपुत्र घाटी के तीन ओर उच्च पर्वतीय प्राचीर के रूप में खड़े हैं और भारतसंघ की तिब्बत, चीन, म्यांमार और बांग्लादेश के साथ लगती पूर्वी सीमाओं पर एक सुदृढ़ सुरक्षा कवच जैसे हैं। सामरिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से ऐसे महत्त्व के इन राज्यों में से अधिकतर की प्रायः सम्पूर्ण जनसंख्या स्वतन्त्रता के पश्चात् के कुछ दशकों में ही ईसाई धर्म में परिवर्तित हो गयी है। यह परिवर्तन 1941-1951 के दशक में अकस्मात् प्रारम्भ हुआ और अगले कुछ दशकों में और गहरा एवं व्यापक होता चला गया।

नगालैण्ड में 1941 की जनगणना के अनुसार ईसाइयों का अनुपात नगण्य था। 1931 की जनगणना में सब स्थानों पर ईसाइयों का अनुपात कुछ ऊँचा ही गिना गया था। तब भी नगालैण्ड में मात्र 13% ईसाई थे। 1951 की जनगणना में वहाँ 54% ईसाई पाये गये। अब 1991 में नगालैण्ड की जनसंख्या में 88% ईसाई हैं। जो थोड़े-बहुत अन्य-धर्मावलम्बी वहाँ शेष हैं वे प्रायः सब कोहिमा जिले में सीमित हैं।

मिजोरम में भी 1941 में नगण्य ईसाई गिने गये थे, 1931 की जनगणना में उनका अनुपात 48% आँका गया था। 1951 में वहाँ 90% से अधिक ईसाई थे। अब 1991 में मिजोरम की जनसंख्या में 86% ईसाई हैं। जो भारतीय धर्मावलम्बी इस राज्य में शेष हैं, उनमें से प्रायः आधे बौद्ध हैं और वे प्रायः सब राज्य के दक्षिणी जनपदों में सीमित हैं। इन जनपदों की जनसंख्या बहुत नहीं है।

मेघालय में 1941-1951 के दशक में ईसाइयों के अनुपात में नगालैण्ड एवं मिजोरम जैसा अकस्मात् परिवर्तन तो नहीं हुआ। 1951 में मेघालय की जनसंख्या में मात्र 25% ईसाई गिने गये थे। उसके पश्चात् वहाँ धर्म परिवर्तन का क्रम सतत चलता गया और प्रत्येक दशक में ईसाइयों के अनुपात में वृद्धि होती रही। अब 1991 में मेघालय की जनसंख्या का 65% भाग ईसाई हैं। राज्य के मध्य भाग के पूर्वी गारो एवं पश्चिमी खासी पर्वतीय जनपदों में ईसाइयों का अनुपात और भी अधिक है।

1941-1951 के दशक में ईसाई धर्म में हुए अकस्मात् विस्तार का प्रभाव मणिपुर पर भी अपेक्षाकृत सीमित हुआ। 1951 में इस राज्य की जनसंख्या में मात्र 12% ईसाई थे, अब 1991 में यहाँ ईसाइयों का अनुपात 34% हो गया है। यह अनुपात नगालैण्ड, मिजोरम एवं मेघालय प्रान्तों में ईसाइयों के अनुपात की अपेक्षा अल्प ही दिखता है। परन्तु मणिपुर प्रान्त के बाह्य पर्वतीय जनपद प्रायः पूर्णतः ईसाई हो गये हैं। भारतीय धर्मावलम्बी अब केवल मणिपुर-केन्द्रीय जनपद के विभाजन से बने चार जनपदों में से तीन, इम्फाल, बिशनुपुर और थूबल, में सीमित हैं।

अरुणाचल प्रदेश पूर्वोत्तर क्षेत्र का सबसे बड़ा राज्य है। अभी कुछ दशक पूर्व तक यह राज्य सेना द्वारा शासित प्रदेश था। 1961 से पूर्व के यहाँ के जनसांख्यिकी आँकड़े उपलब्ध नहीं हैं। 1961 एवं 1971 के आँकड़ों के अनुसार तब यहाँ ईसाइयों का अनुपात नगण्य था। इन दो दशकों के मध्य अरुणाचल प्रदेश नागरिक शासन में आया और उसके बाद के दो दशकों में वहाँ ईसाइयों का अनुपात 10% तक पहुँच गया है। 1991 में राज्य के अपेक्षाकृत महत्त्वपूर्ण सुबनश्री एवं तिरप जनपदों में ईसाइयों का अनुपात प्रायः 20% है।

त्रिपुरा की स्थिति इस क्षेत्र के अन्य पाँच राज्यों से भिन्न है। त्रिपुरा उन पाँचों के समान पर्वतीय राज्य नहीं है। गोवा के अतिरिक्त यह दूसरा राज्य है जहाँ बीसवीं शताब्दी में भारतीय धर्मावलम्बियों के अनुपात में वृद्धि हुई है। 1961-1971 के दशक में यह वृद्धि बहुत तीव्रता से हुई। अब त्रिपुरा की जनसंख्या में 91% भारतीय धर्मावलम्बी हैं।

तालिका 9: उत्तरपूर्वी राज्यों (असम को छोड़कर) की धर्मानुसार जनसांख्यिकी, 1901-1991

	1901	1911	1921	1931	1941	1951	1961	1971	1981	1991
कुल	983.2	1,211	1,370	1,612	1,923	2,231	3,663	4,957	6,710	9,133
भा.धर्मी	91.18	89.05	85.20	80.73	89.86	69.19	68.22	67.48	62.59	56.35
मुसलमान	6.61	7.42	8.15	8.69	8.73	8.46	8.29	4.18	4.45	4.69
ईसाई	2.22	3.53	6.65	10.58	1.41	22.35	23.49	28.34	32.97	38.96

टिप्पणी: पहली पंक्ति में कुल जनसंख्या सहस्रों में दी गयी है। अगली तीन पंक्तियों में भारतीय धर्मावलम्बियों, मुसलमानों एवं ईसाइयों का जनसंख्या में प्रतिशत अनुपात दिया गया है। स्रोत: देखें, मूल पुस्तक की तालिका 6.4।

तालिका-9 में हमने उत्तरपूर्व के इन छह राज्यों की सम्मिलित जनसंख्या के धर्मानुसार आँकड़े संकलित किये हैं। सन् 1901 में इन राज्यों की जनसंख्या में भारतीय धर्मावलम्बियों का अनुपात 90% से अधिक था और ईसाई 2% से भी अल्प थे। अब 1991 में यहाँ भारतीय धर्मावलम्बी 55% के आसपास हैं और ईसाइयों का अनुपात प्रायः 40% हो गया है। यह परिवर्तन स्वतन्त्रता के पश्चात् के दशकों में ही हुआ है। स्वतन्त्रता से तुरन्त पूर्व 1941 के दशक में यहाँ 90% भारतीय धर्मावलम्बी थे। 1931 के दशक में जब

ईसाइयों का अनुपात कुछ अधिक गिना गया था तब भी इस क्षेत्र में 80% से अधिक भारतीय धर्मावलम्बी थे और मात्र 10% ही ईसाई थे।

उत्तरपूर्व के इस क्षेत्र की कुल जनसंख्या में भारतीय धर्मावलम्बियों का अनुपात और अल्प केवल इसलिये नहीं हो पाया क्योंकि त्रिपुरा एवं मणिपुर के केन्द्रीय जनपदों में भारतीय धर्मावलम्बी बड़ी संख्या में बचे हुए हैं। ये दो क्षेत्र अनेक शताब्दियों तक सशक्त वैष्णव राज्य रहे हैं। क्षेत्र के अन्य भागों में और विशेषतः नगालैण्ड, मिजोरम, मेघालय राज्यों और मणिपुर के बाह्य जनपदों में भारतीय धर्मावलम्बियों का अनुपात अब नगण्य ही है।

अब तक के विश्लेषण का सारांश यह है कि 1881 से 1991 की अवधि में भारतवर्ष में भारतीय धर्मावलम्बियों के अनुपात में 11 प्रतिशत अंकों का ह्रास हुआ है। भारतवर्ष जैसे सघन-सुगठित सांस्कृतिक एवं भौगोलिक क्षेत्र में किसी एक धार्मिक समुदाय के अनुपात में ऐसा ह्रास असाधारण घटना है। इससे भी अधिक चिन्तनीय तथ्य यह है कि यह ह्रास विशेषतः भारतवर्ष के सीमावर्ती क्षेत्रों में केन्द्रित रहा है। इस ह्रास के चलते 1947 में भारत का विभाजन हुआ। अब विभाजनपश्चात् के कतिपय दशकों में उत्तरप्रदेश, बिहार, पश्चिमी बंगाल एवं असम राज्यों के सीमावर्ती जनपदों में उच्च मुस्लिम प्रभाव वाली एक नयी सीमावर्ती पट्टी विकसित हो रही है। उत्तरपूर्व की सीमाओं पर इससे भी अधिक सघन ईसाई प्रभाव वाला एक विशिष्ट क्षेत्र बना है। धुर दक्षिणी सीमा पर निकोबार द्वीप ईसाई हो गये हैं। पश्चिमी तट पर केरल राज्य में भारतीय धर्मावलम्बी अपना वर्चस्व खो बैठे हैं। धुर उत्तर की कश्मीर घाटी में उनकी उपस्थिति नगण्य है। उल्लेखनीय है कि सीमा क्षेत्रों में होने वाले ये सब दूरगामी परिवर्तन अधिकतर स्वतन्त्रता एवं विभाजन के पश्चात् के दशकों में ही घटे हैं।

विश्व की धर्मानुसार जनसांख्यिकी

भारत की धर्मानुसार जनसांख्यिकी में बीसवीं शताब्दी में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन हुए है। 1891 और 1991 के मध्य जनसंख्या में भारतीय धर्मानुयायियों की भागीदारी 79% से कम हो कर 68% रह गयी। 11 प्रतिशत अंकों का यह ह्रास मुख्यतः इस्लाम धर्मानुयायियों की जनसंख्या में हुई असाधारण वृद्धि के कारण हुआ। इन एक सौ वर्षों में भारतवर्ष में उनका अनुपात 20% से बढ़कर प्रायः 30% हो गया। इस बड़े जनसांख्यिकी परिवर्तन के परिणामस्वरूप ही इस शताब्दी के मध्य भारतवर्ष का विभाजन हुआ और देश के पाँचवे भाग से भी अधिक क्षेत्रफल एवं विभाजनपूर्व की जनसंख्या के प्रायः पाँचवे भाग को लेकर दो पृथक् इस्लामी राज्य भारतभूमि पर स्थापित हुए।

बीसवीं शताब्दी के मध्य भारतवर्ष में ईसाइयों के अनुपात में निश्चय ही वैसी वृद्धि नहीं हुई। जनसंख्या में उनका भाग 1881 के प्रायः 0.7% से बढ़कर 2% तक ही पहुँच पाया है। तथापि उन्होंने भी इस शताब्दी में भारतवर्ष की उत्तरपूर्वी और दक्षिणी सीमाओं पर स्पष्ट ईसाई-प्रभाव का एक महत्त्वपूर्ण क्षेत्र बना लिया है।

इन बहुत बड़े परिवर्तनों को समझने के लिए भारत की परिस्थिति को बीसवीं शताब्दी में विश्व की धर्मानुसार जनसांख्यिकी में हुए परिवर्तनों के परिप्रेक्ष्य में रख कर देखना आवश्यक है। आज के विश्व में इस्लाम एवं ईसाई सम्प्रदाय धर्मान्तरण में निष्ठा रखने वाले दो सशक्त एवं अतिसक्रिय धर्मसम्प्रदाय हैं। बीसवीं शताब्दी के मध्य इन दोनों ने विश्व के प्रायः समस्त क्षेत्रों में अपनी पैठ बढ़ायी है। परिणामस्वरूप प्रायः सब स्थानों पर स्थानीय स्वदेशी धर्मों के अनुयायियों का अनुपात घटा है।

विभिन्न देशों की जनगणना में जनसंख्या का धर्मानुसार वर्गीकरण भिन्न होता है। उनका आपस में सामञ्जस्य बैठाना आसान नहीं होता। सौभाग्यवश एक वैश्विक ईसाई संगठन ने विश्व के सभी देशों की धर्मानुसार जनसांख्यिकी के आँकड़ों का समेकित संकलन 'वर्ल्ड क्रिस्चियन इन्साइक्लोपीडिया' नामक एक संदर्भग्रन्थ में किया है। यह विश्वकोष प्रथमतः 1982 में प्रकाशित हुआ था, सम्प्रति इसका एक नवीन संस्करण आया है। इस स्रोत का प्रयोग कर हमने सन् 1900, 1970 एवं 1990 के लिये विश्व के विभिन्न देशों, भूराजनीतिक क्षेत्रों एवं महाद्वीपों की धर्मानुसार जनसांख्यिकी का संकलन किया है।[2]

इस ईसाई विश्वकोष के आँकड़ों का सीधे-सीधे प्रयोग करने में अनेक समस्याएँ हैं। यह विश्वकोष विश्व भर में धर्मान्तरण के कार्य में लगे ईसाई मिशनों की सुविधा के लिये एक सन्दर्भग्रन्थ के रूप में संकलित और प्रकाशित किया गया है। इस में ईसाई मिशनों द्वारा विश्व के विभिन्न क्षेत्रों में प्राप्त की गयी सफलताओं को और उनके समक्ष प्रस्तुत चुनौतियों को आँकड़ों के माध्यम से प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। अतः विश्व में और विशेषतः विश्व के ईसाई-इतर भागों में ईसाइयों की संख्या को प्रायः बढ़ा-चढ़ा कर दर्शाया गया है। इस विश्वकोष के आँकड़ों में ईसाई-इतर देशों में ईसाइयों और बहुदा मुसलमानों का भी अनुपात उन देशों की आधिकारिक जनगणना के आँकड़ों से कहीं अधिक पाया जाता है। इसके अतिरिक्त इसमें 'क्रिप्टो-क्रिस्चियन' नामक प्रच्छन्न ईसाइयों के एक नये वर्ग का उल्लेख हुआ है। विश्वकोष के अनुसार इन प्रच्छन्न ईसाइयों का अस्तित्व केवल चर्च को ही ज्ञात है, उन देशों की अपनी राजकीय एवं अन्य धर्मनिरपेक्ष लौकिक संस्थाओं से उन्हें गुप्त रखा गया है। कोष में 1990 में विश्व में प्रायः 10.3 करोड़ क्रिप्टो-क्रिस्चियन गिने गये हैं, इनमें से प्रायः 9.4 करोड़ एशिया में एवं 70 लाख अफ्रीका में हैं।

[2]डी. बी. बैरेट, जी. टी. कुरियन एवं टी. एम. जॉनसन कृत **वर्ल्ड क्रिस्चियन इनसाइक्लोपीडिया: ए कम्पेरेटिव सर्वे ऑफ चर्चेस एंड रिलीजन्स इन द मॉडर्न वर्ल्ड**, द्वितीय संस्करण, ऑक्सफॉर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, न्यूयॉर्क 2001।

विश्वकोष में विश्व के ईसाई-इतर देशों के स्थानीय स्वदेशी धर्मों के अनुयायियों को 'जातीय धर्मानुयायी' और 'नवधर्मानुयायी' जैसे अनेक वर्गों में विभाजित कर उन्हें उस देश की मुख्य धार्मिक धारा से पृथक् करने का प्रयास भी हुआ है। कोष में विश्व की 1990 की जनसंख्या में प्रायः 20 करोड़ जातीय धर्मानुयायी गिने गये हैं। इनमें से प्रायः 11.8 करोड़ एशिया में हैं और 8 करोड़ अफ्रीका में। इनके अतिरिक्त 9.2 करोड़ नवधर्मानुयायी गिने गये हैं जो प्रायः सब एशिया में हैं।

इस विश्वकोष में बड़ी संख्या में लोगों को नास्तिक एवं धर्मविहीन वर्गों में रखा गया है। कोष के अनुसार 1990 में विश्व में प्रायः 70.7 करोड़ धर्मविहीन हैं और 14.6 करोड़ नास्तिक। इनमें से अधिकांश उन देशों में हैं जहाँ मार्क्सवादी राज्य हैं अथवा हुआ करते थे। धर्मविहीन अथवा नास्तिक गिने गये प्रायः 5.8 करोड़ लोग यूरोप में, 2.5 करोड़ उत्तरी अमरीका में और 1.6 करोड़ जापान में हैं।

इन आँकड़ों का अपने संकलन एवं विश्लेषण के लिये उपयोग करते हुए हमने विश्व के ईसाई-इतर देशों एवं क्षेत्रों में क्रिप्टो-क्रिस्चियन, जातीय धर्मानुयायी, नवधर्मानुयायी, धर्मविहीन एवं नास्तिक आदि वर्गों में गिने गये लोगों को उस क्षेत्र अथवा देश के मूल स्वदेशी धर्म का भाग माना है। दूसरी ओर, विश्व के ईसाई भागों में धर्मविहीन अथवा नास्तिक आदि गिने गये लोगों को ईसाई ही माना है। वे वास्तव में वहाँ की मुख्य ईसाई धारा के अंग ही हैं चाहे उन्होंने चर्च में नियमित जाना बंद कर दिया हो अथवा मार्क्सवादी एवं आधुनिकतावादी विचारधाराओं के प्रभाव में अपने को ईसाई कहने से झिझकते हों।

विश्वकोष के धर्मानुसार वर्गीकरण में जो उपर्युक्त परिवर्तन हमने किये हैं वे भारतवर्ष सम्बन्धी विश्लेषण में समस्त भारतीय धर्मावलम्बियों को एक ही वर्ग में गिनने के समान ही हैं। इस वर्गीकरण से विश्व के विभिन्न क्षेत्रों एवं देशों के स्थानीय स्वदेशी धर्मानुयायियों के अनुपात में हो रहे ह्रास और ईसाई एवं इस्लाम धर्म के प्रसार का स्पष्ट अनुमान होता है। प्रसंगवश, दक्षिण एशिया के बाहर के बौद्धों की गणना हमने भारतीय धर्मावलम्बियों में नहीं की, भारतवर्ष से बाहर भारतीय धर्मावलम्बी वर्ग में केवल हिन्दु, सिख एवं जैन जोड़े गये हैं। ईसाई विश्वकोष के आँकड़ों को अपने इस संशोधित वर्गीकरण के आधार पर सज्जित कर नीचे हमने विश्व के विभिन्न महाद्वीपों और वहाँ के कतिपय देशों की जनसंख्या में बीसवीं शताब्दी के मध्य हुए परिवर्तन का चित्र प्रस्तुत करने का प्रयास किया है।

एशिया

एशिया विश्व का सर्वाधिक जनाकीर्ण महाद्वीप है। 1990 में एशिया की जनसंख्या 3 अरब से अधिक थी। तालिका-10 में एशिया की जनसंख्या के धर्मानुसार स्वरूप का संक्षिप्त संकलन किया गया है।

एशिया महाद्वीप में बीसवीं शताब्दी में इस्लाम एवं ईसाई धर्म का पर्याप्त प्रसार हुआ है, परन्तु यह प्रसार इतना नहीं कि महाद्वीप का धार्मिक स्वरूप पूर्णतः परिवर्तित हुआ हो। यहाँ की जनसंख्या में ईसाइयों का अनुपात 2.02% से बढ़कर 4.84% हुआ है। यदि हम विश्वकोश के गुप्त ईसाइयों की गणना भी ईसाइयों में करें तो उनका अनुपात 8% प्रतिशत दिखता है, जो निश्चय ही बड़ा परिवर्तन है। मुसलमानों का अनुपात प्रायः 5 प्रतिशत अंक बढ़ा है। 1900 में वे जनसंख्या का 16.32% थे, 1990 में 21.25% हैं। यदि हम मुसलमानों के मूलक्षेत्र पश्चिम एवं मध्य एशिया में धर्मविहीन एवं नास्तिक वर्गों में गिने गये लोगों को मुसलमानों में सम्मिलित कर लें तो उनका 1990 का अनुपात प्रायः एक प्रतिशत अंक और बढ़ जाता है।

तालिका 10: एशिया की धर्मानुसार जनसांख्यिकी, 1900-1990

	1900	1970	1990
कुल जनसंख्या	955,415	2,145,226	3,177,725
ईसाई	19,285	82,555	153,733
	(2.02)	(3.85)	(4.84)
मुसलमान	155,923	390,767	675,304
	(16.32)	(18.22)	(21.25)
मूल स्वदेशी धर्मानुयायी एवं अन्य	780,207	1,671,904	2,348,688
	(81.66)	(77.94)	(73.91)
जिनमें से –			
भारतीय धर्मावलम्बी	217,654	513,418	771,026
	(22.78)	(23.93)	(24.26)
दक्षिणपूर्व एशियाई	54,942	175,500	240,620
	(5.75)	(8.18)	(7.57)
पूर्व एशियाई	506,398	955,483	1,307,325
	(53.00)	(44.54)	(41.14)
अन्य	1,213	27,503	29,717
(मुख्यतः मुसलमान और यहूदी)	(0.13)	(1.29)	(0.94)
यहूदी	411	2,419	3,297
	(0.04)	(0.11)	(0.10)

टिप्पणी: जनसंख्या सहस्रों में है, कोष्ठकों में दिये गये आँकड़े कुल जनसंख्या का प्रतिशत हैं। स्रोत: देखें, मूल पुस्तक की तालिका 8.6।

ईसाइयों एवं मुसलमानों की संख्या में हुई वृद्धि महाद्वीप के कुछ गिनेचुने देशों में केन्द्रित है। एशिया के 15.4 करोड़ ईसाइयों में से प्रायः 5.5 करोड़ फिलिपीन्स में हैं। शताब्दी के प्रारम्भ में भी फिलिपीन्स में ईसाइयों

का अनुपात बहुत उँचा था। तब एशिया महाद्वीप का यह एकमात्र देश था जहाँ ईसाइयों की उपस्थिति उल्लेखनीय थी। महाद्वीप के शेष प्रायः 10 करोड़ ईसाइयों में से 2.2 करोड़ भारतवर्ष में हैं, वे प्रायः सब भारतीयसंघ में ही हैं। प्रायः 1.8 करोड़ एशियाई ईसाई इंडोनेशिया में हैं और 1.7 करोड़ दक्षिण कोरिया में। दक्षिण कोरिया, इंडोनेशिया और भारतीयसंघ बीसवीं शताब्दी में एशिया में ईसाई धर्मप्रसार के प्रयासों की सफलता के प्रमुख उदाहरण हैं। दक्षिण कोरिया की तो प्रायः 40% जनसंख्या ईसाई हो गयी है। यह परिवर्तन बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में ही हुआ है। म्यांमार, ताइवान, मलेशिया, थाइलैंड एवं कदाचित् जापान में भी कुछ सीमा तक ईसाई धर्म का प्रसार हुआ है और वहाँ की जनसंख्या में उनका अनुपात कुछ बढ़ा है।

एशिया के प्रायः 67.5 करोड़ मुसलमानों में से 25 करोड़ पश्चिम एवं मध्य एशिया के मूल मुस्लिम क्षेत्रों में हैं। शेष में से प्रायः 32.5 करोड़ भारतवर्ष में हैं। भारतवर्ष के तीन घटक देशों भारतसंघ, बांग्लादेश और पाकिस्तान में से प्रत्येक में मोटे अनुमान से प्रायः दस-दस करोड़ मुसलमान हैं। प्रायः 10 करोड़ मुसलमान इंडोनेशिया में हैं। भारतवर्ष और इंडोनेशिया ही एशिया के दो ऐसे क्षेत्र हैं जहाँ बीसवीं शताब्दी के मध्य मुसलमानों के अनुपात में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। भारतवर्ष में इस अवधि में उनकी उपस्थिति में लगभग 8 प्रतिशत अंकों की वृद्धि हुई है, उनका अनुपात 22% से बढ़कर 30% हुआ है। इंडोनेशिया में वे 40% से बढ़कर 55% हो गये हैं।

एशिया में 33 लाख यहूदी भी हैं। इनमें से 31.6 लाख पश्चिम एशिया के मुख्यतः इज़रायल एवं फिलिस्तीन देशों में हैं। इज़रायल की स्थापना होने के कारण बीसवीं शताब्दी में पश्चिम एशिया में यहूदियों का अनुपात दोगुना हो गया है।

एशिया महाद्वीप की जनसंख्या में भारतीय धर्मावलम्बियों एवं दक्षिणपूर्वी एशियाई धर्मों के अनुयायियों का अनुपात बीसवीं शताब्दी में किञ्चित् बढ़ा है। यह मुख्यतः इसलिये हुआ क्योंकि एशिया के दूसरे बड़े भाग पूर्वी एशिया की जनसंख्या में अपेक्षाकृत अल्प वृद्धि हुई है। परन्तु पूर्वी एशिया के प्रमुख देश चीन में इस्लाम अथवा ईसाई धर्म का प्रसार तो नहीं हो पाया। चीन में 1990 में मुसलमानों की कुल संख्या उनकी 1900 की कुल संख्या से न्यून है और जनसंख्या में ईसाइयों का अनुपात 1900 के 0.4% से घटकर 0.2% रह गया है।

अफ्रीका

एशिया के विपरीत अफ्रीका महाद्वीप की जनसंख्या का स्वरूप बीसवीं शताब्दी के मध्य पूर्णतः परिवर्तित हो गया है। महाद्वीप के मूल स्वदेशी धर्मों के अनुयायियों का बड़े स्तर पर इस्लाम एवं ईसाई धर्म में धर्मान्तरण हुआ है। शताब्दी के प्रारम्भ में उत्तर अफ्रीका महाद्वीप का एकमात्र मुस्लिम बहुसंख्यक क्षेत्र था।

अफ्रीका का यह भाग अरब क्षेत्र है। अन्य सब क्षेत्रों में अफ्रीका के मूल स्वदेशी धर्मों के अनुयायियों का वर्चस्व था। 1990 में उत्तर अफ्रीका की जनसंख्या में प्रायः 87% मुस्लिम हैं। दक्षिण तथा मध्य अफ्रीका में ईसाई धर्म का प्रायः सम्पूर्ण वर्चस्व हो गया है। पूर्वी अफ्रीका की दो तिहाई जनसंख्या ईसाई धर्म में परिवर्तित हो गयी है। पश्चिम अफ्रीका की जनसंख्या ईसाई धर्म एवं इस्लाम में प्रायः समान विभाजित हुई दिखती है। तालिका-11 में अफ्रीकी उपमहाद्वीप के परिवर्तित हो रहे धार्मिक स्वरूप सम्बन्धी संक्षिप्त आँकड़े संकलित किये गये हैं।

तालिका 11: अफ्रीका की धर्मानुसार जनसांख्यिकी, 1900-1990

	1900	1970	1990
कुल जनसंख्या	107,080	353,886	609,662
ईसाई	8,548	137,768	268,145
	(7.98)	(38.93)	(43.98)
मुसलमान	34,186	141,255	247,569
	(31.93)	(39.92)	(40.61)
अन्य (मूल स्वदेशी	64,346	74,863	93,948
धर्मों के अनुयायी)	(60.09)	(21.15)	(15.41)

टिप्पणी: जनसंख्या सहस्रों में है, कोष्ठकों में दिये गये आंकड़े कुल जनसंख्या का प्रतिशत हैं। स्रोत: मूल पुस्तक की तालिका 8.12 देखें।

अफ्रीका की कुल जनसंख्या एशिया एवं विश्व की जनसंख्या की अपेक्षा कहीं तीव्र गति से बढ़ी है। विशेषतः 1970 से 1990 के मध्य वहाँ जनसंख्या में वृद्धि की गति अत्यन्त ऊँची रही है। 1900 से 1970 के मध्य महाद्वीप की जनसंख्या 3.3 गुणा हो गयी और 1970 से 1990 के दो दशकों में इसमें पुनः 1.7 गुणा की वृद्धि हुई।

1990 में महाद्वीप की जनसंख्या 61 करोड़ के आसपास है। इसमें प्रायः 27 करोड़ ईसाई हैं और 25 करोड़ मुसलमान। महाद्वीप के मूल स्वदेशी धर्मों के अनुयायियों का अनुपात बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ के 60% से घटकर मात्र 15% रह गया है। महाद्वीप की शेष 85% जनसंख्या ईसाइयों तथा मुसलमानों में प्रायः समान विभाजित है, 1990 में वहाँ 44% ईसाई और 41% मुसलमान हैं।

यूरोप

यूरोप एक ईसाई महाद्वीप है। 1990 में वहाँ की जनसंख्या में प्रायः 95% ईसाई हैं। तालिका-12 में यूरोप की जनसंख्या के धार्मिक स्वरूप सम्बन्धी संक्षिप्त आँकड़े संकलित किये गये हैं।

तालिका के आँकड़ों से स्पष्ट है कि बीसवीं शताब्दी के मध्य यूरोप एक ईसाई महाद्वीप ही बना रहा है। विश्व का कोई अन्य धर्म यहाँ पाँव नहीं जमा सका। आँकड़ों से ऐसा अवश्य प्रतीत होता है कि ईसाइयों के अनुपात में वहाँ उल्लेखनीय ह्रास हुआ है। परन्तु यह ह्रास इसलिये दिखाई देता है क्योंकि 1970 एवं 1990 में बड़ी संख्या में लोग धर्मविहीन, नास्तिक एवं नवधर्मानुयायी जैसे वर्गों में गिने गये। 1970 में जनसंख्या का एक बड़ा भाग प्रच्छन्न ईसाइयों में भी गिना गया। इस वर्गीकरण से ऐसा नहीं लगता कि यूरोप के लोग ईसाई धर्म को छोड़कर किसी अन्य में धर्मान्तरित हुए हैं।

तालिका 12: यूरोप की धर्मानुसार जनसांख्यिकी, 1900-1990

	1900	1970	1990
कुल जनसंख्या	401,889	655,271	720,794
ईसाई	379,931	455,876	548,111
	(94.54)	(69.57)	(76.04)
प्रच्छन्न ईसाई	-	35,683	965
	-	(5.45)	(0.13)
धर्मविहीन	1,747	139,779	135,152
एवं नास्तिक	(0.43)	(21.33)	(18.75)
मुसलमान	9,236	17,620	29,198
	(2.30)	(2.69)	(4.05)
यहूदी	9,925	4,282	2,654
	(2.47)	(0.65)	(0.37)
अन्य	1,050	2,031	4,714
	(0.26)	(0.31)	(0.65)

टिप्पणी: जनसंख्या सहस्रों में है, कोष्ठकों में दिये गये आँकड़े कुल जनसंख्या का प्रतिशत हैं। स्रोत: देखें, मूल पुस्तक की तालिका 8.17।

धर्मविहीन, नास्तिक, प्रच्छन्न ईसाई आदि वर्गों में गिने गये लोगों की बहुसंख्या पूर्वी यूरोप के साम्यवादी अथवा कभी साम्यवादी रहे देशों में थी। 1970 में गिने गये प्रच्छन्न ईसाई तो प्रायः सब पूर्वी यूरोप में थे। 1990 में यूरोप में इस वर्ग में गिने जाने वाले लोगों की संख्या नगण्य थी, वे कदाचित् अपने मूल ईसाई धर्म में लौट गये थे। 1990 में 13.5 करोड़ लोग धर्मविहीन, नास्तिक एवं नवधर्मानुयायी वर्गों में गिने गये हैं। इनमें से 7.7 करोड़ पूर्वी यूरोप में हैं। 1970 एवं 1990 के दो दशकों में पूर्वी यूरोप में इन वर्गों की गिनती में तीव्र ह्रास हुआ दिखता है। 1970 में पूर्वी यूरोप की जनसंख्या का 37% भाग इन वर्गों में गिना गया था, 1990 में यह अनुपात 25% रह गया है।

पूर्वी यूरोप के अतिरिक्त यूरोप के अन्य भागों में भी अनेक लोग आधुनिकतावादी विचारधाराओं के प्रभाव में अपने को धर्मविहीन अथवा नास्तिक कहने लगे हैं। 1990 में दक्षिणी यूरोप के 1.6 करोड़ लोग, पश्चिमी यूरोप के 3 करोड़ लोग और उत्तरी यूरोप के 1.3 करोड़ लोग नास्तिक अथवा धर्मविहीन गिने गये हैं। परन्तु यह मात्र नाम परिवर्तन जैसा है। इन वर्गों में गिने गये लोग यूरोप की ईसाई मुख्य धारा से पृथक् नहीं हैं। उन्हें धर्मविहीन अथवा नास्तिक कहने से 'चर्च न जाने वाले ईसाई' कहना कहीं अधिक उपयुक्त होगा।

धर्मविहीन, नास्तिक, नवधर्मानुयायी एवं प्रच्छन्न ईसाई आदि वर्गों में गिने गये लोगों को ईसाइयों के साथ गिना जाये तो सम्पूर्ण बीसवीं शताब्दी में यूरोप की जनसंख्या में ईसाइयों का अनुपात प्रायः 95% पर स्थिर रहा दिखता है। 1990 में यूरोप की 72 करोड़ की जनसंख्या में 68.4 करोड़ ईसाई धर्म पर आधारित वहाँ की मुख्य धारा से सम्बन्धित हैं।

1990 में यूरोप में प्रायः 3 करोड़ मुसलमान हैं। यूरोप की जनसंख्या में उनका अनुपात 1900 के 2.3% से बढ़ कर 4% हुआ है। यह वृद्धि अधिकतर 1970 एवं 1990 के मध्य ही हुई है। 1970 में जनसंख्या में उनका अनुपात 2.7% था।

यूरोप के मुसलमानों में से प्रायः आधे पूर्वी यूरोप के मुख्यतः रूसी संघ, यूक्रेन तथा बल्गारिया देशों में हैं। इस क्षेत्र में दीर्घ काल से मुसलमानों की उल्लेखनीय उपस्थिति रही है। पूर्वी यूरोप की जनसंख्या में उनका अनुपात पूरी बीसवीं शताब्दी के मध्य 4.5% के आसपास रहा है। 1990 में यहाँ 1.4 करोड़ मुसलमान हैं।

दक्षिणी यूरोप में प्रायः 60 लाख मुसलमान हैं, इनमें से अधिकतर पूर्व के यूगोस्लाविया गणराज्य को विभाजित कर बने विभिन्न बाल्कन देशों और अल्बानिया में हैं। प्रायः 6 लाख मुसलमान दक्षिणी यूरोप के इटली देश में भी हैं। इटली की जनसंख्या में उनका अनुपात 1% के आसपास है। इतिहास में किसी समय इस्लामी शासन के अधीन रहे स्पेन एवं पुर्तगाल में मुसलमान नगण्य हैं।

पश्चिमी यूरोप में 80 लाख मुसलमान हैं। इनमें से प्रायः 70 लाख फ्रांस एवं जर्मनी में हैं। फ्रांस की जनसंख्या में मुसलमानों का अनुपात 7% और जर्मनी में 4% के आसपास पहुँच गया है। नीदरलैंड्स में 4%, बेल्जियम में 3% और स्विट्ज़रलैंड में 2.5% के आसपास मुसलमान हैं।

यूरोप के शेष प्रायः 13 लाख मुसलमान उत्तरी यूरोप में हैं। इनमें से अधिकतर इंग्लैंड और स्वीडन में हैं। डेनमार्क एवं नार्वे में भी मुसलमानों की संख्या में पर्याप्त वृद्धि हुई है।

1970 एवं 1990 के मध्य यूरोप के अनेक देशों में मुसलमानों के अनुपात में हुई तीव्र वृद्धि के कारण वहाँ की धर्मानुसार जनसांख्यिकी निश्चय ही परिवर्तित हुई है। इन मात्र दो दशकों में यूरोप की कुल जनसंख्या में मुसलमानों का अनुपात 2.5 से बढ़ कर 4% हुआ है। फ्रांस, जर्मनी एवं नीदरलैंड्स जैसे देशों

में उनकी संख्या में तीव्र वृद्धि हुई है और इंग्लैंड, इटली, स्वीडन, डेनमार्क एवं नार्वे में उनकी उपस्थिति उल्लेखनीय हो गयी है। यह प्रक्रिया अभी थमती प्रतीत नहीं होती। अनेक यूरोपीय देशों में मुसलमानों की उपस्थिति बढ़ती ही जा रही है।

यूरोप की धार्मिक जनसांख्यिकी में दूसरा प्रमुख परिवर्तन वहाँ यहूदियों की उपस्थिति में आया तीव्र ह्रास है। 1900 में यूरोप में 1 करोड़ के आसपास यहूदी थे, जनसंख्या में उनका अनुपात 2.5% था। 1970 में वहाँ यहूदियों की संख्या 43 लाख रह गयी और 1990 में वे मात्र 27 लाख हैं। अब यूरोप की जनसंख्या में उनका भाग प्रायः नगण्य 0.4% बैठता है।

सन् 1900 ईसवी में यूरोप में जो 1 करोड़ यहूदी थे उनमें से 87 लाख पूर्वी यूरोप में थे। वहाँ वे मुख्यतः आज के रूसी संघ, यूक्रेन और पोलैंड देशों में थे। शेष में से प्रायः 5 लाख यहूदी जर्मनी में थे। 1990 में रूसी संघ एवं यूक्रेन में 13 लाख यहूदी हैं, पोलैंड एवं जर्मनी में उनकी संख्या नहीं के समान है, पूर्वी यूरोप के हंगरी एवं मोल्दाविया देशों में प्रायः 1 लाख यहूदी हैं। यूरोप के शेष लगभग 10 लाख यहूदी फ्रांस एवं इंग्लैंड में हैं।

उत्तरी अमरीका

उत्तरी अमरीका में मुख्यतः यूरोपीय मूल के लोग बसे हैं और यूरोप की ईसाई मुख्य धारा को वे अपने साथ इस महाद्वीप में लाये हैं। महाद्वीप में ईसाइयों का वर्चस्व है। यूरोप की भान्ति यहाँ भी बड़ी संख्या में लोग अपने को धर्मविहीन अथवा नास्तिक कहने लगे हैं। इस कारण आँकड़ों में ईसाई वर्चस्व कुछ क्षीण होता दिखायी देता है। तालिका-13 में महाद्वीप की धर्मानुसार जनसांख्यिकी सम्बन्धी संक्षिप्त आँकड़े संकलित किये गये हैं।

महाद्वीप की जनसंख्या में ईसाइयों का अनुपात 1900 के 97% से घटकर 1990 में 85% हुआ प्रतीत होता है। इस परिवर्तन का मुख्य कारण धर्मविहीन एवं नास्तिक वर्गों में गिने गये लोगों की संख्या में वृद्धि है। विशेषतः 1970 एवं 1990 के दो दशकों में बड़ी संख्या में लोग अपने को इन वर्गों में गिनवाने लगे हैं। 1990 में महाद्वीप की प्रायः 28 करोड़ की जनसंख्या में से 24 करोड़ ईसाई और 2.6 करोड़ धर्मविहीन अथवा नास्तिक गिने गये हैं। धर्मविहीन एवं नास्तिक वर्गों में गिने गये लोगों को ईसाई मुख्यधारा का भाग मानें तो 1990 की जनसंख्या में ईसाइयों का अनुपात प्रायः 95% है।

उत्तर-अमरीकी महाद्वीप में 1990 में लगभग 60 लाख यहूदी हैं। इनकी संख्या 1900 में 15 लाख थी, 1970 में यहाँ 70 लाख यहूदी गिने गये थे। तब से उनकी संख्या कुछ कम हुई है। तथापि इस महाद्वीप में

इज़रायल की अपेक्षा दोगुने यहूदी हैं। महाद्वीप की जनसंख्या में उनका अनुपात 2% के आसपास है। 1900 में यह अनुपात प्रायः इतना ही था, परन्तु 1970 में वे जनसंख्या का 3% हुआ करते थे।

तालिका 13: उत्तरी अमेरिका की धर्मानुसार जनसांख्यिकी, 1900-1990

	1900	1970	1990
कुल जनसंख्या	81,587	231,435	281,867
ईसाई	78,774	211,317	240,343
	(96.55)	(91.31)	(85.27)
धर्मविहीन	1,012	11,110	25,920
एवं नास्तिक	(1.24)	(4.80)	(9.20)
मुसलमान	10	842	3,810
	(0.01)	(0.36)	(1.35)
यहूदी	1,516	6,994	5,885
	(1.86)	(3.02)	(2.09)
अन्य	275	1,172	5,909
	(0.34)	(0.51)	(2.10)

टिप्पणी: जनसंख्या सहस्रों में है, कोष्ठकों में दिये गये आँकड़े कुल जनसंख्या का प्रतिशत हैं।
स्रोत: मूल पुस्तक की तालिका 8.18 देखें।

उत्तरी अमरीका में 38 लाख मुसलमान हैं। वे अब जनसंख्या का प्रायः 1.35% हैं। 1970 से 1990 के मध्य मुसलमानों की उपस्थिति में तीव्र वृद्धि हुई है।

लातीनी अमरीका

लातीनी अमरीका में भी मुख्यतः यूरोपीय मूल के लोग ही बसे हैं, यद्यपि आज वहाँ की जनसंख्या में मिश्रित मूल के लोगों का पर्याप्त भाग है। महाद्वीप की धर्मानुसार जनसांख्यिकी सम्बन्धी आँकड़े तालिका-14 में दिये गये हैं।

लातीनी अमरीका में ईसाइयों का वर्चस्व यूरोप एवं उत्तरी अमरीका से भी अधिक है। यूरोप एवं उत्तरी अमरीका में बड़ी संख्या में लोग धर्मविहीन एवं नास्तिक कहलाने लगे हैं। लातीनी अमरीका के लोगों की धार्मिक आस्था अधिक स्थिर प्रतीत होती है। महाद्वीप की प्रायः 44 करोड़ की जनसंख्या में केवल 1.5 करोड़ लोग धर्मविहीन, नवधर्मानुयायी अथवा नास्तिक गिने गये हैं। इस प्रकार गिने गये व्यक्तियों का अनुपात क्यूबा, चीले और उरुगुए में ही उल्लेखनीय दिखता है। महाद्वीप के अन्य सभी

देशों में इनका अनुपात 5% से भी कम है। अधिकतर देशों में धर्मविहीन, नवधर्मानुयायी एवं नास्तिक आदि वर्गों में गिने गये लोगों का कुल अनुपात 2-3% ही बैठता है।

तालिका 14: लातीनी अमरीका की धर्मानुसार जनसांख्यिकी, 1900-1990

	1900	1970	1990
कुल जनसंख्या	63,993	282,411	437,565
ईसाई	60,906	266,559	405,875
	(95.18)	(94.39)	(92.76)
प्रच्छन्न ईसाई	-	498	900
	-	(0.18)	(0.21)
धर्मविहीन	382	7,254	15,451
एवं नास्तिक	(0.60)	(2.57)	(3.53)
मुसलमान	47	406	1,305
	(0.07)	(0.14)	(0.30)
यहूदी	23	790	1,053
	(0.04)	(0.28)	(0.24)
स्पिरिटिस्ट	253	4,537	9,861
	(0.40)	(1.61)	(2.25)
अन्य	2,382	2,368	3,120
	(3.72)	(0.84)	(0.71)

टिप्पणी: जनसंख्या सहस्रों में है, कोष्ठकों में दिये गये आँकड़े कुल जनसंख्या का प्रतिशत हैं। स्रोत: देखें, मूल पुस्तक की तालिका 8.22।

लातीनी अमरीका में 93% ईसाई हैं। ऊपर गिनाये गये कुछ देशों को छोड़कर प्रायः समस्त देशों में उनका इतना अथवा इससे अधिक अनुपात है। यदि प्रच्छन्न ईसाई, धर्मविहीन, नास्तिक एवं नवधर्मानुयायी आदि वर्गों में गिने गये लोगों को भी ईसाई मुख्यधारा का अंग मान लें तो वहाँ ईसाइयों का अनुपात 96.5% बैठता है।

महाद्वीप में प्रायः 1 करोड़ लोग स्पिरिटिस्ट गिने गये हैं, इनमें से 27 लाख कैरेबियन देशों में हैं और 72 लाख दक्षिणी अमरीका में हैं। मुख्यतः वे कैरेबियन के क्यूबा देश और दक्षिणी अमरीका के ब्राजील में हैं।

महाद्वीप में प्रायः 13 लाख मुसलमान हैं। 1970 से 1990 के मध्य उनकी संख्या तिगुनी हो गई है। अब वे जनसंख्या का 0.3% भाग हैं। महाद्वीप के मुसलमानों में से प्रायः आधे अर्जेंटीना में हैं।

लातीनी अमरीका में प्रायः 10 लाख यहूदी भी हैं, इनमें से 8 लाख ब्राज़ील और अर्जेंटीना में हैं। 1970 से 1990 के मध्य महाद्वीप में यहूदियों की संख्या प्रायः दोगुनी हुई है।

ओशिएनिया

ऑस्ट्रेलिया, फिजी, न्यूज़ीलैंड, पपुआ न्यूगिनी एवं कुछ अन्य छोटे देशों को मिलाकर बने ओशिएनिया में जनसंख्या विरल है। तालिका-15 में ओशिएनिया की धर्मानुसार जनसांख्यिकी सम्बन्धी संक्षिप्त आँकड़े दिये गये हैं।

तालिका 15: ओशिएनिया की धर्मानुसार जनसांख्यिकी, 1900-1990

	1900	1970	1990
कुल जनसंख्या	5,825	18,187	24,643
ईसाई	4,591	16,778	20,365
	(78.82)	(92.25)	(82.64)
धर्मविहीन	44	866	3,160
एवं नास्तिक	(0.75)	(4.76)	(12.82)
मूल स्वदेशी धर्मों	1,128	128	188
के अनुयायी	(19.36)	(0.70)	(0.76)
अन्य	62	415	930
	(1.06)	(2.28)	(3.77)

टिप्पणी: जनसंख्या सहस्रों में है, कोष्ठकों में दिये गये आँकड़े कुल जनसंख्या का प्रतिशत हैं।
स्रोत: मूल पुस्तक की तालिका 8.23 देखें।

बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में यहाँ की जनसंख्या में 80% ईसाई थे और प्रायः 20% वहाँ के मूल धर्मों के अनुयायी थे। शताब्दी के अन्त तक आते-आते वहाँ के मूल धर्मों के अनुयायियों का अनुपात 1% से भी न्यून हो गया है। उनकी कुल संख्या 1900 में 11 लाख थी, अब वे 2 लाख भी नहीं हैं। मूल स्वदेशी धर्मों के जो थोड़े-बहुत अनुयायी इस महाद्वीप में शेष हैं उनका बड़ा भाग पपुआ न्यूगिनी में हैं। इस देश की जनसंख्या में उनका अनुपात 3.7% है। ओशिएनिया के मूल धर्मानुयायियों का प्रायः समूल विनाश होना इस महाद्वीप की धर्मानुसार जनसांख्यिकी में बीसवीं शताब्दी में हुए परिवर्तनों में प्रमुख है।

विश्व की धर्मानुसार जनसांख्यिकी

विभिन्न महाद्वीपों की धर्मानुसार जनसांख्यिकी का अध्ययन करने के पश्चात् अब तालिका-16 में पूरे विश्व के आँकड़ों का संकलन किया गया है। इस तालिका में भारतवर्ष, पूर्वी एशिया एवं दक्षिणपूर्वी एशिया के बौद्धों की गणना सम्बन्धित क्षेत्रों की मुख्य धार्मिक धारा के अनुयायियों में की गयी है। यूरोप, उत्तरी अमरीका,

लातीनी अमरीका एवं ओशिएनिया में क्रिप्टो-क्रिस्चियन, नवधर्मानुयायी, धर्मविहीन एवं नास्तिक वर्गों में गिने गये लोगों को इन क्षेत्रों की ईसाई मूलधारा के अनुयायियों के साथ ही गिना गया है।

तालिका 16: विश्व की धर्मानुसार जनसांख्यिकी, 1900-1990

	1900	1970	1990
कुल जनसंख्या	1,615,789	3,686,416	5,252,256
ईसाई	527,387	1,145,720	1,396,242
(यूरोप, अमेरिका			
और ओशिएनिया में स्थित)	(32.64)	(31.08)	(26.59)
ईसाई	27,833	220,323	421,878
(एशिया और अफ्रीका में स्थित)	(1.72)	(5.98)	(8.03)
ईसाई (कुल)	555,220	1,366,043	1,818,120
	(34.36)	(37.07)	(34.62)
मुसलमान	200,204	575,974	983,606
	(12.39)	(15.62)	(18.73)
मूल स्वदेशी धर्मों के अनुयायी	217,654	513,418	771,026
(भारतीय)	(13.47)	(13.93)	(14.68)
मूल स्वदेशी धर्मों के अनुयायी	506,398	955,483	1,307,325
(पूर्व एशियाई)	(31.34)	(25.92)	(24.89)
मूल स्वदेशी धर्मों के अनुयायी	54,942	175,500	240,620
(दक्षिण पूर्व एशियाई)	(3.40)	(4.76)	(4.58)
मूल स्वदेशी धर्मों के अनुयायी	64,346	74,863	93,948
(अफ्रीकी)	(3.98)	(2.03)	(1.79)
यहूदी	11,875	14,485	12,889
	(0.73)	(0.39)	(0.25)
अन्य	5,150	10,651	24,722
	(0.32)	(0.29)	(0.47)

टिप्पणी: जनसंख्या सहस्रों में है, कोष्ठकों में दिये गये आँकड़े कुल जनसंख्या का प्रतिशत हैं। इस तालिका में दी गयी 1990 की कुल जनसंख्या विश्व की कुल जनसंख्या से 140 लाख अल्प है क्योंकि 7 लाख से न्यून जनसंख्या वाले देशों को हमने अपने संकलन में नहीं गिना है। स्रोत: मूल पुस्तक की तालिका 8.24 देखें।

तालिका में दर्शाये गये 'अन्य' वर्ग में यूरोप, उत्तरी अमरीका, लातीनी अमरीका एवं ओशिएनिया के स्थानीय स्वदेशी धर्मों के अनुयायी, उन क्षेत्रों में बसे भारतीय धर्मानुयायी, चीनी धर्मानुयायी एवं बौद्ध,

लातीनी अमरीका के स्पिरिटिस्ट और विश्व के अन्य गौण धर्मों के अनुयायी सम्मिलित हैं। यह तालिका बीसवीं शताब्दी के मध्य विश्व के प्रमुख धर्मों की संख्या एवं अनुपात में हुई वृद्धि एवं ह्रास का स्पष्ट चित्र प्रस्तुत करती है।

ईसाई

बीसवीं शताब्दी के मध्य विश्व की जनसंख्या में ईसाइयों का अनुपात 34 प्रतिशत के आसपास पर स्थिर रहा है। विश्व के मूलतः ईसाई क्षेत्रों की जनसंख्या बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में अन्यों की अपेक्षा घटी है। फिर भी ईसाई धर्म के अनुयायियों के अनुपात में ह्रास नहीं हुआ। यह ईसाई धर्म के विश्व के ईसाई-इतर क्षेत्रों में और विशेषतः अफ्रीकी महाद्वीप एवं कुछ सीमा तक एशिया में गहरी पैठ जमा पाने के कारण सम्भव हुआ है। 1990 में विश्व में 1.8 अरब ईसाई हैं और इनमें से प्रायः एक चौथाई अफ्रीका एवं एशिया महाद्वीप में हैं। शताब्दी के प्रारम्भ में विश्व में प्रायः 56 करोड़ ईसाई थे और उनमें से 95% यूरोप, उत्तरी अमरीका, लातीनी अमरीका एवं ओशिएनिया में थे। यूरोप एवं यूरोपीय मूल के लोगों से आकीर्ण उनके उपनिवेश बने इन क्षेत्रों के बाहर विश्व के अन्य भागों में कुल 3 करोड़ से भी अल्प ईसाई थे। शताब्दी के अन्त पर 1990 में अफ्रीका और एशिया में 42 करोड़ से अधिक ईसाई हैं।

यूरोप एवं यूरोपीय मूल के लोगों से आकीर्ण महाद्वीपों से बाहर के 42 करोड़ ईसाइयों में से प्रायः 27 करोड़ अफ्रीका में हैं। अफ्रीका की कुल जनसंख्या में अब ईसाइयों का 44% भाग है। पूरे दक्षिणी अफ्रीका एवं मध्य अफ्रीका में और पूर्वी एवं पश्चिमी अफ्रीका के अधिकतर क्षेत्र में आज ईसाइयों का वर्चस्व है। 1990 में दक्षिणी एवं मध्य अफ्रीका की जनसंख्या में ईसाइयों का अनुपात 80% से अधिक है, पूर्वी अफ्रीका में वे प्रायः 62% हैं और पश्चिमी अफ्रीका में 34%।

एशिया में ईसाई धर्म का प्रसार अपेक्षाकृत सीमित रहा है। एशिया में 1990 में 15 करोड़ से कुछ अधिक ईसाई हैं, महाद्वीप की जनसंख्या में उनका अनुपात 5% से न्यून है। एशियाई ईसाइयों में से 5.5 करोड़ फिलिपीन्स में हैं। अमरीकी उपनिवेश रहे इस देश में बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में ही ईसाई धर्म का पर्याप्त प्रसार हो चुका था। फिलीपीन्स के अतिरिक्त एशिया में ईसाइयों की उल्लेखनीय संख्या भारत, इंडोनेशिया एवं दक्षिण कोरिया में है। इन तीन देशों में क्रमशः 2.2, 1.8 एवं 1.7 करोड़ ईसाई हैं। 1900 में इन तीनों देशों में ईसाईयों की उपस्थिति नगण्य थी। अब 1990 में इंडोनेशिया की जनसंख्या में उनका 10% भाग है और दक्षिण कोरिया में वे 40% के आसपास पहुँच गये हैं। भारत की जनसंख्या में उनका अनुपात प्रायः 2% है। यह अनुपात बहुत अधिक नहीं प्रतीत होता, परन्तु जैसा कि हम पहले देख चुके हैं भारतसंघ के

कुछ क्षेत्रों में उनका अनुपात बहुत ऊँचा है। उत्तरपूर्व के कई राज्यों में वे अब बहुसंख्यक हैं। एशिया महाद्वीप में ईसाई धर्म के सीमित प्रसार के परिप्रेक्ष्य में भारत में ईसाइयों की संख्या निश्चय ही तुच्छ नहीं है। एशिया में फिलिपीन्स के पश्चात् ईसाइयों की अधिकतम संख्या भारत में ही है। दक्षिणपूर्वी एशिया के कुछ अन्य देशों, विशेषतः म्यांमार, मलेशिया एवं ताइवान में भी बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में ईसाई धर्म का उल्लेखनीय प्रसार हुआ है।

मुसलमान

शताब्दी के प्रारम्भ में विश्व की जनसंख्या में 12.4% मुसलमान थे, 1990 में उनका अनुपात 18.7% है। मुसलमानों के वैश्विक अनुपात में हुई 6 से अधिक प्रतिशत अंकों की यह वृद्धि निश्चय ही उल्लेखनीय है।

पश्चिमी एवं मध्य एशिया और उत्तरी अफ्रीका मुसलमानों के मूलक्षेत्र हैं। बीसवीं शताब्दी में मध्य एशिया में मुसलमानों का अनुपात 95% के आसपास बना रहा है। पश्चिमी एशिया में 1900 में उनका अनुपात 76% था, 1990 में 86% हो गया है। इस क्षेत्र में ईसाइयों के अनुपात में तीव्र ह्रास हुआ है। उत्तरी अफ्रीका में मुसलमानों का भाग 82% से बढ़ कर 87% हुआ है। यहाँ ह्रास मूल स्वदेशी धर्मों के अनुयायियों का हुआ है। विश्व में 1990 में कुल 98 करोड़ मुसलमान हैं, इनमें से प्रायः 38 करोड़ उत्तरी अफ्रीका, पश्चिमी एशिया एवं मध्य एशिया के इस क्षेत्र में हैं।

इस विशाल संलग्न क्षेत्र के पश्चात् विश्व में मुसलमानों की सर्वाधिक संख्या भारतवर्ष में है। यहाँ कुल 33 करोड़ मुसलमान हैं और वे भारतवर्ष के तीन घटक देशों भारतसंघ, बांग्लादेश एवं पाकिस्तान में प्रायः समान विभाजित हैं। विश्व के मुसलमानों का एक तिहाई आज अविभाजित भारतवर्ष वाले क्षेत्र में हैं। हम पहले देख चुके हैं कि 1901 से 1991 के मध्य इस क्षेत्र में मुसलमानों का अनुपात प्रायः 8 प्रतिशत अंकों से बढ़कर 30% के आसपास हो गया है।

इंडोनेशिया में प्रायः 10 करोड़ मुसलमान हैं। यहाँ बीसवीं शताब्दी में इनके अनुपात में 15 प्रतिशत अंको की वृद्धि हुई है, अब वे जनसंख्या का 55% हैं। दक्षिणपूर्वी एशिया के अन्य देशों में 2 करोड़ के आसपास मुसलमान हैं, इनमें से अधिकांश मलेशिया एवं फिलीपीन्स में हैं। मलेशिया की जनसंख्या का प्रायः आधा भाग मुसलमानों का है। फिलीपीन्स में उनका अनुपात 1970 के 4% से बढ़कर 1990 में 6% से अधिक हो गया है।

उत्तरी अफ्रीका को छोड़कर अफ्रीका के अन्य भागों में 12.5 करोड़ मुसलमान हैं। पश्चिमी अफ्रीका में उनका अनुपात शताब्दी के प्रारम्भ के 25% से बढ़ कर प्रायः 50% हुआ है और पूर्वी अफ्रीका में 12% से बढ़ कर 20% तक पहुँचा है।

यूरोप में 1990 में 3 करोड़ मुसलमान हैं। यहाँ की जनसंख्या में उनका अनुपात बीसवीं शताब्दी के मध्य प्रायः दोगुना होकर 4% हो गया है। यूरोप के मुसलमानों में से 2 करोड़ पूर्वी एवं दक्षिणी यूरोप के उन देशों में हैं जहाँ दीर्घ काल से मुसलमानों की उल्लेखनीय उपस्थिति रही है। बीसवीं शताब्दी में पश्चिमी एवं उत्तरी यूरोप में और विशेषतः वहाँ के फ्रांस एवं जर्मनी देशों में मुसलमानों की संख्या में तीव्र वृद्धि हुई है। इन क्षेत्रों में 1990 में 70 लाख के आसपास मुसलमान हैं।

विश्व के शेष प्रायः 2.5 करोड़ मुसलमानों में से 1.8 करोड़ लाख चीन में हैं। बीसवीं शताब्दी में मुसलमानों का अनुपात विश्व के समस्त भागों में बढ़ा है। अकेला चीन ही इसका अपवाद है। चीन में न केवल जनसंख्या में उनका अनुपात घटा है, वहाँ 1990 में उनकी कुल संख्या 1900 से न्यून है। इसके विपरीत अफ्रीका, इंडोनेशिया और भारतवर्ष में मुसलमानों की संख्या में बड़ी वृद्धि हुई है।

एशिया एवं अफ्रीका के मूल धर्मों के अनुयायी

भारत एवं दक्षिणपूर्वी एशियाई क्षेत्रों के मूल स्वदेशी धर्मों के अनुयायियों का विश्व की जनसंख्या में भाग किंचित् बढ़ा है। परन्तु विश्व में पूर्वएशियाई क्षेत्र के मूल धर्मों के अनुयायियों का भाग 1900 के 31% से घटकर 25% हुआ है, पूर्वी एशिया के देशों विशेषतः चीन की जनसंख्या भारतवर्ष एवं दक्षिणपूर्वी एशिया की अपेक्षा धीमी गति से बढ़ी है।

अफ्रीका की कुल जनसंख्या बीसवीं शताब्दी में तीव्रता से बढ़ी है। तथापि विश्व की जनसंख्या में अफ्रीका के मूल स्वदेशी धर्मों के अनुयायियों का भाग शताब्दी के प्रारम्भ के 4% से घटकर 2% से भी न्यून हो गया है। हम पहले कुछ विस्तारपूर्वक देख चुके हैं कि बीसवीं शताब्दी में अफ्रीका ईसाई धर्म और इस्लाम के प्रसार की प्रमुख विजयगाथा बना है। महाद्वीप की जनसंख्या में वहाँ के मूल स्वदेशी धर्मों के अनुयायियों का अनुपात 60% से घटकर 15% रह गया है। लगता है अफ्रीका के मूल स्वदेशी धर्म ईसाई धर्म एवं इस्लाम के प्रसार के समक्ष पराजित हो चुके हैं।

यहूदी

विश्व की जनसंख्या में यहूदियों का भाग भी बीसवीं शताब्दी में तीव्रता से घटा है। शताब्दी के प्रारम्भ में विश्व में कुल 119 लाख यहूदी थे, 1990 में उनकी कुल संख्या 129 लाख है। इस अवधि में यूरोप की जनसंख्या में उनका अनुपात 2.5% से घटकर 0.5% से भी अल्प रह गया है। आज विश्व के अधिकतर यहूदी उत्तरी अमरीका एवं इज़रायल में ही हैं।

निष्कर्ष

बीसवीं शताब्दी में विश्व की धर्मानुसार जनसंख्या में हुए बड़े परिवर्तनों के परिप्रेक्ष्य में भारत की परिस्थिति बहुत चिन्ताजनक नहीं प्रतीत होती। आधुनिकता के इस काल में ईसाई धर्म एवं इस्लाम दोनों का विश्व में उल्लेखनीय प्रचार-प्रसार हुआ है। पूरे अफ्रीकी महाद्वीप और एशिया के कुछ अपेक्षाकृत छोटे देशों में इन धर्मों का प्रभाव अत्यन्त गहन हुआ है। अफ्रीका के लोग अपने मूल स्वदेशी धर्मों से प्रायः पूर्णतः च्युत हुए दिखायी देते हैं। एशिया में इंडोनेशिया एवं दक्षिण कोरिया जैसे देशों की धर्मानुसार जनसांख्यिकी का रूप-परिवर्तन हो गया है। दूसरी ओर चीन जैसी प्राचीन सभ्यता ने बाह्य मूल के धर्मों को अपने यहाँ पाँव पसारने का कोई अवसर नहीं दिया, वहाँ के लोग अपने मूल धर्मों में स्थिर रहे हैं। पश्चिम एशिया, उत्तरी अफ्रीका एवं यूरोप में विश्व के अपेक्षाकृत नवीन परन्तु अत्यन्त सशक्त ईसाई एवं इस्लाम धर्मों का उदय हुआ, इन क्षेत्रों में भी चीन के समान ही किसी इतर धर्म का प्रचार-प्रसार सम्भव नहीं हो पाया।

भारतवर्ष अफ्रीका अथवा एशिया के दक्षिण कोरिया के समान अपने मूल स्वरूप से विचलित तो नहीं हुआ। परन्तु हम चीन एवं विश्व के अन्य वृहद् एवं महान् सभ्यताओं से सम्पन्न क्षेत्रों के समान अप्रभावित भी नहीं रहे। 1900 एवं 1990 के मध्य भारत की जनसंख्या में मुसलमानों का अनुपात 8 प्रतिशत अंकों से बढ़कर 30% के आसपास तक पहुँच गया है और ईसाइयों का अनुपात 1 प्रतिशत अंक से कुछ अधिक बढ़कर 2% हो गया है। इससे भी अधिक महत्त्वपूर्ण यह है कि मुसलमानों के अनुपात में वृद्धि कुछ परिसीमित क्षेत्रों में केन्द्रित रही है। परिसीमित क्षेत्रों में हुई यह सघन वृद्धि बीसवीं शताब्दी के मध्य में देश के विभाजन का कारण बनी। भारतवर्ष के अतिरिक्त विश्व के कतिपय अन्य देशों को ही आधुनिक काल में ऐसा धर्म-आधारित विभाजन झेलना पड़ा है। ऐसे अधिकतर देश अफ्रीका में हैं और अब इंडोनेशिया भी इन में जुड़ गया है। विभाजन के उपरान्त शेष भारतसंघ में भी एक लम्बी सीमावर्ती पट्टी में मुसलमानों का अनुपात सघनता से बढ़ता जा रहा है। और उत्तरपूर्व के सीमावर्ती राज्यों में ईसाइयों की सघन उपस्थिति का एक अन्य परिसीमित सीमावर्ती क्षेत्र विकसित हुआ है। ये सब परिवर्तन विश्व के परिवर्तित हो रहे परिवेश के परिप्रेक्ष्य में भी तुच्छ नहीं हैं।

भारतसंघ की उत्तरी, पूर्वी, उत्तरपूर्वी एवं दक्षिणपश्चिमी सीमाओं पर स्थित विशिष्ट परिसीमित क्षेत्रों में भारतीय धर्मावलम्बियों के अनुपात में यह ह्रास तो निरन्तर चल रहा है, तथापि देश का अन्य अधिकतर भाग ईसाई धर्म अथवा इस्लाम के प्रचार-प्रसार से अधिक प्रभावित हुआ नहीं दिखता। भारतसंघ के उत्तरपश्चिमी, पश्चिमी, मध्यवर्ती एवं दक्षिणी भागों में भारतीय धर्मावलम्बियों का वर्चस्व प्रायः अक्षुण्ण

रहा है। ईसाई धर्म एवं इस्लाम के वैश्विक प्रसार से प्रायः अप्रभावित रहे भारतसंघ के ये भाग देश के कुल क्षेत्रफल के दो-तिहाई पर व्याप्त हैं और प्रति पाँच में से तीन भारतीय यहाँ रहते हैं। इस विस्तृत क्षेत्र में भारतीय धर्मावलम्बियों ने अत्युच्च जिजीविषा का परिचय दिया है, इस क्षेत्र में उनके अनुपात में ह्रास की प्रवृत्ति यदि कभी कहीं प्रारम्भ हुई है तो उसका तुरन्त प्रतिकार हुआ भी दिखता है।

परन्तु भारतीय धर्मावलम्बियों की समस्त जिजीविषा भारत के सीमावर्ती क्षेत्रों में अपना स्थान एवं वर्चस्व बनाये रखने में उन्हें सक्षम नहीं कर पायी। सीमाओं पर केवल समाज की शक्ति एवं प्रयास पर्याप्त नहीं होते, एक सशक्त, सतर्क एवं प्रभावी राज्य का समर्थन भी आवश्यक होता है। अभी तक हम ऐसा सशक्त एवं सतर्क राज्य स्थापित नहीं कर पाये जो भारतवर्ष की सांस्कृतिक अस्मिता, गौरव एवं मूल आस्थाओं के संरक्षण के प्रति कटिबद्ध हो।

परिशिष्ट तालिका 1

भारतवर्ष, भारतसंघ, पाकिस्तान और बांग्लादेश की धर्मानुसार जनसंख्या

1881	1891	1901	1911	1921	1931	1941	1951	1961	1971	1981	1991
भारतसंघ											
जनसंख्या		**238,364**	**252,068**	**251,365**	**278,530**	**318,717**	**361,088**	**439,235**	**548,160**	**683,329**	**846,303**
भा. धर्मावलम्बी		206,518	218,252	216,343	237,164	269,119	315,001	381,567	472,517	586,681	720,100
		(86.64)	(86.58)	(86.07)	(85.15)	(84.44)	(87.24)	(86.87)	(86.20)	(85.86)	(85.09)
मुसलमान		29,102	30,269	30,739	35,818	42,645	37,661	46,940	61,418	80,003	106,552
		(12.21)	(12.01)	(12.23)	(12.86)	(13.38)	(10.43)	(10.69)	(11.20)	(11.71)	(12.59)
ईसाई		2,744	3,547	4,283	5,548	6,953	8,426	10,728	14,225	16,645	19,651
		(1.15)	(1.41)	(1.70)	(1.99)	(2.18)	(2.33)	(2.44)	(2.60)	(2.44)	(2.32)
पाकिस्तान											
जनसंख्या		**16,577**	**19,381**	**21,108**	**23,541**	**28,282**	**40,451**	**51,343**	**67,443**	**88,197**	**122,397**
भा. धर्मावलम्बी		2,641	2,898	3,274	4,427	5,568	646	754	1,208	1,454	2,018
		(15.93)	(14.95)	(15.51)	(18.80)	(19.69)	(1.60)	(1.47)	(1.79)	(1.65)	(1.65)
मुसलमान		13,904	16,364	17,620	18,757	22,293	39,286	49,889	65,254	85,371	118,475
		(83.88)	(84.43)	(83.48)	(79.68)	(78.82)	(97.12)	(97.17)	(96.76)	(96.80)	(96.80)
ईसाई		32	119	214	357	421	520	699	981	1,371	1,903
		(0.19)	(0.61)	(1.01)	(1.52)	(1.49)	(1.28)	(1.36)	(1.45)	(1.56)	(1.56)
बांग्लादेश											
जनसंख्या		**28,927**	**31,555**	**33,254**	**35,604**	**41,999**	**44,166**	**55,223**	**70,885**	**89,912**	**111,455**
भा. धर्मावलम्बी		9,814	10,353	10,608	10,812	12,437	10,110	10,646	10,138	11,722	12,672
		(33.93)	(32.81)	(31.90)	(30.37)	(29.61)	(22.89)	(19.28)	(14.30)	(13.04)	(11.37)
मुसलमान		19,113	21,202	22,646	24,731	29,509	33,943	44,415	60,533	77,906	98,420
		(66.07)	(67.19)	(68.10)	(69.46)	(70.26)	(76.85)	(80.43)	(85.40)	(86.65)	(88.30)
ईसाई		-	-	-	61	53	113	162	214	284	363
		-	-	-	(0.17)	(0.13)	(0.26)	(0.29)	(0.30)	(0.32)	(0.32)
भारतवर्ष											
कुल	**250,155**	**279,575**	**283,868**	**303,004**	**305,727**	**337,675**	**388,998**	**445,705**	**545,801**	**686,488**	**861,438**	**1,080,155**
भा.ध.	198,424	220,343	218,973	231,503	230,225	252,403	287,124	325,756	392,968	483,863	599,858	734,791
	(79.32)	(78.81)	(77.14)	(76.40)	(75.30)	(74.75)	(73.81)	(73.09)	(72.00)	(70.48)	(69.63)	(68.03)
मु.	49,953	57,068	62,119	67,835	71,005	79,306	94,447	110,890	141,244	187,205	243,280	323,447
	(19.97)	(20.41)	(21.88)	(22.39)	(23.22)	(23.49)	(24.28)	(24.88)	(25.88)	(27.27)	(28.24)	(29.94)
ई.	1,778	2,164	2,776	3,666	4,497	5,966	7,427	9,059	11,589	15,420	18,300	21,917
	(0.71)	(0.77)	(0.98)	(1.21)	(1.47)	(1.77)	(1.91)	(2.03)	(2.12)	(2.25)	(2.12)	(2.03)

टिप्पणी: जनसंख्या सहस्रों में है, कोष्ठकों में दिये गये आँकड़े कुल जनसंख्या का प्रतिशत हैं। भा.ध.: भारतीय धर्मी, मु.: मुसलमान, ई.: ईसाई। स्रोत: देखें, मूल पुस्तक की तालिका डी-1।

परिशिष्ट तालिका 2

भारतवर्ष के राज्यों और संघशासित प्रदेशों की धर्मानुसार जनसंख्या

	1901	1911	1921	1931	1941	1951	1961	1971	1981	1991
भारतसंघ										
जनसंख्या	**238,364**	**252,068**	**251,365**	**278,530**	**318,717**	**361,088**	**439,235**	**548,160**	**683,329**	**846,303**
भा.धर्मावलम्बी	206,518	218,252	216,343	237,164	269,119	315,001	381,567	472,517	586,681	720,100
	(86.64)	(86.58)	(86.07)	(85.15)	(84.44)	(87.24)	(86.87)	(86.20)	(85.86)	(85.09)
मुसलमान	29,102	30,269	30,739	35,818	42,645	37,661	46,940	61,418	80,003	106,552
	(12.21)	(12.01)	(12.23)	(12.86)	(13.38)	(10.43)	(10.69)	(11.20)	(11.71)	(12.59)
ईसाई	2,744	3,547	4,283	5,548	6,953	8,426	10,728	14,225	16,645	19,651
	(1.15)	(1.41)	(1.70)	(1.99)	(2.18)	(2.33)	(2.44)	(2.60)	(2.44)	(2.32)
आंध्रप्रदेश										
जनसंख्या	**19,066**	**21,447**	**21,420**	**24,204**	**27,289**	**31,115**	**35,983**	**43,503**	**53,550**	**66,508**
भा.धर्मावलम्बी		19,660	19,522	21,750	24,148	27,462	31,839	38,160	47,583	59,368
		(91.67)	(91.14)	(89.86)	(88.49)	(88.26)	(88.48)	(87.72)	(88.86)	(89.26)
मुसलमान		1,426	1,422	1,668	2,137	2,418	2,715	3,520	4,534	5,924
		(6.65)	(6.64)	(6.89)	(7.83)	(7.77)	(7.55)	(8.09)	(8.47)	(8.91)
ईसाई		360.3	475.5	786.6	1,004	1,235	1,429	1,823	1,433	1,216
		(1.68)	(2.22)	(3.25)	(3.68)	(3.97)	(3.97)	(4.19)	(2.68)	(1.83)
असम										
जनसंख्या	**3,290**	**3,849**	**4,637**	**5,560**	**6,695**	**8,029**	**10,837**	**14,625**	**18,041**	**22,414**
भा.धर्मावलम्बी	2,782	3,202	3,726	4,214	4,975	5,887	7,832	10,652		15,297
	(84.55)	(83.19)	(80.36)	(75.80)	(74.30)	(73.32)	(72.27)	(72.83)		(68.25)
मुसलमान	494.5	624.0	869.2	1,267	1,683	1,982	2,742	3,592		6,373
	(15.03)	(16.21)	(18.74)	(22.78)	(25.13)	(24.68)	(25.30)	(24.56)		(28.43)
ईसाई	13.63	22.82	41.68	79.02	37.63	160.4	263.1	381.0		744.4
	(0.41)	(0.59)	(0.90)	(1.42)	(0.56)	(2.00)	(2.43)	(2.61)		(3.32)
बिहार										
जनसंख्या	**27,314**	**28,317**	**28,129**	**31,350**	**35,174**	**38,786**	**46,456**	**56,353**	**69,915**	**86,374**
भा.धर्मावलम्बी	23,729	24,544	24,306	26,875	30,077	33,997	40,168	48,100	59,300	72,742
	(86.87)	(86.68)	(86.41)	(85.72)	(85.51)	(87.65)	(86.46)	(85.36)	(84.82)	(84.22)
मुसलमान	3,422	3,551	3,574	4,143	4,719	4,373	5,786	7,594	9,875	12,788
	(12.53)	(12.54)	(12.71)	(13.21)	(13.42)	(11.28)	(12.45)	(13.48)	(14.12)	(14.81)
ईसाई	163.8	221.8	249.1	332.5	377.8	415.5	502.2	658.7	740.2	843.7
	(0.60)	(0.78)	(0.89)	(1.06)	(1.07)	(1.07)	(1.08)	(1.17)	(1.06)	(0.98)
गोआ	1900	1910			1940	1950	1960			
जनसंख्या	**475.5**	**486.8**	**469.5**	**505.3**	**540.9**	**547.4**	**590.0**	**795.1**	**1,008**	**1,170**
भा.धर्मावलम्बी	210.3	215.2	218.5	250.6	286.8	307.4	354.3	498.5	650.5	759.1
	(44.22)	(44.21)	(46.53)	(49.60)	(53.03)	(56.16)	(60.04)	(62.70)	(64.55)	(64.89)
मुसलमान	4.470	4.965	5.493	6.973	8.222	8.813	11.15	26.48	41.32	61.46
	(0.94)	(1.02)	(1.17)	(1.38)	(1.52)	(1.61)	(1.89)	(3.33)	(4.10)	(5.25)
ईसाई	260.8	266.6	245.5	247.7	245.8	231.2	224.6	270.1	315.9	349.2
	(54.84)	(54.77)	(52.30)	(49.02)	(45.45)	(42.23)	(38.07)	(33.97)	(31.35)	(29.85)

	1901	1911	1921	1931	1941	1951	1961	1971	1981	1991
गुजरात										
जनसंख्या	**9,095**	**9,803**	**10,175**	**11,490**	**13,701**	**16,262**	**20,633**	**26,697**	**34,086**	**41,310**
भा.धर्मावलम्बी						14,733	18,797	24,339	31,045	37,521
						(90.60)	(91.10)	(91.17)	(91.08)	(90.83)
मुसलमान						1,451	1,745	2,249	2,908	3,607
						(8.92)	(8.46)	(8.42)	(8.53)	(8.73)
ईसाई						78.03	91.03	109.3	132.7	181.8
						(0.48)	(0.44)	(0.41)	(0.39)	(0.44)
हरियाणा										
जनसंख्या	**4,623**	**4,175**	**4,256**	**4,560**	**5,273**	**5,674**	**7,591**	**10,037**	**12,923**	**16,464**
भा.धर्मावलम्बी							7,293	9,621	12,387	15,685
							(96.08)	(95.86)	(95.85)	(95.27)
मुसलमान							290.4	405.7	523.5	763.8
							(3.83)	(4.04)	(4.05)	(4.64)
ईसाई							7.378	9.802	12.22	15.70
							(0.10)	(0.10)	(0.09)	(0.10)
हिमाचलप्रदेश (पुनर्गठन से पूर्व)										
जनसंख्या	**844.3**	**876.6**	**890.0**	**954.3**	**1,058**	**1,110**	**1,351**			
भा.धर्मावलम्बी		852.2	862.8	923.7	1,027	1,094	1,325			
		(97.22)	(96.94)	(96.79)	(97.07)	(98.60)	(98.06)			
मुसलमान		23.93	26.88	30.16	30.57	15.20	25.67			
		(2.73)	(3.02)	(3.16)	(2.89)	(1.37)	(1.90)			
ईसाई		0.438	0.356	0.477	0.423	0.333	0.540			
		(0.05)	(0.04)	(0.05)	(0.04)	(0.03)	(0.04)			
हिमाचलप्रदेश										
जनसंख्या	**1,920**	**1,897**	**1,928**	**2,029**	**2,263**	**2,386**	**2,812**	**3,460**	**4,281**	**5,171**
भा.धर्मावलम्बी							2,771	3,406	4,207	5,077
							(98.53)	(98.44)	(98.28)	(98.19)
मुसलमान							37.98	50.33	69.61	89.13
							(1.35)	(1.45)	(1.63)	(1.72)
ईसाई							3.274	3.556	3.954	4.435
							(0.12)	(0.10)	(0.09)	(0.09)
जम्मू और कश्मीर										
जनसंख्या	**2,139**	**2,293**	**2,424**	**2,670**	**2,947**	**3,254**	**3,561**	**4,617**	**5,987**	**7,719**
भारतीय		669.6	675.3	718.5			1,126	1,570	2,136	
		(29.20)	(27.86)	(26.91)			(31.62)	(34.00)	(35.67)	
मुसलमान		1,623	1,747	1,950	2,134		2,432	3,040	3,843	
		(70.76)	(72.08)	(73.02)	(72.41)		(68.30)	(65.84)	(64.19)	
ईसाई		0.917	1.454	1.869			2.848	7.182	8.481	
		(0.04)	(0.06)	(0.07)			(0.08)	(0.16)	(0.14)	
कर्नाटक										
जनसंख्या	**13,055**	**13,525**	**13,377**	**14,632**	**16,255**	**19,402**	**23,587**	**29,299**	**37,136**	**44,977**
भा.धर्मावलम्बी		12,179		13,024		17,034	20,771	25,573	32,267	38,884
		(90.05)		(89.01)		(87.79)	(88.06)	(87.28)	(86.89)	(86.45)
मुसलमान		1,169		1,370		1,950	2,328	3,113	4,105	5,234
		(8.64)		(9.36)		(10.05)	(9.87)	(10.62)	(11.05)	(11.64)
ईसाई		177.2		238.5		418.5	487.6	613.0	764.4	859.5
		(1.31)		(1.63)		(2.16)	(2.07)	(2.09)	(2.06)	(1.91)

	1901	1911	1921	1931	1941	1951	1961	1971	1981	1991
केरल										
जनसंख्या	**6,396**	**7,148**	**7,802**	**9,507**	**11,032**	**13,549**	**16,904**	**21,347**	**25,454**	**29,099**
भा. धर्मावलम्बी	4,407	4,783	5,066	6,027	6,884	8,348	10,289	12,690	14,810	16,689
	(68.90)	(66.91)	(64.93)	(63.40)	(62.40)	(61.61)	(60.87)	(59.45)	(58.18)	(57.35)
मुसलमान	1,105	1,264	1,360	1,624	1,884	2,375	3,028	4,163	5,410	6,788
	(17.28)	(17.68)	(17.43)	(17.08)	(17.08)	(17.53)	(17.91)	(19.50)	(21.25)	(23.33)
ईसाई	883.9	1,101	1,376	1,856	2,264	2,826	3,587	4,494	5,234	5,622
	(13.82)	(15.40)	(17.64)	(19.52)	(20.52)	(20.86)	(21.22)	(21.05)	(20.56)	(19.32)
मध्यप्रदेश										
जनसंख्या	**16,861**	**19,441**	**19,172**	**21,356**	**23,991**	**26,072**	**32,372**	**41,654**	**52,179**	**66,181**
भा. धर्मावलम्बी						24,941	30,867	39,552	49,325	62,471
						(95.66)	(95.35)	(94.95)	(94.53)	(94.39)
मुसलमान						1,050	1,318	1,816	2,502	3,283
						(4.03)	(4.07)	(4.36)	(4.80)	(4.96)
ईसाई						81.00	188.3	286.1	352.0	426.6
						(0.31)	(0.58)	(0.69)	(0.67)	(0.64)
महाराष्ट्र										
जनसंख्या	**19,392**	**21,475**	**20,850**	**23,959**	**26,833**	**32,003**	**39,554**	**50,412**	**62,784**	**78,937**
भा. धर्मावलम्बी						29,134	35,959	45,462	56,183	70,423
						(91.04)	(90.91)	(90.18)	(89.49)	(89.21)
मुसलमान						2,436	3,034	4,233	5,806	7,629
						(7.61)	(7.67)	(8.40)	(9.25)	(9.66)
ईसाई						433.3	560.6	717.2	795.5	885.0
						(1.35)	(1.42)	(1.42)	(1.27)	(1.12)
ओडिसा										
जनसंख्या	**10,303**	**11,379**	**11,159**	**12,491**	**13,768**	**14,646**	**17,549**	**21,945**	**26,370**	**31,660**
भा. धर्मावलम्बी			10,951	12,228	13,529	14,328	17,133	21,240	25,467	30,416
			(98.13)	(97.89)	(98.26)	(97.83)	(97.63)	(96.79)	(96.58)	(96.07)
मुसलमान			138.4	148.7	165.7	176.3	215.3	326.5	422.3	577.8
			(1.24)	(1.19)	(1.20)	(1.20)	(1.23)	(1.49)	(1.60)	(1.83)
ईसाई			69.88	114.3	73.83	141.9	201.0	378.9	480.4	666.2
			(0.63)	(0.92)	(0.54)	(0.97)	(1.15)	(1.73)	(1.82)	(2.10)
पंजाब (पुनर्गठन से पूर्व)										
जनसंख्या	**13,267**	**11,945**	**12,465**	**13,667**	**16,101**	**16,134**	**20,307**			
भा. धर्मावलम्बी	9,032	8,159	8,485	9,142	10,655	15,744	19,763			
	(68.08)	(68.30)	(68.07)	(66.89)	(66.18)	(97.58)	(97.32)			
मुसलमान	4,212	3,735	3,893	4,431	5,328	290.4	394.0			
	(31.75)	(31.27)	(31.23)	(32.42)	(33.09)	(1.80)	(1.94)			
ईसाई	22.55	51.37	87.25	94.30	117.53	100.0	150.3			
	(0.17)	(0.43)	(0.70)	(0.69)	(0.73)	(0.62)	(0.74)			
पंजाब										
जनसंख्या	**7,545**	**6,732**	**7,153**	**8,012**	**9,600**	**9,161**	**11,135**	**13,551**	**16,789**	**20,282**
भा. धर्मावलम्बी							10,907	13,274	16,436	19,817
							(97.95)	(97.96)	(97.90)	(97.71)
मुसलमान							89.05	114.4	168.1	239.4
							(0.80)	(0.84)	(1.00)	(1.18)
ईसाई							138.9	162.2	184.9	225.2
							(1.25)	(1.20)	(1.10)	(1.11)

	1901	1911	1921	1931	1941	1951	1961	1971	1981	1991
राजस्थान										
जनसंख्या	**10,294**	**10,984**	**10,293**	**11,748**	**13,864**	**15,971**	**20,156**	**25,766**	**34,262**	**44,006**
भा. धर्मावलम्बी						14,969	18,818	23,958	31,730	40,433
						(93.72)	(93.36)	(92.98)	(92.61)	(91.88)
मुसलमान						991.2	1,315	1,778	2,492	3,525
						(6.21)	(6.52)	(6.90)	(7.27)	(8.01)
ईसाई						11.42	22.86	30.20	39.57	47.99
						(0.07)	(0.11)	(0.12)	(0.12)	(0.11)
सिक्किम										
जनसंख्या	**59.01**	**87.92**	**81.72**	**109.8**	**121.5**	**137.7**	**162.2**	**209.8**	**316.4**	**406.5**
भा. धर्मावलम्बी	58.85	87.59	81.33	109.4	121.4	137.3	158.2	207.8	306.1	389.2
	(99.73)	(99.63)	(99.52)	(99.65)	(99.90)	(99.69)	(97.52)	(99.05)	(96.76)	(95.75)
मुसलमान	0.024	0.044	0.020	0.104	0.083	0.124	1.207	0.335	3.241	3.849
	(0.04)	(0.05)	(0.02)	(0.09)	(0.07)	(0.09)	(0.74)	(0.16)	(1.02)	(0.95)
ईसाई	0.136	0.285	0.370	0.276	0.034	0.304	2.813	1.663	7.015	13.41
	(0.23)	(0.32)	(0.45)	(0.25)	(0.03)	(0.22)	(1.73)	(0.79)	(2.22)	(3.30)
तमिलनाडु										
जनसंख्या	**19,253**	**20,903**	**21,629**	**23,472**	**26,268**	**30,119**	**33,687**	**41,199**	**48,408**	**55,859**
भा. धर्मावलम्बी						27,249	30,364	36,727	43,090	49,627
						(90.47)	(90.14)	(89.15)	(89.01)	(88.84)
मुसलमान						1,443	1,560	2,104	2,520	3,053
						(4.79)	(4.63)	(5.11)	(5.21)	(5.47)
ईसाई						1,427	1,763	2,368	2,798	3,179
						(4.74)	(5.23)	(5.75)	(5.78)	(5.69)
उत्तरप्रदेश										
जनसंख्या	**48,494**	**48,014**	**46,511**	**49,615**	**56,347**	**63,216**	**73,746**	**88,341**	**110,862**	**139,112**
भा. धर्मावलम्बी	41,419	40,929	39,582	41,973	47,523	54,063	62,856	74,532	93,042	114,802
	(85.41)	(85.24)	(85.10)	(84.60)	(84.34)	(85.52)	(85.23)	(84.37)	(83.93)	(82.53)
मुसलमान	6,973	6,905	6,725	7,434	8,692	9,029	10,788	13,677	17,658	24,110
	(14.38)	(14.38)	(14.46)	(14.98)	(15.43)	(14.28)	(14.63)	(15.48)	(15.93)	(17.33)
ईसाई	101.8	179.7	203.2	208.3	131.6	123.9	101.6	131.8	162.2	199.6
	(0.21)	(0.37)	(0.44)	(0.42)	(0.23)	(0.20)	(0.14)	(0.15)	(0.15)	(0.14)
पश्चिम बंगाल										
जनसंख्या	**16,940**	**17,999**	**17,474**	**18,897**	**23,230**	**26,300**	**34,926**	**44,312**	**54,581**	**68,078**
भा. धर्मावलम्बी	11,888	12,583	12,228	13,094	16,287	21,000	27,737	34,996	42,518	51,619
	(70.18)	(69.91)	(69.98)	(69.29)	(70.11)	(79.85)	(79.42)	(78.98)	(77.90)	(75.82)
मुसलमान	4,979	5,328	5,148	5,684	6,848	5,118	6,985	9,064	11,743	16,076
	(29.39)	(29.60)	(29.46)	(30.08)	(29.48)	(19.46)	(20.00)	(20.45)	(21.51)	(23.61)
ईसाई	72.84	88.20	97.85	119.1	95.24	181.8	204.5	251.8	319.7	383.5
	(0.43)	(0.49)	(0.56)	(0.63)	(0.41)	(0.69)	(0.59)	(0.57)	(0.59)	(0.56)

	1901	1911	1921	1931	1941	1951	1961	1971	1981	1991
उत्तरपूर्वी राज्य										
अरुणाचलप्रदेश										
जनसंख्या							**336.6**	**467.5**	**631.8**	**864.6**
भा. धर्मावलम्बी							333.8	463.0	599.4	763.7
							(99.19)	(99.03)	(94.87)	(88.33)
मुसलमान							1.008	0.842	5.073	11.92
							(0.30)	(0.18)	(0.80)	(1.38)
ईसाई							1.713	3.684	27.31	89.01
							(0.51)	(0.79)	(4.32)	(10.29)
मणिपुर										
जनसंख्या	**284.5**	**346.2**	**384.0**	**445.6**	**512.1**	**577.6**	**780.0**	**1,073**	**1,421**	**1,837**
भा. धर्मावलम्बी	274.1	331.6	362.5	412.3	456.8	472.0	579.4	722.6	900.0	1,077
	(96.33)	(95.77)	(94.39)	(92.54)	(89.20)	(81.72)	(74.28)	(67.36)	(63.33)	(58.62)
मुसलमान	10.38	14.51	17.49	22.86	29.56	37.20	48.59	70.97	99.33	133.5
	(3.65)	(4.19)	(4.55)	(5.13)	(5.77)	(6.44)	(6.23)	(6.62)	(6.99)	(7.27)
ईसाई	0.045	0.132	4.050	10.40	25.73	68.39	152.0	279.2	421.7	626.7
	(0.016)	(0.038)	(1.05)	(2.33)	(5.02)	(11.84)	(19.49)	(26.03)	(29.68)	(34.12)
मेघालय										
जनसंख्या	**340.5**	**394.0**	**422.4**	**480.8**	**555.8**	**605.7**	**769.4**	**1,012**	**1,336**	**1,775**
भा. धर्मावलम्बी	310.6	347.5	362.9	392.6	540.7	442.4	475.5	510.1	591.6	567.2
	(91.23)	(88.21)	(85.91)	(81.66)	(97.28)	(73.03)	(61.80)	(50.42)	(44.29)	(31.96)
मुसलमान	8.913	9.748	10.79	12.67	14.06	13.95	23.02	26.35	41.43	61.46
	(2.62)	(2.47)	(2.55)	(2.64)	(2.53)	(2.30)	(2.99)	(2.60)	(3.10)	(3.46)
ईसाई	20.97	36.70	48.73	75.52	1.06	149.4	270.9	475.3	702.9	1,146
	(6.16)	(9.31)	(11.54)	(15.71)	(0.19)	(24.66)	(35.21)	(46.98)	(52.61)	(64.58)
मिजोरम										
जनसंख्या	**82.43**	**91.20**	**98.41**	**124.4**	**152.8**	**196.2**	**266.1**	**332.4**	**493.8**	**689.8**
भा. धर्मावलम्बी	82.18	88.43	70.33	65.13	152.69	18.47	35.36	44.42	77.76	93.92
	(99.70)	(96.96)	(71.46)	(52.35)	(99.93)	(9.41)	(13.29)	(13.36)	(15.75)	(13.62)
मुसलमान	0.206	0.307	0.365	0.155	0.101	0.131	0.203	1.882	2.205	4.538
	(0.25)	(0.34)	(0.37)	(0.12)	(0.07)	(0.07)	(0.08)	(0.57)	(0.45)	(0.66)
ईसाई	0.045	2.461	27.72	59.12	0.00	177.6	230.5	286.1	413.8	591.3
	(0.05)	(2.70)	(28.17)	(47.52)	(0.00)	(90.52)	(86.63)	(86.07)	(83.81)	(85.73)
नगालैंड										
जनसंख्या	**102.4**	**149.6**	**160.9**	**178.8**	**189.6**	**213.0**	**369.2**	**516.4**	**774.9**	**1,210**
भा. धर्मावलम्बी	101.7	146.0	151.5	155.2	189.1	114.4	172.7	168.6	141.5	130.9
	(99.27)	(97.58)	(94.14)	(86.80)	(99.72)	(53.71)	(46.78)	(32.66)	(18.26)	(10.82)
मुसलमान	0.143	0.318	0.694	0.698	0.531	0.520	0.891	2.966	11.81	20.64
	(0.14)	(0.21)	(0.43)	(0.39)	(0.28)	(0.24)	(0.24)	(0.57)	(1.52)	(1.71)
ईसाई	0.601	3.308	8.734	22.91	0.009	98.07	195.6	344.8	621.6	1,058
	(0.59)	(2.21)	(5.43)	(12.81)	(0.005)	(46.05)	(52.98)	(66.77)	(80.22)	(87.47)

	1901	1911	1921	1931	1941	1951	1961	1971	1981	1991
त्रिपुरा										
जनसंख्या	**173.3**	**229.6**	**304.4**	**382.5**	**513.0**	**639.0**	**1,142**	**1,556**	**2,053**	**2,757**
भा. धर्मावलम्बी	127.8	164.5	220.3	276.2	389.1	496.7	902.0	1,436	1,890	2,514
	(73.77)	(71.65)	(72.36)	(72.21)	(75.84)	(77.74)	(78.98)	(92.31)	(92.04)	(91.19)
मुसलमान	45.32	64.95	82.29	103.7	123.6	137.0	230.0	104.0	138.5	196.5
	(26.15)	(28.29)	(27.03)	(27.11)	(24.09)	(21.44)	(20.14)	(6.68)	(6.75)	(7.13)
ईसाई	0.138	0.138	1.860	2.596	0.316	5.266	10.04	15.71	24.87	46.47
	(0.08)	(0.06)	(0.61)	(0.68)	(0.06)	(0.82)	(0.88)	(1.01)	(1.21)	(1.69)
संघशासित प्रदेश										
अंडमान और निकोबार द्वीप समूह										
जनसंख्या	**24.65**	**26.46**	**27.09**	**29.46**	**33.77**	**30.97**	**63.55**	**115.1**	**188.7**	**280.7**
भा. धर्मावलम्बी		21.31	21.40	21.28	24.73	16.69	38.18	73.10	124.2	192.1
		(80.55)	(78.99)	(72.24)	(73.24)	(53.90)	(60.08)	(63.51)	(65.84)	(68.45)
मुसलमान		4.580	4.104	6.719	8.005	4.783	7.398	11.66	16.19	21.35
		(17.31)	(15.15)	(22.80)	(23.71)	(15.44)	(11.64)	(10.13)	(8.58)	(7.61)
ईसाई		0.566	1.586	1.461	1.032	9.494	17.97	30.34	48.27	67.21
		(2.14)	(5.86)	(4.96)	(3.06)	(30.65)	(28.28)	(26.36)	(25.58)	(23.94)
चंडीगढ़										
जनसंख्या	**21.97**	**18.44**	**18.13**	**19.78**	**22.57**	**24.26**	**119.9**	**257.3**	**451.6**	**642.0**
भा. धर्मावलम्बी							117.6	251.1	438.0	619.5
							(98.05)	(97.58)	(96.99)	(96.49)
मुसलमान							1.467	3.720	9.115	17.48
							(1.22)	(1.45)	(2.02)	(2.72)
ईसाई							0.867	2.504	4.470	5.030
							(0.72)	(0.97)	(0.99)	(0.78)
दादरा व नगर हवेली										
	1900	1910				1950	1962			
जनसंख्या	**24.28**	**29.02**	**31.05**	**38.26**	**40.44**	**41.53**	**57.96**	**74.17**	**103.7**	**138.5**
भा. धर्मावलम्बी	23.94	28.81	30.65	37.66	39.26	40.50	56.72	71.51	99.74	133.1
	(98.59)	(99.26)	(98.71)	(98.42)	(97.08)	(97.52)	(97.86)	(96.42)	(96.18)	(96.08)
मुसलमान	0.107	0.078	0.129	0.201	0.175	0.159	0.443	0.740	1.932	3.341
	(0.44)	(0.27)	(0.42)	(0.53)	(0.43)	(0.38)	(0.76)	(1.00)	(1.86)	(2.41)
ईसाई	0.235	0.135	0.271	0.400	1.009	0.870	0.799	1.918	2.025	2.092
	(0.97)	(0.47)	(0.87)	(1.05)	(2.49)	(2.09)	(1.38)	(2.59)	(1.95)	(1.51)
दमन और दीऊ	1900	1910			1940	1950	1960			
जनसंख्या	**32.01**	**32.47**	**31.41**	**36.43**	**42.81**	**48.61**	**36.67**	**62.65**	**78.98**	**101.6**
भा. धर्मावलम्बी	26.50	26.85	25.95	30.54	35.50	41.20	31.08	54.50	69.49	89.65
	(82.79)	(82.68)	(82.61)	(83.82)	(82.92)	(84.76)	(84.74)	(86.99)	(87.98)	(88.24)
मुसलमान	3.855	3.875	3.748	3.974	5.107	5.194	3.013	5.770	7.144	9.048
	(12.04)	(11.93)	(11.93)	(10.91)	(11.93)	(10.69)	(8.22)	(9.21)	(9.05)	(8.91)
ईसाई	1.655	1.749	1.713	1.920	2.204	2.216	2.585	2.383	2.347	2.904
	(5.17)	(5.39)	(5.45)	(5.27)	(5.15)	(4.56)	(7.05)	(3.80)	(2.97)	(2.86)

	1901	1911	1921	1931	1941	1951	1961	1971	1981	1991
दिल्ली										
जनसंख्या	**405.8**	**413.9**	**488.5**	**636.2**	**917.9**	**1,744**	**2,659**	**4,066**	**6,220**	**9,421**
भा. धर्मावलम्बी			333.3	412.3	595.5	1,626	2,474	3,759	5,677	8,448
			(68.23)	(64.80)	(64.88)	(93.22)	(93.05)	(92.46)	(91.26)	(89.67)
मुसलमान			141.9	207.0	304.9	99.50	155.5	263.0	481.8	889.6
			(29.04)	(32.53)	(33.22)	(5.71)	(5.85)	(6.47)	(7.75)	(9.44)
ईसाई			13.34	16.99	17.44	18.69	29.27	43.72	61.61	83.15
			(2.73)	(2.67)	(1.90)	(1.07)	(1.10)	(1.08)	(0.99)	(0.88)
लक्षद्वीप										
जनसंख्या	**13.88**	**14.56**	**13.64**	**16.04**	**18.36**	**21.04**	**24.11**	**31.81**	**40.25**	**51.71**
भा. धर्मावलम्बी	0.025	0.025	0.029	0.012	0.077	0.015	0.263	1.552	1.810	2.344
	(0.18)	(0.17)	(0.21)	(0.07)	(0.42)	(0.07)	(1.09)	(4.88)	(4.50)	(4.53)
मुसलमान	13.86	14.53	13.61	16.03	18.28	21.02	23.79	30.02	38.17	48.77
	(99.82)	(99.81)	(99.77)	(99.91)	(99.57)	(99.92)	(98.68)	(94.37)	(94.84)	(94.31)
ईसाई	0.000	0.003	0.002	0.003	0.001	0.002	0.056	0.239	0.266	0.598
	(0.00)	(0.02)	(0.01)	(0.02)	(0.01)	(0.01)	(0.23)	(0.75)	(0.66)	(1.16)
पांडिचेरी										
जनसंख्या	**246.4**	**257.2**	**244.2**	**258.6**	**285.0**	**317.3**	**369.1**	**471.7**	**604.5**	**807.8**
भा. धर्मावलम्बी							311.7	401.3	517.9	696.6
							(84.44)	(85.07)	(85.68)	(86.23)
मुसलमान							23.47	29.14	36.66	52.87
							(6.36)	(6.18)	(6.06)	(6.54)
ईसाई							33.95	41.30	49.91	58.36
							(9.20)	(8.76)	(8.26)	(7.22)

टिप्पणी: जनसंख्या सहस्रों में है, कोष्ठकों में दिये गये आँकड़े कुल जनसंख्या का प्रतिशत हैं। स्रोत: मूल पुस्तक की तालिका डी-5 देखें।

उन्नीसवीं शताब्दी के सुप्रसिद्ध फ्रांसीसी दार्शनिक ऑगस्टस कोम्त ने कहा था कि जनसांख्यिकी भाग्यविधात्री हुआ करती है। यह सही है कि किसी राष्ट्र अथवा संस्कृति के भाग्य का निर्धारण करने में अनेक अन्य विषयों का महत्व होता है। परन्तु समाज के भीतर के विभिन्न समूहों की जनसंख्या के पारस्परिक अनुपात में परिवर्तन बहुधा महान् राष्ट्रों एवं संस्कृतियों के उत्थान एवं पतन का निर्णायक कारण बनता रहा है। इसीलिये सक्रिय एवं सचेत समाज अपनी और विश्व में अन्यत्र सब स्थानों की जनसांख्यिकी में हो रहे परिवर्तनों का सतत अवलोकन-आकलन करते रहते हैं। आधुनिक काल में जब विभिन्न राष्ट्रों की एक-दूसरे को प्रभावित करने की क्षमता अत्यन्त बढ़ गयी है, अपने भीतर एवं बाहर की जनसांख्यिकी प्रवृत्तियों का सतत अवलोकन-आकलन करते रहना और भी महत्वपूर्ण हो गया है।

एक सहस्राब्दी से भी दीर्घ काल से भारतवर्ष विश्व के सर्वाधिक सक्षम एवं सशक्त विस्तारवादी धर्मों को अपने भीतर आश्रय दिये हुए है। विभिन्न धर्मों के इस सुदीर्घ प्रभाव ने भारतवर्ष को निश्चय ही वैविध्य से सम्पन्न किया है। परन्तु यही धार्मिक वैविध्य इतिहास एवं वर्तमान में राष्ट्र के समक्ष खड़ी होने वाली जटिलतम राजनीतिक, प्रशासनिक और आन्तरिक एवं बाह्य सुरक्षा से सम्बन्धित समस्याओं का कारण भी बना है। अतः देश के विभिन्न भागों में विभिन्न धर्मानुयायिओं की सतत परिवर्तित हो रही जनसांख्यिकी का अध्ययन करते रहना देश की सीमाओं को अक्षुण्ण बनाये रखने और देश के भीतर शान्ति, व्यवस्था एवं सामाजिक समरसता बनाये रखने के लिये अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

सम्प्रति समाजनीति समीक्षण केन्द्र ने भारतीय उपमहाद्वीप के विभिन्न क्षेत्रों एवं भारतीय संघ के प्रायः समस्त जनपदों के लिये गत एक सौ वर्षों के धर्मानुसार जनसांख्यिकी आँकड़ों का विशद संकलन किया है। इस विषय में भारतवर्ष की स्थिति को वैश्विक परिप्रेक्षय में रखने की दृष्टि से उन्होंने विश्व के विभिन्न क्षेत्रों एवं देशों की धर्मानुसार जनसांख्यिकी में बीसवीं शताब्दी के मध्य हुए परिवर्तनों सम्बन्धी आँकड़े भी संकलित किये हैं।

मैं अत्यन्त मौलिक महत्व के इस कार्य के लिये समाजनीति समीक्षण केन्द्र का अभिनन्दन करता हूँ और समस्त भारतीयों एवं विशेषतः भारतीय राजनेताओं, सामरिक विश्लेषकों, प्रशासकों एवं देश में शान्ति एवं व्यवस्था बनाये रखने के कठिन कार्य के प्रति उत्तरदायी समस्त लोगों से इस पुस्तक की अनुशंसा करता हूँ।

— श्री लालकृष्ण आडवाणी के आमुख से उद्धृत

केन्द्र के अन्य प्रकाशन

भारत की धर्मानुसार जनसंख्या

अंग्रेजी, 2003	आईएसबीएन: 81-86041-15-x	800/-

भारत की धर्मानुसार जनसंख्या (संक्षिप्त)

अंग्रेजी, 2003	आईएसबीएन: 81-86041-16-8	25/-
हिंदी, 2004	आईएसबीएन: 81-86041-18-4	25/-

सनातन भारत जागृत भारत :
भारतभूमि एवं भारत के लोगों की यशोगाथा

अंग्रेजी संस्करण, 2001	आईएसबीएन: 81-86041-12-5	200/-
हिंदी संस्करण, 2004	आईएसबीएन: 81-86041-17-6	200/-

तिरुप्पोरूर एवं वडक्कुप्पट्टु :
अठारवीं शताब्दी के ग्रामों का बहीखाता

अंग्रेजी, 2001	आईएसबीएन: 81-86041-14-1	300/-
तमिल, 2001	आईएसबीएन: 81-86041-13-3	300/-

फूड फॉर आल :
अन्नबाहुल्य एवं अन्नदान के सनातन
भारतीय अनुशासन पर एक संगोष्ठी की रपट

अंग्रेजी, 2001	आईएसबीएन: 81-86041-10-9	150/-

अन्नम् बहु कुर्वीत :
अन्नबाहुल्य एवं अन्नदान के सनातन भारतीय धर्म का अनुस्मरण

हिन्दी संस्करण, 1996	आईएसबीएन: 81-86041-06-0	400/-
अंग्रेजी संस्करण, 1996	आईएसबीएन: 81-86041-05-2	400/-
तमिल संस्करण, 1998	आईएसबीएन: 81-86041-08-7	400/-

अयोध्या एण्ड द फ्यूचर इण्डिया

अंग्रेजी, 1993	आईएसबीएन: 81-86041-02-8	160/-

भारतीय चित्त मानस एवं काल

अंग्रेजी, 1993	आईएसबीएन: 81-86041-00-1	200/-

समाजनीति समीक्षण केन्द्र

राष्ट्रनिर्माण के कार्य में महत्त्व लोगों के उत्साह एवं निष्ठा का ही होता है। राष्ट्र के लोग जब आत्मविश्वास एवं दृढ़ संकल्प के साथ अपने किसी लक्ष्य की ओर चल निकलते हैं तो उस लक्ष्य तक पहुँचने के लिये समुचित साधनों, तकनीकों एवं व्यवस्थाओं आदि का सृजन वे सहज ही करते चले जाते हैं।

बीसवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में महात्मा गाँधी ने भारतवर्ष में ऐसे ही दृढ़ संकल्प एवं आत्मविश्वास का संचार किया था और तब भारत के लोगों ने अपनी समस्त शक्ति को सहेजकर अपने-आप को स्वतन्त्रताप्राप्ति के महान् कार्य में लगा दिया था। उस संकल्प एवं विश्वास के बल पर हम न केवल अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में सफल हुए, अपितु अपने उस अभूतपूर्व स्वतन्त्रता संग्राम को सम्पन्न कर हमने सम्पूर्ण विश्व को अनेक विलक्षण विचारों एवं विधाओं से समृद्ध किया।

स्वतन्त्रताप्राप्ति के पश्चात् हमने स्वतन्त्रता संग्राम के दिनों के उस दृढ़ संकल्प एवं अविचल आत्मविश्वास को कहीं खो दिया है। दीर्घ राजनैतिक दासता ने हमें वैचारिक एवं व्यावहारिक तमस के गहन गर्त में धकेल दिया था। महात्मा गाँधी जैसे अवतार पुरुष के नेतृत्व में हम कुछ समय के लिये उस तमस से उबर पाये। उनके जाने के पश्चात् हम सहसा पुनः उसी तमस में डूब गये हैं। पिछले पचास वर्षों में हम सब प्रकार के ओज एवं उत्साह से विहीन जीवन ही जीते आये हैं। आजके विश्व में अपनी परिस्थिति को समझने और इस परिस्थिति में अपनी राष्ट्रीय अस्मिता को प्रतिष्ठापित करने के लिये आवश्यक उद्यम करने के विषय में हमने कोई विचार नहीं किया। अपनी सांस्कृतिक गरिमा के अनुरूप विश्व में अपना कोई स्थान बनाने और अपनी कोई स्वतन्त्र दिशा स्थापित करने का कोई प्रयास हम से नहीं हुआ। स्वतन्त्र राष्ट्रीय जीवन के इन पचास-साठ वर्षों में हम तो अन्यों का अनुकरण करते हुए किसी प्रकार समय ही काटते आये हैं। अन्तरराष्ट्रीय हाट-बाजारों से उठने वाली विभिन्न झंझाओं के समक्ष झुकते हुए, समय-समय पर बह रही अन्तरराष्ट्रीय पवन की दिशा के साथ अपने को घुमाते हुए, हम मात्र जीवनयापन ही करते आये हैं।

आज जब विश्व के प्रायः समस्त देश अपनी-अपनी स्वतन्त्र दिशाओं में चल निकले हैं, हम इस तमस में डूबे नहीं रह सकते। हमें अपनी सांस्कृतिक अस्मिता के स्वरूप और आजके विश्व में अपनी परिस्थिति को स्पष्टता से समझकर अपनी किसी विशिष्ट भारतीय दिशा, अपने किसी विशिष्ट भारतीय लक्ष्य का वरण करना होगा, और उस लक्ष्य तक पहुँचने के लिए एकदा पुनः राष्ट्रव्यापी आत्मविश्वास एवं दृढ़ संकल्प जागृत करना होगा।

समाजनीति समीक्षण केन्द्र की स्थापना राष्ट्रीय अस्मिता के जागरण एवं आजके विश्व में विशिष्ट भारतीय दिशा के निर्धारण के इस कार्य में सहायी होने के उद्देश्य से की गयी है। केन्द्र ऐसी सार्वजनिक नीतियों के अन्वेषण में भी प्रयासरत है जिन पर चलते हुए देश के समस्त लोग राष्ट्र निर्माण के कार्य में भागी हो पायें और उन सबके सम्मिलित उत्साह एवं ओज से यह राष्ट्र ओजस्वी हो।

२७ राजशेखरन् स्ट्रीट, मयिलापुर, चेन्नै ६०० ००४
E-mail: policy@vsnl.com, Web: www.cpsindia.org